



आशा भकदास
505

ASHA ARCHIVES

आशा भकदास
505

ASHA ARCHIVES

श्री १५ सूत्रा

ॐ नमो गवत वासुदेवाय ॥ ॐ नमो नानायक्षाय ॥ ॥ नारायणं नमस्कृत्य नमो वैवर्तनाहं मं ॥ दधी सुतत्
तीत्येव तमाश्रय मदीनयत् ॥ ॥ रात्रत कथा क्रादायारुत ददायारुत गत धननासावानसहित विधा
नर्थ क्रिथं दानवियायारुतलाक निग्रयनं यक्ष नतीर्थ सस्त्रानयादायारुतलाक ॥ ॥ वैभवाय न उवा
च ॥ रामहाराज जनमंजय आदि पर्वयाख समस्त किकन धून सहा पर्वयाख दअधक ॥ ॐ दुयाखा गुवव
न अग्निन प्रार्थना यादाग खा गुववन दाहाया वका अं अर्जन कृष्ण अ न कृ सवल धवना कनस चादनानाज
कुमावक धवन सचाद मया सुनन कित्ता याअधक धमाअ श्री कृष्ण न न कृ सवल काया दाअधअध

ॐ न
॥ १ ॥

सहया ॥ ॥ मया सुन उवाच ॥ राम अर्जन कृष्ण स दयानज जीअन दाशना धनन किन कित्ता न कृ यायमाल आह
विक्रन ॥ ॥ अर्जन उवाच ॥ राम मया सुन क थअ कृ अ निअ धनन कृ जि प्रीतियाय क तायायमाल किय नि सन धाल
दास्यं कृ न रु का यायमाल ॥ ॥ मया सुन उवाच ॥ राम अर्जन कृ सत्य नृप जि न प्रीती आदान कार्य कृ तायाय अह्ला विक्र
नं दैत्यानं दानवयानं विंध्य कर्मा कि समस्त गित्य कर्म आ कृ माल उगु लि आ आह्ला विक्रन ॥ ॥ अर्जन उवाच ॥ रा
मया सुन किन किहाय म काला कृ द्धु खया दाअअ क संताप या दाअअ अ अ कृ हनं कृ न धया गु लि मयायं म काला श्री क
ष्ण न धयाथं याकन ॥ ॥ मया सुन उवाच ॥ राम श्री कृष्ण किन कृ यायमाल अगु लि आह्ला विक्रन धक धयाअ श्री

॥ श्री. सुरा ॥
॥ २ ॥

ककनचिकलपाहानं ॥ ॥ श्री ककु उवाच ॥ तानयासून कनकलसां सुरा आदाउविअ युधिक्लिनयामनसंगावड
अवचनजिमनसं संत्वषकअवचनअमूलसहादयकमालकापांमदलिधातसंमदपुप्रमाननउलाकसंमदय
निमाननगनंमदर्थं दलर्यादाउ दवासूनमनूषवनीगीतिलकजीअजानियाप्रतिमापूर्वनीकादयकंचिप्र
विचिप्रयादं दयकमाल. लकहसुप्रमाणनचद्रमधुलाकानवधकं थथहादाउ ककुसंमयासूनवादाउयुधि
क्लिननापलाचकाउयुधिक्लिनसूनमयासूनयातअनकमान्यपूजायादाउनमस्कानयादाउमयासूननकल
सां हर्षमानयादाउसुराचनलपामासुप्रतिमायाआ. मध्यकंरदयकाउदूजायादाउनानाममेलनसुदि

॥ पर्व ॥
॥ २ ॥

नसुबाकनपूजायादाउजिदालहसुचतुर्दर्गसुरामासुअथनविकदयकलं ॥ ॥ ॥ तिशासहाशनमसुतसाह
सांसहितायांवेयासिअं सुरापर्वनिसहापन्यासपुथमायय॥ १ ॥ ॥ वेगं पायनउवाच ॥ राऊनमऊयखाउ
वप्रक्तसुकुलत्वं प्रमुखनसुखनवादाउ ककुसंथअपिगावसुदअत्वंदर्शनयायअहिनाखचायाउअनध
कंरालपाअसुदिनसकषुअननडाउयुधिक्लिनसकंआह्लाकायाउकोटि२नमस्कानयादाउ. डोपदि. सुर
दायागकालपाअगाथअ. (वेम्यसु. वित्त्वं) वीधलपाअगाथअआह्लाकायाअथमंप्रस्कानयादाउनानामंगल
वदधायादियादाउगीतवाद्यआदिनदयकाअयुधिक्लिनत्वंसानथिरुयाअअरूनन. कनकलुदचामन

॥ श्रीसूता ॥

॥ ४ ॥

हनं वक्रार्थं प्रकाशयित्वा दध्ममसं प्रत्ययकान्तनननायगसं अनेगयह यादा न अनल यूप २०००० सूति
ककृष्टु दउता अर्शन धसूतिक कासं हया उ क्कलयात दयका सहा सजल सुलस्य यमदयकं वचीन धक
धाया उ अर्शनसक आह्लाकाया उ धमया सन उ दा उ समस्तु वं पुनान डव धक न कासं गदा उ गं प उ सूतिक
उ धसूता काया उ धव धे प र्वा या सूटिक किंकन ना कस या दाल वादा उ कवय क हया उ सर्वरुसि गदा हिमस
नया गविलं दददर्शनं ख अर्शनया ग विमानि क्कलु कि कलं ननिमय सहा धक नाम क्कलु उ सहा दयका सुर्व
मय वृक नाना नत्नन सुल यूप पुरु या दा उ दयका अग्नि यम वनून कथन महाद व आदित्य ध सुकलस

॥ पर्व ॥

॥ ४ ॥

सहा दयका सिनं दिफसुतान उ नत्नन प्राकान नाना पंकि नाना मय नत्नमय २०००० आदि दवया सहा या सिनं धस
हा गसूया दंतया ना कसनन का या चक तय का उ ला क या मनहन ययकं तया ना कस पनि चय दाल २०००० धतिना
कस माया ना कस मया सनन धमदयका उ तया वृष प र्वा सन या वल सम निमय सहा या मध स पूकन नी न उ न
त्नमय नाल या दा उ सुर्व प म जल सुल सिय म द ना क हं गा दिना ना कल कुरु पंकि माया पंकि नाना माया कुरु
नाना पूष्य सुगन्ध वायु अर्गजा नाना प्रका नन दय का म निमय सहा कलं बहुद ग मा सन सं पुरु या दा मया सन उ य
उ य धिस्ति नया त समय नया दा उ ल उ झा दा उ य धिस्ति न स्यनं मया सन या त नाना प्रका नन पूजा या का उ मा

॥ श्री गणेश ॥

॥ १ ॥

नयादाउप्रभादवियाउमयासुनथगच्छात ॥ **विष्णुपावनवाच ॥** राजनमजययविस्तिनत्यनवाकल
अयुगच्छि १०००० पूजायादाउराजनकाउहवित्यानीदिअनपजनमांसादिनानापकाचादिकगणराजनयाचका
अं तिल. कव. घृत. दूध. मधु. क्षिति क्षिति थ (धनकाउ) रू दार राजनयाचकाउवाकलअनगवमुदिमात्यादि
गन्धचन्दनपुष्पादिनानाप्रकाशनअलंकारादिवियाउ. साधालक्ष्मि क्षिति २ वा कलयातवियागनक्षि दानसं
१०० पूजायादाउसुदिनषूद्रसहासद्विदायुविस्तिनत्यप्रहतिनराटनतगीतवाद्यादिनानावदधाषा
दिनानादानयादाकसकृतधनेलिअनेकमविलाकउअधसहायाउततायाउअमितदवनसत्यकसत्य

॥ पर्व ॥

॥ १ ॥

नानीमहासीनाअर्चावसुसुनकअलगा. वकस्तुन. गिला व्यास. गुरु कर्मा मुनि व्यास गीत्यादिअनकयाहवअसू
गनामहर्षि (ओम्) ॥ आनिमाधुव. कोमिक यचरुतभासित्य. घनज्ञान. मृगापन. पनागन. अनकमविलाकप
र्वत. मार्क (गुय. रगु. सनागन. विश्वामित्र (गोनकप्रहतिअनकव्याख्यानादिकथाज्ञादाउअनकनागावीनवीन
(गुरु २ दक्ष संजय पंचादअनकव्याख्यानादिकथाज्ञादाउअनकनागावीन २ दक्षा (गोनपंचादअनकनागा
वीन २ नागकमानसपुष्पादिस्नानअर्शनसकनानासक्तअमुसदाउवाह ॥ वैष्णुसननकुम्भरूआदिनथनवाह
किन्ननगलअसनाआदिननृत्तगीतादिसमेकवाह ॥ **॥ श्री गणेशाय नमः ॥**

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १ ॥

नामद्वितीयाध्यायः ॥ २ ॥ ॥ वेगव्यायनउवाच ॥ राजन भक्त्ययुधिष्ठिरमहानाजालं मणिमयसुहाससिंहासनसुवि
क्रदाअलीमादि क्रं ४ म धिलोकसहितनवाडाअसमस्तसुहायादवाहथवलसुधसुहायाप्रसंतास्वर्गसदकाअना
नदमधिलेधसुहासअलंगथिग्वनानदधालसासर्वभोक्तुं न्यायकृ. भक्तिरु. नृत्यगीतवाद्यादिरु. सर्वगुणरु. धन
गुणनसंयुक्तनानदमधिलेडाअकृष्णस्यनंमखदथनलिधंयुधिष्ठिरनखेडाअअपदडाअपादाधयाडाअध
उभयप्रकाशनपूजायाडाअनानाप्रकाशनआसनसतयाअविष्काचका. नानदखं हर्षमाननवाडाअयुधिष्ठिरनखेना
दननहातं ॥ ॥ नानदउवाच ॥ राजयुधिष्ठिरकृष्णभलरुडालाकृष्णमनस्तिनदरुडालापूर्वसपिता. पितामह

॥ पर्व ॥
॥ १ ॥

नयादार्थनाशधर्मनप्रज्ञानकायाकलाथथयागसाज्ञासनुष्टधर्मकार्ययायसअर्थचर्चायायमनअअर्थदयक
सधर्मचर्चायायमनअनानामकीडाआतायाडागुलिधखंविधनमनअथथयागसानाजनरुशयूमरुहनना
ज्ञायामनुष्टाखंविधनमनअ. मित्रअमित्रराअनानयायउदासिअदासिराअनान. भद्रअभद्रपनिअपनिनव
हनपराज्ञानरुहनसुमित्रदउला. गमसनगनसकागअलनचर्चायागकंगअला. धमेनअंगिकात्रयाडाकार्य
सिधुनंकनयाकलाहनंगुफकातायाकलाचोनादिअसअकपकटनविज्ञानयाकला. कसमस्तस्यनंसियकाअ
अकपूनसुकीजनसमस्तनकायाचकंगअलादृष्टकलीनकंवाडाअमूर्खजनदालकिंकमालताअपेतिगव

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १ ॥

इयामनपंगलाहानिसामुहकृष्णवृत्तं पासलपंगलयमालधनधान्यादिसकरथायमवनकायमज्जिअध
यसतस्यंतयमालपनलासलपंगलाहदकर्मसात्रिवाकनअन्यानिष्ठापीथथिगुप्राहितअलासवकशिविधद
अलाअग्निविधकायउरुममममअधमउरुमउरुमकार्यसंदनममममकायसंदनअधमअधमका
यसंदनआग्धआग्धसखलन्यायनउदगुलपंगलाअन्यायनदगुलपंगलासअकदयकानगुनवानस
मर्थआकलपवयवियपायकपनिरुसदादं धनमालपायकयाजीविनिलिकायमनअग्निविधवन
सनानसहितयादानचतुर्मास्यावयवियपनदमकायसथअदमयाधनियननाधनहयाअन

॥ पर्व ॥
॥ १ ॥

ननलादिवियाअडव्यादिकायअहितजनसंगमसथनमनअथअहितसियमालपननाअजयलपस
अनादिकायनाअजयलपधूनदाअकृष्णउदंनमनअवकंजनइंदनचिनायाचकवेनिनवेनीद
मथअनाअगुहादिगनकनपयकंगलानिदानयाचकंगलाकिक्किनंरुल्लायमनअमीकी
अदिमरुवसुमनअवसुदव्यादिनारुदकाननिवाथयकृवाहलानथनकृवानवयआदिनमालक
यायवयवियसलिस्यमालपंगुलअनाथनासनइश्वरजनधननाजानयासलपमालइकापिका
याकायकनल्लाखल्लयमालेलाखयतिंदनमालप्रजासनसुचतुवर्गुनंथअधर्मयाचकमालका

॥ श्री सुता ॥
॥ ८ ॥

तउलननाडीसपंचवालखलनगनप्रमणयानकाअचनविआकायकमालनगनवाहिनिसनतअग्रमदय
कमालथअकीयातवकुादिअनादिअलंकानवियमालइष्टकीमयायससमस्तथमअकुल्ययादंतयमाल
कीअगुफख्याताखंझायमनअसापहनेसनानाअलंकाननतियाअमकीप्रमानआदिनसरादयकमाल
दगुक्रुगुयायसयमअकुलरुयमालप्रमामान्ययायसकवंचअकुलरुयमालवाक्कणपोसलपसपुवि
वीअकुलरुयवेद्यनथअगलीलसक्रिथस्वपालमालस्वचकमालनागयानिमिर्हिननानावापात्रिजनया
नंवाक्कणयानवेद्ययानंक्रुअनिस्यनकंतयारुमीलिकायमनअवापानसंनहायमालभूस्वनालाकथ

॥ पर्व ॥
॥ ८ ॥

स३

अनगनसतयमनअवाहिनीसतयनअगुजातिचिकुतिधदधसंअवरुलायायमनअधर्मयासिनंन
अधदथथिग्वतअतअनागाथवक॥मअस्येवादपनिप्रतियायमालनानाभंदगादिवियाअप्रिनिनव
नंवाक्कणसंतुष्टरुअराखानवदलयवेदसअक्रवाक्कणरुनदासधर्मवल्लयमाधनदरुकाअनानय
रुयायमालकपटमयासंथअथिथिआ०ऊनयाकंदअयाकनपस्वीयाकअलगतसिमायावाक्कण
याकनमस्तानयायनिहंमानाकवल्लसअतिआयायमनअमुखियाक्रुअनआकयाखइ४खयाख
झायमनअपंतुनयाक्रुअनइ४खयाखझायनअमंजातिथंयायन्यायनदानइकायअनायनइका
क३

॥ श्री मं ॥

॥ २ ॥

मनः अति नाहिरु ममनः अति नित्य जाति यानि दा वन दधु या यमनः अ ममा लकं अर्न अपाल दधु रा ल
पं अदि क धा न पा व या च क का धू य कं क ख न कं मा च क ममनः अ व द वा क्क नि द्रा या यमनः अ रु ख क्क य म
नः अ ता हा अ हा न प न द गी म ख स्यं क्क य म नः अ गु न वि चार या य माल. हि सा. वृ हि. स्या य व व हा न क म म नः अ र
च ल चि त म नः अ का र् य या य स थ म नि चि क न पा अ सा य क्क न क्क य म नः अ गु फ ख प्र का स या य म नः अ अ मि क्क
अ प्र सं ग या य म नः अ ध म नः अ न म नः अ न प म नः अ व द ध न क्क द द गु लि. पू ना म दि ध म या क्क म रु ल क्क
ला ध क नान द न हा दा. **॥ य धि स्ति न उ वा च ॥** हा नान द म धि ध न स रु ल क्क यी अ दान या दान स म य द

॥ पर्व ॥

॥ २ ॥

नृ क्क अ क्क ज या दा स रु ल क्क य अ का य मा चा द न द अ गी ल सा रा अ स रु ल क्क यी अ हिं द हिं द ख न द. **॥**
॥ वे ग म्पा य न उ वा च ॥ हा न न म क्क य वा पा नि या व म्पु स म र्क लो क न म क्क अ गु लि ना ज्ञान थ म दान अ का य मा
ल थ अ द म या व म्पु वि या अ प न द गी या व म्पु का य क ल क्क य मा न द म या सा रा य मा न द ० द्वा ० न या व
च द न माल दधु या य गु फ न माल प्र ग द वि य स ल स न त्र या ध न या ध न या क्क या कि सी या सं उ या म
की थ अ क न य माल मा ल्या यूर्ध ध न स म्पु अ म्पु वि द्या थ म स न माल अग्नि या रु य न पू र्ण लि द य कं न य माल
अ ल ख ल कान थ थ ध प नि का य मा चा अ उ हि या द न का या द न य माल ध न ख द द अ य धि स्ति न

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १० ॥

संख्यमानशुभाभां लं शानानदमृतिम्वनकलपोलसकपानकलपोलस्यन आदगवियाखदकाअरुन
मनुमका धखंजिननुमनकं नयाधनकमजऊनयादखेधकंधाया॥ ॥ ॐ तिथीमहाशाननसरापर्व
विशुधिलिखनानदसंवायहतीयाधाय॥ ३ ॥ ॥ विगम्यायनउवाच ॥ शऊनमजयनित्यकर्मधूनका
असरासविष्णकाअयुधिलिखनं नाह० हाथजपलपाअ ॐ नापयानं शानानदउकागसृष्टियाकथाय
कलपोलसनमस्ययाधयमइसमस्तथयसं स्वसंविष्णकधनकलपोलसकं दनगधधनसाध
मलिमयसराधिंदवधयदउधयासिनं हिम्वसरादउलाआरुदयकं मालधकंधालं ॥ ॥ नाम

॥ पर्व ॥
॥ १० ॥

दउवाच॥ शयुधिलिखनधमलिमयसराधिं हिंदसरासफदिपसंमइजिनत्वयामइशानाऊनयुधिलिखनकन
अहंकालयायकनामनअधधिगुसरासयामइयमवन्नकवन० ॐ दमहादवयाधनसरायाधसऊ
अकाधनकागुलिसरायाखंकनयलसादकाधकंधालंधननानदयाराखादकाअयुधिलिनादिअपद
काअधालं शानानदआरुदयकसंविष्णयमालकागुलिसरायाखंदन० ॐ क्रीकनाधयाअउति सिचकाअ
ननानैपूजायाकाअकागुलिसरायाखविसाननकइनधकंधगयानामकइनधकंध० ॐ नापयानं ॥ ॥ ना
नदउवाच॥ शऊधिलिखनपत्रिपातिनकनं रिनकंदकाधकंधं ॥ ॥ ॐ तिथीमहाशाननसरापर्वविशुधिलि

॥ श्री सहा ॥

॥ ११ ॥

नानादसंवादचतुर्थध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ नानादउवाच ॥ एतानां नृणां दुःखसहासदिननाडी सियमद्र विप्रविदि
प्रजूनकं रूद्रसंथमदयकाधसहायानामसुधर्माध्यानामसहादिर्घयाजनं गतकिं १०० ध्याजनदय १०
थाजनवाचाजाअजाजनकाधसहाशुलसांययाधसजनकिं अहर्नधसहास ० शयमाल ॥ कश्यमद्र
इश्वकसंमद्र नागंमद्र काधंमद्र शुभकर्म उरुमद्र ह उरुमद्र आसनदअसिमा कल्पवृक्षसिमा विनामगिसि
माधसहास रूद्रसचीनसहितयादाअवाकसमर्कसूयनितानितानियाअवाकसकस्यननजाकहाअवा
कउनपंचासवायुधधायसखकाकर्मयादवादानसाधगनसिद्धगन दवग्रदवमृत्रिकपिलादिअ

॥ पर्व ॥
॥ ११ ॥

नकमृषिनियद्रसक्रअग्नि साधविश्वदवगल गन्धर्व यद्रगन मनु यद्रुदकिं लघुगन आदित्यादि यद्रुमनु
स्वाहाकान अप्सना मृगगीत वाद्यहनं समस्त विमानसदहाअरुअपनिसकलं यद्रुमालानकाखायाअवाकधस
हायानाम पुष्करमालिनिशुल ॥ ॥ रूद्रिणीमहाशानगसहापर्ववि रूद्रसहावर्जुनं नाम पञ्चमाध्यायः ॥ १ ॥
॥ नानादउवाच ॥ एतयुधिष्ठिर यमया सहायाखकनं दहाधर्क धसहाशुलसां विश्वकर्मानदयका सहा
धसहायाधुवाथाजनगतकिं १०० नजअनसहासूर्यअकुल्ययाधायसयनद्रहनधसहास अतिस्वाह
मद्र काकंमद्र प्याकंमद्र प्यासचायंमद्र ० शयमद्र ॥ कश्यमद्र प्रीयकर्मसमर्कस्वानमासथमय

॥ श्रीसूरा ॥

॥ १२ ॥

याययागुहानद्र. गलील झाक हुनं अति हिंद २ मनुष्यद वडा तुल्य हुनं रुक्ताद्यादि अनेक पूर्व न स्वाक स्वानमा
समस्तं इ भित्तलं ख. पाद पातु अनेक दउं हुनं द व म धि अनेक वृक्ष म धि अनेक नाजापनि अज्ञाति नाजारुन
तनाजानघुषनाजा आदिन सामवंगनाजामन्यदगया नाजा उनी पदगया नाजा हयदगया नाजा हय ना हजन
मरुयवु कदरु भि विना धावन नाजाली मनाजा प्रति विं (धनाजा नागकात दगया नाजा पन्नगादि नाजा कासि
नाजा गानक नूनाजा वाधुनाजा ससविद्धनाजा अनेक नाजापनि अनेक दान पुष्प या दउं पुनान वाखन आदि
नदकाउं यमपुनी स सीद हुनं अगस्त्य म धि प्ररुतिन काल मृत्यु याग स अस्या स याद वान पनियह या क

॥ पर्व ॥

॥ १२ ॥

जनपनि साम यागन प तिगल. हामस दया धलन अपनि स्वधक विका काउं पनि. कालचक्र यागन कउ अग्नि प्रत
अग्नि दक्षिणायन स मृत्यु रुउं लाक पनि अगम्य कर्म याक पनि पापात्मा पनि धरु कंद कि व दउं अनन अयि अउ
रुनायन स मृत्यु रुउं पनि धर्मात्मा रुउं पनि धरु कं उरु न दानन अयि अरुनं अरु स त का अर्नादिन काउं वि
याउं वाद पनि निवतिन प्ररुतिन ध सहा सवानं विश्व कर्मान ता काल अनेकं तपसिया दउं ध सहा दयका
सहावादि तपस्वी याग याग अस्या स याक पनि तीर्थ सस आयाक पनि. दान पुष्पादिया कं ध सहा सवानि अ सय
निता गिमानतिया अ हिंद २ मालान का वाया अगीत वाया दि दकाउं न द्र द्र यमनाजा वादार्थ मृतमाला समस्त

॥ श्री सहा ॥

॥ १३ ॥

विनायाकाउ प्यासवाउमदयकाउ धर्मासायनिधसहासवाने ॥ ॥ श्रीमहासहस्रसहापर्वलियमस
हावर्तुनेनामधरमाध्याय ॥ १ ॥ ॥ नानदउवाच ॥ शानाऊनवनूनयासहायाखकनदकाभितउलासहाद
वयातथाग्यसहाधूयाऊनगतकि १०० व्यायाऊनगतकि १०० स्फटिकयाप्राकात्रमलियाहालनलंखयादथूम
सहादयकाउतयाविश्वकर्माहं सिमानानासिमासदां पूषाहलनपूरुशयाउवाकनानासुगन्धनसाक
नानाजंगलजलपानयाकाउ सुगहनलंखमवाकमंगलजलरुकु क्लृप्तलंभूनकया ० मद्रहन्वं सियं चाल
सकलं वानूनीस अज्ञानमालादादस आदित्यनसिआयादवाकवाहकिप्रहतिननागगहन। स्याअनप

॥ पर्व ॥

॥ १३ ॥

वाकदेत्यदानवसमर्कसुयनितानिसाननियाउवाकवलिनाऊननकासून संक्रादासूनवीन २ दकं धसहाससागन
समूह ॥ गंग कालिडीनर्मदागतद्रुपियासा चन्द्रराग सवस्वती सिन्धु गदावती कावती ऊहिला जकलु अण
पूरुध्वग आदिन अनेकनदि नद कीमर्हियाउवाक तीर्थनं दहनं पूषलीनं उठि आदिन आयिआदिनवानं
गन्धर्व अस्मान नलयूक पर्वत समर्क मूर्तिअकयाकाउवाकवालखित्यादिमधिलोक दाल १००० सुनार
मकी पूषनकधमकी सिमादकं रूपदयअचाने ॥ ॥ श्रीमहासहस्रसहापर्वलिवनूनसहावर्तुनेनाम
सकमाध्याय ॥ १ ॥ ॥ नानदउवाच ॥ शायधिकि न क्वनयासहायाखकनदकाधूयाऊनगतकि १०० व्या

॥ श्रीसूरा ॥

॥ १४ ॥

याजनतः० आहवावर्गुयादाः सहादयकाः कवननरुलसांतयस्यायादाथसहादयकाथसहाकलसां ययाथासयन
क्रिडा सुभनूपर्वतउलथसहासगुचकगहनकवस्यं कयूअ थसहासवर्गुनरिनकंतमाअसिमादकंस
गन्धनस्वाकथसहायानामवैश्वना विप्रविचिवकु म्मीपालकिन पापलयाई बादनाना अलंकात्रनतिया
अ आसने याजनकि १ सोगन्धियूषतिसुमद्रस थसहायानाम अलंकापूनिथसहास वियगुचवायूदअ
गन्धर्व अस्मना मीशकमी घनावी उवगी नंरा विप्रसंना मनकाथपुह तिनसहसावधी दअ गीतवाद्या
दिनृत्तनागीरुलसने किंकनगंल यकगन माडीरुडगन पिभाचगल विहीषणादिनाकसगल अनेक

॥ पर्व ॥

॥ १४ ॥

लक्ष्मीपूजननरुवनआदिनर्गकन ०० गानदिगस उनगनस वृक्ष मधियदवमधिक्रव्यादगधरुतगल सहितया
दाअ चाद श्रीमहादवनै पार्वगीनं सहितयादाअ वाअन धूमि विकट नग्वलमिखा धग्वलमिखा क काला हातहनं
मांसाहात्रि दाकनान आहानयादाअ चादनाना गकु अक्रुजादाअ चाद महादवयागल कवनयागवनाना तिसान
तियाअ चाद हाहा रुद्र उम्बू चित्रसन विप्रनथ प्रमुखन गन्धर्वदकं चक्रधन्वादि विद्याधनस्वकाटिसअ क रग
दर्हनाजा प्रमुखन क्रमनाजी किंपूत्रघ वाननादिगन्धमादनस चाद विरिषल नाकसन सहितयादाअ क्रिधैर
अयिअ पर्वत सुभनू हिमालय मलयावन गन्धमादन महन्द्र सिंह पर्वतदकं पूत्रषयात्रूपनवानं ॥ न

॥ श्री सरा ॥
॥ १५ ॥

दिदानीमहाकालसंकुकर्तुं सुमुख दानपात्रकं ॥ काष्ठकटीनाकसी उदकी विरुयागयाधिका विरुयानाक
सीनीचाक गायुसानया ॥ अस्यासिनं अरुमहायूत्रमदवयानंदवशीमहादवर्तधसरासविआकाउकवन
महादवर्तधसरासपोलस्यमिआदिनमहादवनअरुवियाउकवनस्ययल्यलश्याअचाअरुनि
धि.भंखनिधि.पन्ननिधिमखानिधिधसमर्ककवनयाथउरुअनधसराशलसंअतिआराअतिसुदनम
हादवससरा विरूपाददियल्यलयनकिअथथिंगुसराधककका ॥ ॥ अतिशमहातानसरापर्व
सिकवनसरावर्तुननामासमाश्रयः ॥ ८ ॥ ॥ नानदउवाच ॥ रायुधिरिनिपितामहउक्तायासराया

॥ पर्व ॥
॥ १५ ॥

खकनंकाधसरायावर्तुकाकानकायंमकिअनानावर्तुसरा रायुधिरिनिदकाकडासकिनपधिवीसगपस्यायाद
वाकावलसआदित्यलंविआक किननमस्कात्रयाकाधनकिनदका किगननअयाधकदका सूर्यस्यनकिरावाक
काअभालकिवकायासराअयाधककनथनशलसांकिनदकावकायासरागथिदवर्कदकाधवलसकिनका
नानदवकायासरायाखचिकलपानंचिकलयमकिअधककनधवलसकिनकायारासूर्यवकायासरास्यमन
काकिनकिंकदयादयमालकूपकाननवकायासराग्यदयीअधककायाथनसूर्यनभालदवयाददालकिद
१००० तपस्यायाअथथयायरुतसाउनिधसरास्यदयिअधककायाअवकदलकायाथसअकाअहिमालय

॥ श्री गुरु ॥

907

यात्वापलसक्तिनं सूर्यनं नापं तपसायादादवयाद. यालुक्किदसं पुरुषया अथनं लि सूर्यनं किनं नापं अडा अडकायास
रास्वला अडा अथसरागर्थिदक्षलसा पलकि २ वल संपेचवर्तु नपशया अयायी अहनं तत्काननं अथसरा कर्तिमद्वि
कानन भूव्याया संख्याया यमकि अडकायासरा अकनसरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा
यासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा
तिनं संयुक्तहनां दास्यशयायां सुमकथां दायां सियमद्वधसरासकल्यवृद्धसिमासमस्तकयासिनं गजथूलसू
र्यवन्दु अग्निधनं कयासिनं गजथूलसू अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा
अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा अडकायासरा

॥ पर्व ॥

॥ १७ ॥

है। अनयकापनित्यनसुखियाचकावालखित्यादि। अविमनः। मरुज्जाकाशकृतः वायुः पृथः। पुनान१८। तानत१९।
नामाय०। ग०। द०। त०। य०। र्ग०। नृप०। ग०। च०। न०। स०। सा०। रा०। अ०। विकान०। पाप०। पू०। अ०। न०। सिमा०। गु०। खि०। क०। चा०। मूर्ति०। द०। य०। कं०। अ०। ग०। स्त०।
मार्क०। ६०। य०। यम०। द०। मि०। अ०। धि०। र्ग०। स०। न०। का०। दि०। या०। गी०। स०। म०। र्क०। आ०। य०। वें०। द०। आ०। ति०। म०। वा०। क०। र्ग०। च०। द०। न०। क०। अ०। दि०। त्या०। दि०।
य०। ह०। य०। र्ग०। स०। म०। र्क०। आ०। सं०। क०। ल०। वा०। क०। स०। म०। र्क०। मूर्ति०। अ०। न०। स०। म०। र्क०। ग०। थ०। द्वा०। य०। सं०। क०। प०। मा०। उ०। र०। ति०। क०। का०। ख०। द्वा०। य०। ध०। र्म०। अ०।
थ०। का०। म०। थ०। स्व०। त०। द०। अ०। भा०। क०। क०। ता०। म०। द०। ह०। र्ष०। मा०। न०। म०। द०। ग०। च०। र्ग०। अ०। य०। ना०। ग०। ना०। दि०। दि०। ग्या०। ल०। न०। अ०। य०। ह०। क०। उ०। पा०। ल०। म०। क०।
स०। म०। र्क०। मूर्ति०। द०। य०। कं०। वें०। द०। रा०। ग०। य०। र्ग०। या०। त०। ध०। ल०। द०। व०। द्वा०। द०। स०। आ०। दि०। त्या०। वि०। श्व०। द०। व०। कि०। म०। सा०। म०। अ०। र०। व०। स०। र०। पि०। ह०। ग०। त०। ३०।

॥ श्रीसहा ॥
॥ १० ॥

कीलजा आदिनयसुयातमालकसामाशीवकुतुक्कासूग. भाष. म्वात. कयगुअकत. हामलआदिनवेद३ पर्वकानरिददि
नमहिं कूदिन. गायत्रीगीतन. एवाआदि मरुक्रुलान. संख्या. ध्यान. वृद्धि. कीर्तिकमादग२ याराखा व्याख्याज्ञाय.
टीका. नाटकगुक्त. काव्यनाक. गुनरुकिजन. तत्कान. वान. मरुक्रु. दिन. नाशी. संख्या३ पक. मास. मरु. सवसन३ युग
कालचक्र. धर्मचक्र आदितिदिति१३ रुडाणी ११ रुडा. षष्ठीयथा. गंगा. लज्जा. स्वारा. कीर्ति. दवलीक. दवी. सची. अरु.
गीयूषा. इर्म. नगीअनककी पीरुगल अग्निष्वाही. गर्हस्यस्य. सामपा चउवर्षुयां पिरुगल. नाकस. पिगाचउककादि
गनुतादि पंकिगल पवाहुतिचूअपनिनागादिक्तावन. रंगमादिमहारुत३ दगलाकपाल३ कमान. नानायग

॥ पर्व ॥
॥ १० ॥

दवमषिस्वर्ग. मरु. पातालसदकवसुंदउा चयव्यादात मषिपनि उर्ध्वनागदयमप्रजापतिग० धनंलिभवगु
लिमरुहिउलिथुलिमइधकं समसं संख्यायायमजीउा धसकल्यंक्रिथं२ अविक्लिननवक्रायाकक्रिक्लिक्लि यासवाया
दाउा थउा२ आश्रमथायसंलिहाउा याउा चाद. दिनं नाशिं उर्ध्वसरासचादलाकं उर्ध्वं नक्रमयसरा. धगीन. कट
कअनगलाकस्वर्गमरु पातालसंदर्भरथर्थिगुवक्रायासराधकं राधुधिल्लिनस्वर्गस. वक्रायासरा. अरुमरु
लाकस. कनसरा. अरु कनसरा राधुधिल्लिनकनसरास ० शयमालमरुशयमालदवयासरास ० शय
मरुचालमरुशयमरुचालधकं ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ एनानदं नुयासरासवाकल अदिकदउा अदिकव

॥ श्रीसहा ॥

॥ १८ ॥

नृसयासहास अनंगनागलोकविक्राननचाद यमयासहास अनंगनागापनि विक्राननचाद कृव नयासहास यकआ
दिन अनकविक्राननचाद वक्रायासहास अनकदवलाक मधिगन समरुचाद धननहनिचदनागाशक रूद्रयास
हासचाद धगधननचाद कृयादान कृपुधयावनन कृदानयादा वलन रूद्रयासहास रूद्रउ समकुलयादाअवानह
नं रूद्रयासहास कि ववृशपाधुनाज्ञान कृकृधाअधदकंजिक कनधकं मुधिष्ठिनन विनगियाक ॥ नानदउवा
चा ॥ राशुधिष्ठिनहनिचदनागायाखकन दअधकं पूर्वकालम अगा धानगनसनाज्ञान क२नागायासिनं तअधदनागा
अनकनागायासिनं (ग्रहयादं चाद पूर्वसनानायलसं क्ववयात यकुयातथविपा धनध हनिचदनागायान

॥ पर्व ॥

॥ १८ ॥

धधनधसददाअसकहिपऊयलपाअउककृन नाधयादाअ अनकधनसंपतिहयाअ नायसनीयरूयायवक
आलंरयादाअनक२नागापनिस्यनं अनकधन कृअन्यतयाअ यरूयात थथयरूयादाअ अनकवाकृषपनिरुस
मरुधनंदकिष्मालकावियाअग (थधालसा साकृसहासंतका यासिनं पिददाद उपलदकिष्मविया कृकृधा
लउगुलि२विया सकलंवा कृषपनि रूकाशुनयावकाअ नअनल आदिनं दकिष्मवियाअ समरुवा कृषपनि
रुधरूयाअ समरुवा कृषपनिस्यनं आगिरावियाग (थधालसा समरुनागायासिनं उरुम (ग्रहनागाशयमालधकं
तऊसीरूयाअ सुखरागलायमालधकं थथ आसिरावियाअ ध आगिराया रूलन ध हनिचदनागा समरुनागा

॥ श्री सहा ॥

॥ १२ ॥

समस्तनाशायामिनं (अथनाशकलधनं लिख्यसंयुक्तया अनकरनाशायनिस्यनं धरुनिचन्द्रयात आगिषाविद्याअथया
रुनन (अथरुयाअमहाआनन्दनचानधनाशस्वनीयसुयाखलनसंग्रामस. संमुखनं संग्रामअकनं लाकच्छुपूनी
सचाददतशायुधिसिद्धि न कनपिता पाषुनाशानं कखंनदसं कखंमहासंमिखासखाविनयाअचानहनं कगाश
कखला कहरिचन्द्रनाशचानसायाअधालशानानदधकं कितलताअधाल कि मयूमगुलसअनाअजिगुवृषकताय
नमालग (अधालसाजिकाययुधिसिद्धि नयाअन्य कनपिता पाषुअनहादंरुलधकं कअग (अधालसाजिकाययुधिसि
ननदिगिजययादाअपथिविजयतपाअनायसुयगुरुयायमालधकं कितखानजिकायपनिकहायमालधकं

॥ पर्व ॥

॥ १२ ॥

जितहादाअहलधकं शानाकन कनपितानहादाहयाखसमस्त कलपालकनधूनधनननायसुयीरुयाअथयसुया
नदाअथयारुल कहरिचन्द्रनाशअतुल्यरुयिअ कनपिता पाषुअधरुनिचन्द्रअतुल्यरुयीअधकं थथसियाअनाय
सुयीयसुयातदाअथयसुस अनगविप्रदयीअ वाकलपनिस्यनं नाशायनिस्यनं विप्रयायीअथथरुयिअ सीयाअ
धधकाअमिदानयादं याकन्यथयसुयानिमिर्हिनमहा २ ३ ४ खरुयिअधवलसजितनं दाघवियमत अनगदाय
रुयीअथनायसुयीरुसंयुक्तलदाअवंसंमायिअधनअनअधधीधल. ककि गल. कि सि. सानधि. संपतिसमस्त
लाकं संग्रामसमायिअधनन कयलसाथयसुयाअमयलसाचतुवर्तुजातिनकायादाअधर्मकर्मयाअकननाज

॥ श्रीसूरा ॥

॥ २० ॥

सुयज्जुपातसावाकषपनिस्तदकिष्णनसम्भाषयायमालथथयातदासवाकषयाआतिखानहनिचंडनाआसमकु
लयादाउत्तर्गसुक्तसपाउचानंदयिउथधधर्कपाधुनाजानकदाउहयाखसमस्तं किंकनधूनआउकिष्णनिका
अनंतलधर्कनानदनयुधिष्ठिनयाकआरुकायाअनानदेत्वं दानिकाअनंथनंलि युधिष्ठिननरुलसांअनंगवाकष
अनंगमविसहिगयादाउयुधिष्ठिनस्यनरुलसांथउपिगापाधुनकदाउहयाखसमस्तं हीमअर्जननकलसह
दवकिष्णयनिधर्कवादाउआरुवित्तनानदयाहाखानयरूयायेगुलिखसमस्तंकदाउधर्गराखादकाउहीमादि
धर्कस्यनंरुतांमधस्यनानमआसंवानंथथवादस्वयाउयुधिष्ठिनयामहाइ४खयादाउचानं ॥ २० ॥

॥ पर्व ॥

॥ २० ॥

हस्तनगसूरापर्वविनानरगमननामनवमाध्यायः ॥ २० ॥ ॥ वेगन्यायनउवाच ॥ हाऊनमऊययुधिष्ठिनयामहाइ४खविह
धिनमदवाउअनंगप्रकाननचिकलपाधनाआयनिगधर्कयलयधनदयकगधर्कवमुनयरूयायधर्कमाहाइ४खकाय
उताह्लायंमरुधर्कवादाउथउआत्माधमधधमनंधिर्ययादाउमननंधर्ककायाअनायसूययरूयायनिधययादाउसम
स्तवाकषकप्रियवेग्यहृद्रादिसूरायादाउचालवनवनसंनायसूयज्जुपायवनरसंधायलाधर्कहालपाउयरूयाग
दासअनंगलाकमायिउलाकमाचकाउकायधर्कहनंवनरसंलाकममाचर्कयरूयायधर्कसूरासनाऊसूयज्जुपायध
र्ककायाउधसूरासवानअनकनाआयनिस्यनधालंक्रियनिसकधनआदिनकास्यविष्णुनकलपालयाकार्यया

॥ श्री सहा ॥

॥ २१ ॥

यनिमिर्हिन जीअ आदिनं वियरुल आमयरु यायमालधकं थनाशपनिस्यन थथधयाअ यरु यायनि थययादाअरु
नं पुननाअ संग्रामन ल्वादाअ संग्रामन लोके मायिअ धकं यरु मयायलाधकं मनस अतिअं दालन भवया जीअ माय
हिन इ४ खकायाअ कनुगावायाअ वाद थथनयुधिष्ठिनयानाम अज्ञातग धूधकश्ले युधिष्ठिनने इ४ खकासंखाया
अ वाद ल्वायाअ हीमार्शनन कलसहदअ पक्षीअ पददाअ धालं हा महानाश युधिष्ठिन दवस्य इ४ खकासी विद्या
यमून्वा ल० आदिदअ रुयलपाअ थयरु याचक थगन थयरु यादं विद्या रुन्धकं थथ किशोपनिसवचनददा
अ युधिष्ठिनन हर्षमानयादाअ आअ यरु संरुर्गुशना रालपाअ यरु यायनि थययादाअ पउस आखनचासं थव

॥ पर्व ॥

॥ २१ ॥

लस समस्त लोके सुखिअनक चतुर्वर्ग्यां स्वधर्मस नससस्य आ. का. आदिनं कृपालपिदाअ निपाल लसंका यइद
समग्रामस विदत्यं मरु अकालमृषुमदगं हनं धूमिकान. खूल. कृष्णनयं सक धमइहनं विधवामि सां मननाअस
हास मिथ्याख झाकं मइ समस्त नाशपनिस्यनं कर्मयापिनं थनअअ थनयुधिष्ठिनन सकलं नाशपनिस्याक
आह्लादयका गथयादाअ धनाशस्यययग्धसिधल अथयाअ धकं हीमादिकिशापनिस्यनमन्त्री पुमानपनिस्यन
धालं किनयरु याययात तया नयाकनं गुलिक्किनं नाशपनिमिग्रालपाअ याकनं गुलिक्किनं नाशपनिसअ सं
ग्रामयादाअ थअकं रुशनाया किअ धकं हीमादिमन्त्री पमानयावचनददाअ युधिष्ठिनन नानामाथनराल

॥ श्रीमहा ॥

॥ २२ ॥

पाउं श्री कृष्ण याचन गकमलया ध्यान या दाउं विनत पलं ही मादि नं अंगि काल या दाउं कालं (कोम्य. व्यास त्वं वा दाउं समधा
नया दाउं ध्याया हा (कोम्य. व्यास म. विष्णु नथ यरू याय रु यिउं ला क्रि यी गला म क्रि यी अला ग थ २ धकं धा यो अ (कोम्य. व्यास
दिनै ध्याया हा यूरिष्ठिन थ यरू सं र्धु रू यिउं धकं हा र्ग पुन र्वा न यूरिष्ठिन न नाना प्रकान न विनत पाउं कृष्ण त्वं विनत पा
श्री कृष्ण दव याचन ग प्रभा दनं उ नियरू सिद्धि रू यिउं कृष्ण म दय कं कार्य म सिधू श्री कृष्ण पन व कृ कर्तु धा नि नाना य
ग थ म अ कृ पा द अ धन न कृष्ण अ नि स्र काल मा अ धकं यूरिष्ठिन न श ल सां ॐ न्य न नाम दू त क्ता या अ श्री कृष्ण वान कल
कार्ग थ न ॐ न्य न न श ल सां दानि का अ दाउं ध्याया हा श्री कृष्ण कल पा ल स क यूरिष्ठिन या हा धा न क्रि का सं ह ल क

॥ पर्व ॥

॥ २२ ॥

ल पा ल विष्णु य मा ल ध कं यूरिष्ठिन न आरू वि सं ह ल कल पा ल त कान नं विष्णु य मा ल ध कं ॐ ना प या दाउं ध व च न क
दाउं श्री कृष्ण त्वं ॐ न्य न स हि न न ॐ न्य प्र कृ विष्णु र्ग थ न कृष्ण विष्णु क स्व या अ सक स्य नं न म कान या दाउं यूरिष्ठिन
न कृष्ण या क ॐ ना प या र्ग ॥ यूरिष्ठि ना वा च ॥ हा श्री कृष्ण क्रि न ना रू स्य यरू या य हा ल पा कल पा ल स्य न आरू विल
या यरू ला ध कं विन तिया र्ग ॥ ॥ ॐ ति श्री महा रा न ग स हा य र्वा नि कृष्ण ग म न ना म रू ग मा रू ध्या य ॥ १० ॥ ॥ कृष्ण वा च
॥ हा यूरिष्ठिन क न ना रू स्य यरू या य हा ल पा ला ध र व या ग्ध अ थ नं ना रू स्य यरू या य रू ल सा. क ना सं ध नि मा च कि अ ध
द न ल्य क न यरू सिध या यरू यिउं म धू ध मा च क धू न दाउं उ नि म्प व ना ग मा च क कृ का उ क अ ल पृ थू का ध न न क

॥ श्री गुरु ॥
॥ २३ ॥

नासंधनिकयत्पमालधकंककनभ्राह्मदयका ॥ ॥युधिष्ठिरावाच॥ शीरुक्क कलपालस्यनभ्राह्मदयकानि
श्रयस्व धननासंधनमलजिनयसु सिधयायमजिउ खडधकं थड कपाल थमनंदायाड धालं नाशनाशायनि
समस्तं थड २ नाश सुशका संप्रादनाशचक्रवर्तिश्रयमहादूर्तर. शीरुक्क किनऊनासंधतडधनकाड खडाल
कलपालसंनथमचिकिधनकाड धयाथन कलपालस्यनूषया मर्जात थमचिकिधनकाड ज्ञायमवत
डधनकाड धयाश्रीरुक्क आडया मवनाशायनिजयत्पलियनसुऊनासंधमाचक धकं धयाड रुक्कनकि
लाड हसरासयाडाड धाधस्ययाड युधिष्ठिरया मनसु अतिदुःखवायाड यरुयायमजिलधकं थड थिथि

॥ पर्व ॥
॥ २३ ॥

ब्रह्ममिदं विरुसा कपनिस्यनयसु यायनडधकं धालं थखसमस्तं मूर्धशसं किहाकाधकं थथवाल शीमत्वं डयाड दा
शयातवाधयायनहातं शकिदाशुशुधिष्ठिनवलडक नाशायनि थड वस्ययायड पाययाकन्य. किन (गोक २४ ख का
यमून्वालजिपनिसुद्धनिधुकाकि तत्वक काय २४ ख कायग थधालसा श्रीरुक्क याड पायवृद्धिमालकाजिवल
नचाका अर्शनयाजयगुणधनजिपनिसुद्धनि किन कयारयधकं हिमस्यनन अंगिकानयान धननासंध
जिनस्यायधकं हिमस्यनन धालं ॥ ॥ श्रीरुक्क उवाच ॥ शीरुक्क धिष्ठिन शीमनधड खयागधवचनजिवालकयाक क
वृद्धिदयि अथनै किमनसुशकया ऊनासंधनिमाचक मालथथन उनि सिद्धश पीड ग थधालसा ऊड कालस

॥ श्रीसूरा ॥

॥ २४ ॥

यो वक्ष्यतां ज्ञानसमस्तं यथायाकन गालतां चक्रवर्तीनां ज्ञानं कीर्तवीर्यना ज्ञानतपस्यादां चक्रवर्तीनां ज्ञानं
लं हनत न शलसां थअ वाक्यावलन चक्रवर्तीनां ज्ञानं मन्त्रना ज्ञानं कवलजयलपां चक्रवर्तीनां ज्ञानं धन
कृपनिशुभसमानदाकुरु किं दयागं जानथास कृपयाय मरुसमस्तं रूथकागं थअलसा श्रीनामचउ नलकनहाका
खदउगं थअलसा पूर्वदिगया ना ज्ञापनि सन स्या वामयाक खदउ थममानयमया कशालपां लक्ष्मयागं आह
वियाउलक्ष्मनशलसा पूर्वदिगसुअदाउ अनकना ज्ञां संगमयादाउ अनकना ज्ञापनि देधुयादाउ थथननुनि
समस्तना ज्ञापनि सन नामचउ या क स्या वायां रायूधिष्ठिन थजना संधयाक वृणागुण दउगं थअलसा ज्ञना संध

॥ पर्व ॥

॥ २४ ॥

नथमवालकवलस थअरुमिनास स्वयां थअनास चिरासधकं थननजितकृपायीं जितनासनमगाकधकं थथीसमस्तं
नासयायधकं समस्तना ज्ञापनि थअतलसतयनक २ ना ज्ञापनि चलतया थनयधकं अनकधनमूनधकं थथचिनाया
कक्षजनासंधजयलपे तउ कथिनथाकुरुं चिकिधद कृपनिचिकिधद ना ज्ञा ज्ञनासंधया संगमसाया वलिअनचानं
थाकुरु थथिद तउ पनाक्रम ज्ञनासंधउगं थल्लायरायूधिष्ठिनजियनिस. जीअमालसां यरुयायमालकनयरुयां
जियनिस ज्ञनासंधउल्लाय गलकि सिनथपदाति. दककतकनं मजिअउ पायननुजिअं वृद्धियायमालचयषूदाल
ना ज्ञापनि धनजादाउ कदाउ पशु पासलपा थं पासलपा अतलं रायूधिष्ठिन थजनासंधनरुष पदया चउर्दगा

॥ श्री सरा ॥
॥ २३ ॥

बृहत् समस्त नाशं भावकाशं कलदाविदाशं धृक्कलयादासुथमयादाशं वक्रवर्तिनाशं यथकवान्नाशं यथनाशं
पनिस्त समस्त योऽंजीअनकायायनायस्ययुरुमासिनं अष्टपृष्ठधकं कृष्णसंशुधिष्ठिवहादा ॥ **॥ अतिश्रीमहाशानम**
सरापर्वति अन्धान्यसंवाधनामकाद ॥ **॥ अथ ॥ ११ ॥** ॥ युधिष्ठिन उवाच ॥ हा कृष्ण क्विस्तकलमावकाशं क्विचक्रवर्ती
शयाशं कायधनं क्विस्तकलं क्वयमशीअगं थकायशीमादिअरुनं किनगं थकायकिमनं शलं क्विशीमं अरुनं किमिस्वा
थं गं थकायशनासंधयासनायासं कायायमकिं अं अरुनं कवीन २४ अं थनं कायमकिं अं धकं धालं ॥ **॥ वेगन्यायगउवा**
च ॥ हा अरुनमं अय कृष्णसं थनं खलादाशं युधिष्ठिनं नरुलसां महाइ ४ खननायस्ययुरुमयातधकं धायाअं थनं खददा

॥ पर्व ॥
॥ २३ ॥

अयुधिष्ठिनं नरुलसां महाइ ४ खननायस्ययुरुमयातधकं धायाअं थनं खददाअं कृष्णं अरुनं हागं हा अरुनं आअगं थयाय
लाअं धकं धायाअं कृष्णयावचनददाअं अरुनं नधालं हादाशं युधिष्ठिनं थनं संधकिनमाचकं क्विवलं धनं साकनं क्विवलं
कृष्णं नं साकनं नायस्ययुरुसिधयकं वियधकं हादाशं क्विगं काकायन्वाले पथिस्तदकनाशपनिं अयलपं वियसासं वि
अरुनं किं सामवं गं गजायपुमखलाकिं धाकसां हावमरुलं क्विवलं पनाकमं इधूकाकिनं वनिअयलपं वियशीदाशं वे
निअयलपं यामाजगं थथगं थधालं सामनं सगं अरुनं दनकाअं मनवं चं धायाकाअं वनं शाशवलं सनाजायानकं
गं अरुनं मदनकाअं मनकाकनं अयमगं अं धनं दगं दाअं कथिनं अयमगं अं वलं लाकं सनादगं दासं सुमकं दादमगं

॥ श्री गुरु ॥
॥ २० ॥

अवेनापनिथडा कलयावकमालसादाहयुधिष्ठिरनरनासंभवाचकाउसमस्तनाशापनि कदाउतकपिकायाउहयकिन
नागसुययमयायमगडा ककलसंघायादाउकिस्वायादाउ यरुयासंविअरुनधकं अरुनस्यनैधया ॥ ॥ ॥
श्रीमहाराजगुरुपर्वणिनागसुयदाद(गो३५५५॥१२॥ ॥ वासुदेवउवाच ॥ रायुधिष्ठिरनरुननकादावचन
आग्वखअरुननधकार्यसाधलपद अरुननअंगिकानयादाथं किनं अंगिकालयायधूनग(धधालसाद्रवासनसं
गमस ककककयाथकाजयशलनिर्झलपमद. जियनि किस्सउककिनकनसंभाषयायकिनधनू आदिमशादाउस
कुशादाउअनममूथ(थइलसां किउदमकिउधक ककनधालराअरुन ककनिसकुशादाअशलसां लायशलसां

॥ पर्व ॥
॥ २० ॥

ककउरिमउलातसा जियनिस्यनस्वसं चान किउलातसा कपनिस्यं स्वसं चानिअश्रुगगकुशादाउअनमस्वउपा
यलवृद्धिनभाचकमालसगुयापहनस्वयाअभाचकवेनियाकअनगुफनकायकन्द रुनाअरुनासंधयाकयाद
नधनकंअनकवचादिन. दनतीयाअकालसा कगुलिनवमुयादाउगुफनगमुशादाउअनप्रकानचानदासं
रुनासंधभाचक रायुधिष्ठिरनकिनइ४खकायममालधनअपालथूल श्रीअनरुनासंधमालदाउमवभाचककया
लाखअपनिसंभं उकचानीयासनडाडारीमनरुनासंधभाचक. चयषूदाननाशापनि कदाउतअपनिसकलं
तालगाअकायकिशासनकसकीर्णकायथ(थयादाउकिनयरुयाचक धरुवदडाअयुधिष्ठिरनआदिनसमस्त

॥ श्रीसूक्त ॥

॥ २१ ॥

हर्षमानश्याउ श्रीकृष्णनशनासंधयावलपनाक्रमखकने ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ शयुधिविधिनधरुनासंधयावलयाख
कन्यदुष्टगथधालताधरुनासंधजिलाहानिनमाचमदुजिनद्रुपाजिमयापालउनें सरुलयाउ कौस्यहयाद्रुअस
मगधदगयानाकावहदथनाकाअकाहिदीखुलिअयाअधियपिथगस्यनानसहिनसुन्दनरूपतमिवलअकवृद्धि
अकपष्ठितकमाधनि सजिकपनाक्रमिन्दुअतुलनजनसूर्यवदुल्यकाधनयमअतुलथीसन्धिनकवनअतुल्य
धयाकिर्लिपधिसनामददधयास्त्रीकागीनाकायाकावक्रमलजातनकस्त्रीपूत्रधंसुन्दनरूपलकननल
कविवाहयादानिर्गुल्यशुअताकालंसुखनकीजयादाउवाचधनाकाका० शसनेकायकावमदुअनेक

॥ पर्व ॥

॥ २१ ॥

विधिनानाविधाननदववाक्रमपूजायाउवादानंमावामदहनंनानायहयादानंदलुकदकनकायगालतानंथथ
नंमावामदथथश्याउकांदिवतमविधयापूजगेतममविधयापूजचलुकीगिकमविधचलुकीगिकमवि
संदातुदितपस्यायादाउधमविधयावचलसिद्धश्याउधखआगतायाउधवहदथनाजानस्त्रीनिर्गसहिनया
दाउवनाननगालताउमविधयाआश्रमअदाउनानाप्रकाननधमविधपूजायादाउधमविसंकुदश्याउनाका
यातवलप्रगादवियधकंधालंधतमविधयाआह्लाददाउनाकावहदथनमविधनमस्कानयादाउखाउकवचल
यादाउरूनापयातशमविधनक्रियनिअरुगिपूजयानिमिर्हिननाकगालताउकलपालयाआश्रमसअयाकि

॥ श्रीसूरा ॥

॥ २८ ॥

अपादतसा क्रितपूजस्तननाप्रतिपालयाचकमात्वकं विमलियादाउ धननाजायाववगददाउ मधियामहा
द्वःखश्याउ कस्तनध्यानादियादस्वयानध्यापूजमद्वकृपकाननध्यापूजदयकधकं मधिस्यं धउलीतिपाल
स्वययाउखा विउयकाउधंसायाउ ध्यानयादाउवानदासंअंपसिमानकगमालंअंपकमवलहायकाउवित्तं
धअंपकायाउआत्माविक्रमकुनन्यास्यादाउनाजायागवित्तंशानाशधअंपरुलकाकनधअंपकनकीनकिउध
वलसकनपूजगतश्रुयिउधकाधकं धयाउ धरावाधदाउनाजायाहर्षमानश्रुयाउधअंपकायाउधउनाश्रुग
हउयाउनक्रुतीयाकउन्यतयाउधअंपनीरुलाहायाउवागलवागलनकलंधअंपनयाउनक्रुतीयांगर्कसद

॥ पर्व ॥

॥ २८ ॥

याउधनंलि क्रितानंदरुश्याउउधुक्रंजागशुलंगधजागशुलधालसाअंपनयाधं वक्ति २गलीलश्याउवलं
धमावाखदाउनिम्रुकीर्नअल्पकणाकयार्धधर्थिगुभावादयाउकायधकंहालपाउनामानमलियकंवाक्रसीनि
लातांयदाउधनरुगतयकाउआचकलकांगदगवाहिनिसृपकालसआदाउताधुशनाधनंलिनाशीसशुउ
सुनानंलाकनमखदाउरुगतयाधनशककायाउयदधनंलिरुनानामनाकसिनधआदंगयावालकनेहाल
खदाउकायाउनययागस्वर्गधननिहालाश्याउचादस्वयाउहादाउस्वयाउधमननयगदाधनधवानक
नधमनयगदसियाउमहागहनहालाउवगक्रुतिनउदाउपृथिविकंपमानश्रुयकंशतंधरुनादवीनध

॥ धीसुता ॥
॥ २२ ॥

मनयधर्क हा दाउा खया मचावा दाउा डाखया डाथ थपथिवी सरकसुद्ध दाउा अखन कोसु कचाया डाहर्न
धमचा काया डा नयन दा नयम किडा खहवा दर्थ वा दाउा महा सुद्ध न. न दाउा थं गद्या दाउा धर्ल धमचा हा ला
गहन धन गन सचा द ला क सम सं ग्या कथ थ यान वल स पून जला द वी न रुल सां धवा न घ ति ति या दाउा धर्ल
रा वाल क किन क मन ल क कि भा या रुल धर्क धया डा तल धनं लि ध वाल ध या मा म प नि न क्र स्या इ इ हा स्यं डा
या डा ना जा या क डा डा थ गु लि व रु क ख स म र्क ना जा क दा थ न ध क्री या व च ण द दाउा ना जा या महा
कन इ ख या दाउा चा न ध व ल स रु ला ना क सी न थ डा ग न ध वाल क पू या डा व वू या ना रु रु स डा डा डा

॥ पर्व ॥
॥ २२ ॥

ना जा या त धर्ल हा व रु द र्थ ना जा क न पू य या नि मि र्दि न ला क न ग्या क या दाउा इ ४ का स्यं खा या डा वा दा रु ना रु न च द को मि
क म धि या व ल पु ग्ग द. म इ म ध पु ग्ग द इ ख थ पू ज क न प का ल स डा डा ग ल ध वाल क का या डा कि न न ख न प न या ध
क स म रु रु ली न न ख ना जा क दा रु ना रु न ध वाल क कि न न य म रु या नि मि र्दि न. मन या म ध क न कि क रु क या दा इ
न कि न ल घ ल पं न या ध क थ रु ना द वी न ध वाल क का डा ध क ना ज ल डा द्वा दा वि ल थ न ना जा या म न स रु र्ध मा न या दा
डा कु नि क स हि न न पू ज का या डा ना जा न धर्ल हा द वी क ल पा ल स. रु रु ला पु ता दि ला कि क न मा ल ध क ध या डा रु ना
द वी न ध या रु ना जा न कि ना क सी जा ति थू का कि ना म रु ना द वी कि का म नू पि क न ना रु रु स रु कि या डा डा वा दा रु न

॥ श्रीसूरा ॥

॥ ३० ॥

वलि काया अ समस्त लो कया गृह सक्ति वा दा अ वा दा कि गृह द वीथ का धक ला कन कि पूजा या क क अ स व का व कि गृहि
या दं ग ल रूत पुता दि दा कि नी न पि अ विल दा अ क न ला कन का या य मा ल ध क उ का व आ हा विल री ना का व ह द र्थ कि
प्रति मा कि पूज षष्ठि क यां प्रति मा क या इ न्य क था स अ स्यं ग यि अ थ क्र या गृह स समस्त संप हि उत्प हि रु यि अ मंग
ल रु यि अ थ प्रति मा म द्वा य स अ ल की न वा स या यि अ अ मंग ल रु यि अ री ना का क न ना क गृह सक्ति प्रति मा द अ
कि पूज क क या अ दि पूज या दा अ वा मा अ ग ल ध ग न क न का य म वा म द न री ना का कि पूज क क रु क या य मा ल क
ना का या क ना क ल की नू प न ध वा न क या क गृह ल की नू प न ध वा ल क कि न न य या न नि रु ता हा दा अ न य न दा व

॥ प ३ ॥
॥ ३० ॥

ल स म्वा दा अ अ ल आ अ ध वा ल व का अ ध कं ध ग धा या अ थ रु ला द वी अ न क थान रु या अ अ नं ॥ ॥ श्री क का वा व ॥ रा य
धि धि न ध रु ना ना क सी न वा ल क ना का ल अ क्रा स्यं ता थ अ ना का या ह र्घ मा न या दा अ मा ल का क र्म या दा अ ना म कू र
ग थ धा ल सा रु ना द वी न हा दा अ वि अ न ध वा ल क या ना म रु ना संध कं ना म कू र थ नं लि ना का या ह र्घ मा न रु या अ
द स स ना हा ल का अ समस्त लो क नं रु ना द वी पूजा या च क लं ध नं लि रु ना संध या कि र क्ति या ग लि ल ग अ धि क ल रु या
अ अ लं थ न ध रु ना संध या द लं द र्मा अ अ लं थ न च लु को गि क म धि पं रु ना ना क वि द्या दा अ व ह द र्थ ना का न ल स या
अ उ ति सि त का अ ना ना मा थ न पूजा या दा अ थ ना का न रु ल तां पू र्ण ना र्थ म धि ल अ क्रा क ॥ ॥ अ धि नू वा व ॥ रा ना

॥ श्रीगुरु ॥

॥ ३१ ॥

ऊन वरुदर्थ कि दिव्य चरुग समस्त साया ऊन पूजया प्रहाउन समस्त नाथ यायिअ महागऊन रुयिअ हुनं लक २ ना
जापनिं थअ वग्घया दाअत यिअ सुनानं ऊन काय वेनीयाय कालिमधुधन वेनीदक माचकिअ दवदान वनसमुअ
ऊन प्रहान यागसां थया सलील सव थअ रुयिअ मधुग मुअ मुलिमूलाअ अनिअ ऊअ याचक वरुि नाजा सिनं थ
सुनाजा रुयिअ थया प्रहाउन समस्त वेनीदक कयाअ वाद निस् थमित कटि नअ दाअ माक थं भायिअ हुनं कि
सिगल नथ पदाति चउलंग वल सुनादक स्यनं स्वागअलसां थ समस्त माचका रुयिअ हुनं समस्त नाजापनि संपत्ति
कायाअ चानिअ महावलि रुयिअ चउवर्गु जातिन काया दाअ नाथ यायिअ दधि सस्य आ क्कादिनं संपत्ति

॥ पर्व ॥

॥ ३१ ॥

रुयिअ हुनं नाजापनि समस्त चलगया थं रुयिअ हुनं पंचवक्त्र श्रीमहादेवनं प्रहक रुयाअ विष्णुयिअ हुनं अनक
नाजापनिं कदाअत यिअ थगुलिप्रकाश ऊन काय ऊनासंधया वलवीर्यपना ऊन खकदाअ थमधि थअ आश
मसअरु थनं ली वरुदर्थ नाजान सुदिन वरुऊन नासंधया वलवीर्यपना ऊन खकदाअ थअ काय याग अहि स क
वियाअ नाजा सालाअ समस्त नाथ लअ क्कात पूजया गुह स्वयाअ नाथ न काया परुग धर्क काय नाजा या दाअ थम
नं मली सहित न पस्या यागअनं ॥ थनं लिऊना संधन नाथ न काया दाअन क २ नाजापनि थअ पुना ऊमन रुयल
पाअ अनं क धन संपत्ति कायाअ सुखन चानं थनं लि वरुदर्थ नाजान वनस ताकालं पस्या या दाअ मरु रुयाअ

॥ श्री गुरु ॥

॥ ३२ ॥

निष्कृति न स हि न या का अ स्वर्ग प्राप्ति शतं ॥ धनं लिङ्ग ना सं धन वा नान सी स न य स्या या का अ कि म नि द त्वं श्री महा द व
सं कुरु श्या अ वे न प्र भा द वि या रा ज ना सं कुरु व ल सं धा ० इ य मू च्वा ल मू र्ध्म म रु ला ध क ध न व न वि या अ नि रु ला हा
का न या गु ति तु लि स रु क मू र्ध्म द अ ध कं आ रु वि या अ श्री महा द व त्वं के ला स वि धा क ध न व न प्र भा द का या अ ध र
ना सं ध द धा वि स र्ध ध न श्या अ आ रु श मू र्ध्मि षि न कि न कं सा स न मा च का अ ध र ना सं ध न कि जी ल मा च क ल ध कं धा
या अ ज र न का ध या का अ आ अ कि न कं क मा च क ध न ग नं मा च क म थू नां मा च क ध कं धा या अ ग दा का या अ ग
दा हि उ हिल का अ रु अ सिया अ कि न रु ल सां स न स तिया त हा दा र ना सं ध या ग दा हिल का या ल्या ख क न दान कि अ ध

॥ पद ॥

॥ ३२ ॥

या अ स न स ती न धा तं कि न का य दान क ल क्सी न दान कि अ क कि न कि वा ल म या स न या क कि ध कं धा ल ध न कि न रु ल सां
धा या र ना सं ध या ग दा प्र हा न न कि मा यि अ ध कं धा या ध न स न स ती न रु ल सां ध व च न द का अ ध म वि ध वा रु यी हि न
ग दा अ स न स ती न रु ल सां ग दा हिल का या ल्या ख नि दा अ कि दान क लं गु य मु र्ध्म हिल का अ ग र कि अ रु रु ला ल पा अ
ध र ना सं ध न ग दान वि स र्ध लं ध न ध ग दा रु ल सां या र न कि म ध न ध ग दा रु अ का अ रु मि कं प मा न रु अ रा य धि षि
न ध ग दान री न मा क सिया अ रु न र ना सं ध न महा वी न हं स ग श्री रु क अ नि क का स र्ध या अ व ल रु द स्य न रु रु या अ ग दा या
या ल स स ला अ न या अ ध नि ध मा च क लं रा य धि षि न रु पा कि न र ना सं ध म मा च का कान धा ल सां र ना सं ध न न रु र ना या प

॥ श्री सत्य ॥

33

निपिकाया अयूषिष्ठिन न नारायणस्य यह्याचकं मालधकं जिनेथथलालपा अक्रपाजनासंधममाचकाधकं श्रीरुद्रस्य य
 धिष्ठिनकदा ॥ श्रीग्रीमहात्मन नारायणपर्वणि नारायणस्य यहाद (भा १५५५४॥ १३॥ ॥ वासुदेव उवाच ॥ श्रीयूषिष्ठि
 नरुनं हसतीरुर्कं माचकधूनकं सासुनं माचकधूना दवलाकसमस्तं धावसासयादा अत आदेत्यं माचकधून आउज
 नासंधया कायधालकं अस दवासुन कृपकृजनासंधकृपकृयादा अत्वा नं थथेनं जनासंधमाचकमरुसु
 अमुनरुयनपमक्रिअ आउ क्रिपनित्स्वस्वगुलिअग्निर्धं श्रीमयापनाक्रमउपायक्रिअर्शनननकायाचकं जि
 पनित्स्वस्वगुफनअदाअजनासंधनकाकवाहवलसमाचकधकं रुद्रनकाया श्रीमनकतादं मधाअहर्चकृष्ण

॥ पर्व ॥
॥ ३३ ॥

नव क्रांति यूपिष्ठिन अननक गगया दाल कि रु धाया कृ ग लि रु धान पृ थि धल ल य रु अ ध क अननक उरी मन ल
य रु अ रु ना सं धं कं कृ त्या ख ध कं री म रु लं य म अ उ ल थ का ध कं धालं थ धनं यूपिष्ठिन न कृ तानं म धा अ ॥ **॥ कृ कृ उ**
य व ॥ री यूपिष्ठिन कि उ न ग ल रु ल सारी म अ रू न नि म्र कि ल अ क्रा अ ध कं धालं ॥ **॥ वे ग मा य न उ वा च ॥** री रु
न म रु य ध ग कृ कृ या व च ग द द अ री म अ रू न नि म्र कि ला अ चानं थ ध वान स या अ यूपिष्ठिन न रु ल सां धालं री रु
कृ कृ ल पा ल स्य न कि अ वि श्व स वि अ ध कं आ रु द य क म ग अ ग थ धाल सा कि प नि स मा मं व रू कि थ का कृ ल पा ल या प
इ का या प्र ण द न स म रू द यि अ रु ना सं ध मा यि अ रु नं स म रु ना रू अ यि अ ना रु स्य य रु सि द यि अ ध ग न कृ ल पा

॥ श्रीसूक्त ॥

113811

लयाग (४००) काश्ल अर्थ याद विष्णु ननाने याद न किं कल स्वप्न किं मनस मिखा थं कल पाध कं य धिष्ठिन न
 आह्लादय का ॥ ॥ श्रीमार्जनं उरानं मनमनं नार्दनं ॥ मनश्च विहीनस्य जीविनं कीदृशं कलं ॥ शक्य
 हिम अर्जन किं मिखा न ग्वल धर्क कल पाहनं किन कल सां मन धर्क कल कल पाध न मन मिषां मद न का अ कि
 न्वा द वा द या कृ प या न किं स कल स्वप्न मद य क किं न्वा ये म य या थ न किं स कल स्वप्न क गल या द लिहा ड य माल
 श क क किं न अर्जन न कला संध मा च के रु ड न न ना ना य ए अ व ना न धर्क व्या से न किं क का ड स्वप्न म ल पा ना लं क य ल
 प रु ड शी मं महा व लिष्ट सम ल का र्य या य स म र्थ थ न शी मन का र्य या द न किं न ड पा य व द श क वि द न हि म

॥ पर्व ॥

॥ ३४ ॥

या क्रमपनस उपाय कन माला कृष्ण उपाय वृद्धि कलपाल या कंदानधुका कार्य सिद्ध शल अर्थ या क्रम व कंध वच
 नददा उ कृष्ण अर्शनरी मं महा जाया दा उ मग ध द ग ग उ न व क्रु या इ न क व चा दिन नाना अर्ल कानन गिया उ पि
 उ न लंगन काल सा क गु लिन गिया उ चंद्र सूर्य अग्नि थं ध प नि स द्ध उ द अ न ग न दि द र्क पान या दा उ अ न ।
 ॥ इति श्री महा कानन सहा पर्व विनायक सूर्य कृष्ण अर्शनरी माग मन ना म च उ द्दि शा ध्या यः ॥ १४ ॥ ॥ कृष्णी वा व ॥ गौरी
 मारु न रु ना र्त्त न्ध या न ग न या ना छ न उ ध द ध न ग न या ला क स म र्क ना ग ग म क उ ध प र्व ग जा या उ ध न ग न स्य य
 नू या ध र्क धा यो उ वी न प र्व ग क्रि अ गि न उ ध द प र्व ग ध प र्व ग ग या उ उ दा ध गि नि ग उ या ना जा प नि स म र्क क दा उ

॥ श्रीसुता ॥

॥ ३१ ॥

तथा क्रसवकनपियकृतया सुनं विसृज्य नमस् आत्मललनकि किञ्चिज्जान धायमनं धवला ज्ञानं किञ्चिज्जान नूयाधव
नस सुमिजायागर्हस (गोममयावीर्येन सा क्क कायपनिद्रुहने जीसीननीयागर्हस (गोममयावीर्येन सा क्क कायप
निद्रुहने कांकावगीथागर्हस (गोममयावीर्येन सा क्क कायपनिद्रुधगु क्क स्यने मगरुदगयाना ज्ञानासंधया क
सुचलपाडायादध (गोममयावीर्येन सा क्क कायपनिद्रुधगु क्क स्यने मगरुदगयाना ज्ञानासंधया क
स्यनज्ञनासंधया उल्लुगुना गधधयससराईअधनि क्क नागया पुष्पादन ज्ञानासंधया धनसुनानं कायमरु सु
नानं रुयमं रुदव असुनपनि धनगनस इहाअयमरु किञ्चिज्जान नूयाधकं धायाअअन ॥ **विगयायने**

॥ पर्व ॥

॥ ३१ ॥

उवाच ॥ लज्जनमज्जयधनं क्क यावचलद काअरीम अर्शननि क्क हर्षमानया काअ इहाअनं वक्क चानी नूयनअनं
धधयससमकलाकं सुखि चउवर्गुजा निरुक्क दगहनं नाना वदपनलयाअ चाद अ नगमयनपनि स्यनमहा
लाअ चाद प्याखनरुयाअ चाद नाना वाअ वाजन थाकाअ अ न क वलि पूजा आदिनं स्वप्नं स्वयाअ ज्जयरुहा
ननं अका ज्जयरुया चापाउति धक्क ज्जयरुह इर्थना ज्ञानभाचकाअ धयादगुिकाचन धा कस्वग्बद दयकं नय
धधाकसदादं धायन्वालकं नया वाअ चापपहलसं धायन्वाल धमन धायूअ धदानस रक्क निपूदस्य चाद धरव
हनरुलसां ज्ञानासंधमाचकं धकाअअ क्क धरव अ नयनन कं रुहाअ मिअहनं क्क उलि दानस दानपान निक्क महावी

॥ श्रीगुरु ॥

३०

निवर्तनीयं पत्राकर्षणं (धर्म) स्यात् कायगणनं नडाया कृत्वा या कृत्वा तिस्रस्तुत्या अविद्या नमया संथर्थि
 दपनि पूजाया दा कपनि सन क्रिष्ण कृष्ण लक्ष्मण गुलि रुडा कृष्ण न धकडा या धक कृष्ण संधन धालं ॥ **॥ द्वावा**
॥ स्नान या दा अशुभा पनि सुवर्त धर्म या दा अशुभा पनि कृष्ण नया अलंकार तिसा गालं मगडा हृत्ना संध क्रिय
 नि कृष्ण यव कृष्ण निधु का क्रिय नि सुवा कृष्ण वल सा य यल सा सा अल मद्र था य सन कृष्ण या धाल सा क्रिन कन दउ
 धक धालं ॥ **॥** अद्वा न धनि था गहं दान न सुहृदा गृहं ॥ प्रतिष्ठ किन ना बीना दाना धेना नि धर्म ता ॥ **॥**
 गद्वा कृष्ण न लमद्र था सन मिश्र या कृष्ण न दान न कृष्ण मद्र कृष्ण ववहान थ थ अल नडा न बीन या धर्म थु का

॥ पर्व ॥

॥ ३१ ॥

[illegible]

॥ श्री सहा ॥
॥ ३८ ॥

संतया इ कृत्रिया धर्म प्रजापति प्रतिया लयाय बहुवर्तुजाति न कायाय धर्म न्याय नीति रिन कथं समस्त साकुस
ज्ञासंतया धर्म जिन धर्म यादं थाका थूका जिन अ धर्म यादामद थयि द कृत्रि कृपा पया न्यां मद ल कृपनि सस कु अ कुने
भाव शलता भाव कि अ कृपनि सुख भाव कं जना संधन दना ॥ **कृत्रि वाच** ॥ राज ना संध कृन क्रिपनि स कं अपना
र मया क धाया या क नू वं ग या श्रुना जाय धिष्ठि न सन नाय स य य रू या य ध क धा ल ध न न क्रिपनि कृ संह ल कृन क
रा ज ना संध कृन अपना र मया दा धाया या न क २ ना जा पनि कृन कृदा अ त या अ त ल म हा इ ४ ख न का अ त ल ध कृन अ
पना र या दाम पूला कृपा पिष्ट कृ कृ अ तु ल पा पि स नूं म द ग थ धा ल सा म नू क न म नू क स्या दा अ म हा द व या ग व

॥ पर्व ॥
॥ ३८ ॥

लिवि मया दं ग अ अदिक ना जा पनि स्या यून ध कं अ अ क्रिय नि सन न का या य या दं अ या अ म ना जा पनि न का या य म
द कृदा अ ध ह स्या समस्त क्रिपनि स अ यि अ म नू य ना जान ना जा स्या दा अ व लिवि या अ म हा द व पू जा या म ग ने ध क्रिपनि स
न कृ म म नू ना ना जा पनि प शु या ना म कृ दा अ भा व क त द ग ने म द मूर्व क र्म या य स दा अ कृने ध न नि नि रि न नू ध मी
ना जा ध न न कृ प शु या दा अ कृ स्या दा अ समस्त ना जा पनि न का या य र ना कृ म्वा य म ल सा समस्त ना जा पनि यि का या अ ल
ल ना अ कृ अ कृ नू वं ग या श्रुना जाय धिष्ठि न या पा इ का स ल क पू ल अ ल सा कृन क्रि अ न का र यी अ र्ग अ म स कृन त अ य र
यि अ सि य म द दं वृ व न कृ ल सां ध सं सा न स ना जा ध कं द य का अ त ल ना जा या दं अ व काल का य क ल ह ना ध ग न कृत्रिय

॥ श्रीगुरु ॥

॥ ४१ ॥

लाभकं हादा अथ धर्मा अथ वचन ददा अलाय धर्मा निश्चय यादा अनासं धन धाया कनिर्जति ग्वाहन विस्य दुःख अना क
लाय अर्जनं कलं बाल कडुनिध अकलाय धर्मा नही मडा लाय धर्मा कं र्का यादा अगदा काया अहिंद वला सया यादा अ
धा कान धिन मय दान धा य स अ न ध कं अ न री म अ ना पं अ दा अ री म या ग दाम दू स या अ अना सं धन थ अ ग ज वि या अ
थ अ न अ न ग ग दा का या अ महा प्रलय काल या दा अ य दू या र्ग ग ज न ग दा दा मा अ य दू या र्ग हु नं ग ज ना ल ना अ य दू या र्ग
हु नं वा दू य दू या र्ग हु नं थि थिं गु दान क या अ य दू या र्ग हु नं मि क स्यां क न क्का दा अ य दू या र्ग नि क्की उ ति हा अ हु नं मि ता थ
त्या ल खिल थ ला हा मि न ला हा त दा या अ य दू या र्ग हु ति न् हु ति प न का अ य दू मि त्वा न मि त्वा धि हा अ य दू क ल धू न क ल धू

॥ पर्व ॥

॥ ४१ ॥

न क या अ य दू ग थ न दा अ थं स द अ य का अ थि थिं व च न न्वा दा अ रि न क ला हा न न ला हा त अ दा अ य दू या र्ग अ क स जि
क थ क स कि क थ कं सि यं म इ महा प्रलय या द य दू ग थ धा ल सा ध ल पा स ले व द्वा पी ले न वा द थं नि क स नं थि थिं स्या य म न
स या धा ल या दा अ थि थिं धा ल वि या अ य दू या र्ग अ न दा अ थं हा ला अ नि क स्यां क्क उ न हि अ य का अ थि थिं व स अ दा अ य
दू धा ल न मा ल क या अ य दू महा प्रलय य दू महा ग द न ला य व या अ य दू थि थिं व स्या न व स्या दा दा अ य दू धा ल नि द्वा
दा अ य दू धा ला हा न न पा ला हा न दा या अ य दू महा ग द द य का अ थि थिं व स य दू दा अ मा ल य दू या दा अ द धी वी ह
क हा क इ न क र्का अ थि थिं मि हि न् मा अ महा ह र्म मा न या दा अ थि थिं स्या य र्का या दा अ य दू या क थ य दू क्का न स

॥ श्री गुरु ॥
॥ ४२ ॥

महा गुरुया उ अ न क ल क प न स न ल ग अ मिसा न बाल क छा ० व्या व क्र त्या स्य वा क्र ग क प्रिय वे ग्ध गू ड आ दिन सा या उ
चा द प थ स चा प ल या दा उ सा या उ चा द थ प नित महा यू द या दा उ नि क्र स्यां चल नि हा या उ आ ग क थं वृ द्वा व र्ति स न
उ त्वा क थं थ यू द्वा आ ग्नि न मा स रु क्र प क या उ या द गि सं जा नि यू द्वा कि किं व किं यू द्वा च उ द्वा गि कि किं यू द्वा ना ग्री स म य स
ग ना सं ध या व ल द ल स या उ रु क्र स्यं सं क त रा खान हि म या त थ लं हा ही म रु ना सं ध या मा ला द ला ध कं ला हा ग हा उ ना
या दा उ क दा थ न ही म न थ रु ना सं ध ग थ मा च क ध कं म न न चि न ल पा उ का सा या उ चा दा उ पु न जी न ही म न रु क्र या
खाल सा या उ चा नं थ न रु क्र स्यं ही म थ थ चा न स्व या उ रु क्र न रु ल सां ला त जा स्यं चा द घा व रु पू का या उ हा या उ क दा

॥ पर्व ॥
॥ ४२ ॥

थ सा या उ ही म न चि न ल पा थ अ ध र्म यू थ थ थ या य म ग उ अ या ग ध कं थि थि वा रु यू द्वा या दा उ चा नं ॥ **॥ क्रिया**
महा गुरु न ग स रा प र्व नि रु ना सं ध व थ स पा द (गो ३ था य ३ ॥ ११ ॥ ॥ वे र्ण वा य (गो वा च ॥ हा रु न म रु य ही म उ रु ना सं ध उ
नि र्ग वा रु यू द्वा या दा उ थि थि दा या उ थि थि जा दा उ चा द व ल स ही म न मा च क त ल ध कं हा ल पा उ चा द व ल स रु ना सं ध न
ही म या नू ग ल स मू छि न दा या उ हि द्वा क थ थ थ उ द्वा द य स न हि उ उ स्व यां उ रु न वं ग या म हा अ रु हि म न रु क्र हा ग हा
रु क्र कि नू ग ल न हि उ उ न कि ग्मा य मू चाल थ नि थ रु ना सं ध मा च क श ल स या उ वि द्वा रु न ध कं ही म स न न थ थ वा उ द
दा उ रु क्र उ प द दा उ ही म स न या न आ ह द य क ल ॥ ॥ रु क्र वा च ॥ हा ही म स न रु न वा रु या व न न च रु व र्ति ना जा

॥ श्रीसूरा ॥
॥ ४३ ॥

शयिउ मृष्टेनवयागजं धनि कनपिकाउ उनपेवाग वायूअयावलंथ नि कनपिकाउ हिउं विनाकसमावकायावलंथ
नि कनपिकाउ कनवलदकं समस्तवलंथ निपिकाउ कनपनाक्रमया प्रहावनथ निजियनिस्यनस्ययाउ वाचधकं धन
कननधयावचनदकाउरीमयाकाकलमानन काधउयहिंयाकाउ उकुउलाउ उकाउरुयाउ जनासंधयाउ मिमाति
कजाकाउ गतकि वाकहिउ हिलकाउ वंगचताक उाकाउ कुमिनिपांजाकाउ निरुलाथयाउ ननहासंस्याकाउ माल
रुमहासंजनासंधमृष्टरुलंगलील प्रलिनमं दुमलाउ वृष्टुयाकाउ गलं थर्थिगुरीमयापनाक्रमसायाउ समस्तला
कं कंममाननग्धा कहनं गुरुसदअमिसातसकलं योमाचाकदसं अशरीमयानादसहनहिमनस्याकाउ जनासंधयद

॥ पर्व ॥
॥ ४३ ॥

काउदगया धाकासतअयात्वं संदससइहाउकाउ अकप्रतीसइहाउकाउ ककस्यनं समस्तनाकापनि ककाउम
यापनिपिकायाअधालं शनाकापनि कपनिसमस्तं थजनासंधनवलिसस्याययादंतल आउ जिपनिस्यनक
पनिसमस्तं लकायायधूनग्धायमृचाल थपापिहजनासंधमाचकधूनसाअधकं ककाधनं लिगिनिगउनपिका
याअतयानाकापनिमूनकाअधयाथननग्धाकयाउ नीलालतुयाअजनासंधयानथकायाउ शीमस्यनदकासाय
धधामासानथियाकाउ जेउनथककदकाउमहाजायाकाउ कापाथ जेउनथसदकाउ ॐउनदेसुज
यत्पासं २२००० थर्थिगुनथधनिगुलिंकायाअमहाहर्वमानयाकाउ जेउनथसककदकाउमहागंजया

॥ श्रीसुरा ॥

॥ ४४ ॥

काउत्तयइमयायमहायाज्ञयाकाउत्तयवज्जवाढर्थमूलनगनउकाउगनूठविनलपाभनगनूठनककल्प
विकलयूसियाअनकावननगनूठउयाअग्रीरुक्कनमस्कावयाकाअकालेराप्रुठिजिनकयायमालआरुविकनध
कयायाअरुक्कस्यनआग्गदयकलेरागनूठअनथयावासवाअअरुसवाकनिधकआरुवियाअरुक्कयाआग्ग
धरुयावासवाकाअनानासदयादहालानानाप्रकाननहालाअधरुनासंधयाधननकायादंवाढनागपनिआरुकि
अमलिअनागनिधकायाअनययकाधसायाअदगयालोकसमस्तग्गकाअरुक्कस्यनककयाखालसयमकाल
महागुरुमानयादंवाढनधरुअनथगर्थिदकालसापवतयावासेचललेपंरुयइअसिमायावासेद्यायजिअधनथ

॥ पर्व ॥

॥ ४४ ॥

धरुसुनभाचकमजिअकापाअनथरुअयाअनंलिवसनाकायाअनंलिक्कवनाकायाअनंलिरुदधनाकायाध
नंलिधयायुइरुनासंधयाअनंलिग्रीरुक्कयाइलंअनथसककदकाअविष्ठाकसमस्तउमिमायाअसहायादंविष्ठा
कगिनिनन्दनपिकायानाकापनिचउवर्गुदिनंनानादवआदिनंकाकाअरुगितयाअअनकदवसमस्तकाअन्यन
याअवउवर्गुदिनाकापनिस्यनंलाहागहाऊलपाअरुक्कयाकसाइयागसाहिग्रीरुक्कदवाधिदवकरुणायासम
उरुदवकीनन्दनजिपनिसननमस्काअजिपनिमहापापिरुयाअवाकागधकालसाअरुनिशयाअकलपालवेनीय
काधरुनासंधयापकरुयाअखालअयाआअजिपनिनकायादंविष्ठायमालरुयुनरुमहग्रीपरिगनूठधरुकि

॥ श्री सहा ॥

॥ ४३ ॥

पनि वन्निमावनयादा धनं न कलपालरुलंदया अक कनूध अक कयाना थकि पनि पापि उक्ता न यादं विष्णु क ह पन उ
क वासुदव जि पनिसुजी अनका यादं प्रसेन रुया अविष्णु कल सुकल कमल लावन कमला पति वासुद अ दवा धिय पति स
दा कालं नमस्कान सदा दं जि पनि नोनवनन क सपन नया अ वादा कलपाल सन धन न कन थ कासं विष्णु क ह ल्म वि पति
हं गपाल कलपाल या कमल चन धन विदुस जि पनिसुजी अन वा क स वा या य आ द स द य क स विष्णु क न । ॥ अह
वाच ॥ लोनाला क सुविष्टिन या स अ क रु या अ स वा या दा अ वा न ना ल ह न ना ला रु धि वि न यो ना स स य य रु या य स वि
का या दा अ वा द माल ध क हा दा ध न रु क या व च न द दा अ सम रु ना ला पनि स न धा या ला रु क कलपाल या आ हा थं जी अ

॥ पर्व ॥

॥ ४३ ॥

नं धन नं सुविष्टिन या स वा जि पनि व ल रु ल कलपाल या इ आ नि जि पनि ध क ध या अ थ प्र कान न सहा या दं वा न रु ना सं ध या
पू ज स रु द व थ अ पू ना हि त ना म रु ध न स हि त या दा अ अ न ग दि वा न ल कि सि स ल आ दि नं जा दा अ रु क या क अ न त या अ न
म स्कान या दा अ ग्हा दा अ वा द सो या अ द या अ न रु क स ध स रु द व या न अ रु य वा वा वि या अ प्र सा द मा न्य वि या अ कि जा अ
हु ल्य या दा अ ड वा रु क का या अ थ ना स सं ति का वि या अ ना स रि ध क वि या अ ना ला या न थु गु प्र कान न ना ला या दा अ वा ध
वि या अ रु न व द या आ द या अ ध कं नी क नं ध नं लि रु क प्र मुख न ला रु न या दा अ सम रु ना ला पनि थ अ २ ना स स लि रु क न
लो ना ला क जि पनिस स ल द न ना स अ य माल ध क हा दा अ क नं तु लि वि नं ना ला पनि ना प वा द रु या श्री रु क री म अ रु न

॥ श्रीसहा ॥
॥ ४७ ॥

सर्वप्रसक्त लिहायाया अनकनलादि कडाया समस्त धनं यथिष्ठिनयागलडा कडाया शीम अर्जनं यथिष्ठिनमस्त
नयादाया वाद यथिष्ठिनन कर्माधायं मरु ॥ **रुद्रावच** ॥ शीम यथिष्ठिन शीमस्तनया वाद यावलन रुनासंधमाचक धन
नाकापनि समस्त मालताया अयं धन आया किन अवधनं यहु या रुम शीम यावलन थपनि निष्कं संहानमया संहया जि
अकमाया यमालधकं धयाया यथिष्ठिनन कर्माधायं यहुया अलिगनया देवूपा नयाया अनन्दन चानं अनकनन आदि
नं रुदानस थकाया समस्त रुकाकनख कडाया यथिष्ठिनयागल रुधमानं रुयाया रुद्रन नापं वादाया हया नाकापनि
रु यथिष्ठिनन मान्यप्रभादवियाया लिङ्गातं यथिष्ठिनयागल मलिमयस रासायाया समस्त नाकापनि थया **नाथ लिहाया**

॥ पर्व ॥
॥ ४७ ॥

नं ॥ **वेगमायगावच** ॥ शीम अनमरुय गभूमाचकाया अनन्दन रुधमानया दाया शी रुद्रा रुद्रन थसदकाया दानिका
विद्यातं यथिष्ठिनन नलादि मलिमय अनकदय सयाया रुधमानं रुयाया थदय समस्तं दायनि लडायाया शी रुद्रा या
ग रुसकीर्ति वधु विद्याया शी रुद्रा या पालि सचि कलयाया गुलखडायाया चानं कि किं अवि किर्न यादाया नाना पूजा
पारवन कथा कडाया सुखन चानं शी रुद्रा दानिका सुसुखन विद्यातं ॥ **रुद्रा महरानन सहा पर्व विरुना**
संधवध रुद्रा गमन नमादादगा १५५ ॥ १८ ॥ **वेगमायगावच** ॥ शीम अनमरुय यथिष्ठिन मलिमयस
रास विद्याकावलम अर्जन कवचलं रुद्राया गभूति वधन गादाववलाका कानं मरु कथार्थि गुनाहालनका

खायाअमृषिष्ठिनयासहासअयाअकालंरात्राअमृषिष्ठिनदाशुक्लपातयागृकार्ययायमातुजिपनिसनयायध
कंधायाअमृषिष्ठिननकृतांमध्याअहनेअर्कननध्याहादाशुक्लितुधनविरातिनिधनयानिमिहिनअर्कतप्यमानि
हनेनकनाजापनिदयकमानिधननआअकिउहनेदिगडाडाअकृवनअयलपाअअयाअधनममर्ककयाअह
यआहाविक्रनधकंधाधयाअमृषिष्ठिननध्याहासोम्यअर्कनकनराश्यादाअअलाधननकिनगलामकाला
आअकनवाअगपनिसकआगिराकायाअकनिअनवेनीअयलपाअमिअयाहाअअधधकअनकसुनानलिन
काअगाअमृअकसलसयानधसदहाअअर्कनउहनेदिगसकृवनअयलयधकअकाधधमीमस्यनसर्वदिगअनेन

कृलपश्चिमदिगसअनेनसहदवदकिनदिगसअकाअअनकनाजाअयलयअर्कननउहनेदिगसदकानाजा
पनिअयलयलेहीमनपूर्वदिगसदकानाजाअयलयासहदवनदकिनसदकनाजाअयलपाअनकृलनप
श्चिमदिगसदकानाजाअयलमा॥ **॥अमृअयउवाच॥**हावेगंयायनकिअजाशुपनिसनदिधिययादायाख
विक्रानयादकस्यविषयमातुकिअर्किलेसनायाधकंधालं॥ **॥वेगमयनउवाच॥**हाअनमृअयउहनेदिगसक
लिन्ददभयानाजासं१३अकदभयानाजासं३कालकृदपर्वतयानाजासं१सकलदिपयाप्रतिविध्यनाजासं१सं
कदीपयानाजासं१कमतायानाजारुगदहनाजाअअर्कनअमहाप्रलयययधधनाजासातलसवाअअनकनाजा

श्रीसहा॥

॥ ४८ ॥

दिनातपनिगंगासागन आदिनेरुमियानाकापनिसमस्त उवादाअभूशनअमहायूद्ध व्याकृताहगदर्हनाकाअभूशन
नअस्त्रानसंध्या आदिनेमयासंमहाप्रलययूद्ध लिखरुगदर्हनाकानअभूशनअलायरुनासामदयाअगुह्यपूकनामनव
वसनअभूशनहार्हाभूशनगंधकनपिनापाठुनाकाअर्थकधन्य२६ ॥ ५० ॥ अममउलंक कनपिनापाठुनाकाअकि
अमिग्रहाउनवादासदादंराअभूशनकपाकिअ ॥ ५० ॥ अममलाहाधवनस ॥ ५० ॥ अमिनरुकाथथरुकाअ ॥ ५० ॥ न
कि कसननधकंशयाठ ॥ ५० ॥ अकिअयासायादंश्रीमियादंमित्रयादंवादाधननआउनहासइसुनंमदयकंवादा
आअकवालकउनि कअकिअ व्याकृतालदमहासंगमयादंवादाकिनकरुयमरुयाधननकधन्य२६ ॥ ५० ॥

॥ पर्व ॥

॥ ४८ ॥

नरुलतासमस्तनाकापनिंसंगमनरुकाअथअवस्ययानंतयाइलसो थर्थिदवालकतिनिथधनंकिनरुयमरुयाध
न्य२६ ॥ आअकनिमिर्लिनककार्यनकअयाधकं ददाधनरुगदर्हनाकायाववनदंकाअभूशननधलंशागद
रु कअकिपिनापाठुनाकाअउलंअसाकिदाइयुधिष्ठिननाकायानासूययरुयाययादिद्विजययादंवादा
अधनादिकायधककिअयाशरुगदर्हकिनकनधयलाकूधयमाल कनकदयाअसानधधनविस्तहिअधकंहादा
किदाइयाइरुयागमालधकंधयाअधनअभूशनयाववधदंकाअरुगदर्हनाकानधलंशाअभूशनधनकिसिस्तति
किअनाधयुधिष्ठिनयाइनायुधिष्ठिनवक्रवहिनकाधरुत्यकिनरुकासवायायमवृत्ताधकंअनकप्रकाननसि

॥ श्री सूर्य ॥

॥ ४२ ॥

वायायश्वरुनकिनअनकइ॥ खसियाअवलाधनखकिमाअदिसुधकं रुगदरुनाज्ञानधालं ॥ ४२ ॥
महासागरवतसुहापर्वसिअरुनउरुनदिमिऊयउनविं ॥ १२ ॥ ॥ वेगमायसावाच ॥ ॥ शंऊनम
ऊयधनंतिअरुननिलानधनाधसंवाडाउरुगदरुनाज्ञाननमस्काययाडाअधयाशमिउपितारुगदरुकिन
समस्तकार्ययातआअकिउरुनदिगसउदकिनकिनकटकसंयवाडाअविऊनधकंधायाउरुगदरुनाज्ञानरुल
सांसापतिनिसलनलिवकाअविलंअरुनरुलसांधनसनानलिवकाअउरुनदिगसउदअअरुनगिनिपर्व
तयानाज्ञापनिऊयलपाअधपर्वतनपूर्वदिगसउदअदकनाज्ञापनिऊयलपाअधपर्वतनपश्चिमसंदकना

॥ पर्व ॥
॥ ४२ ॥

जापनिंऊयलपाअवहिगिनिपर्वतयानाज्ञापनिंऊयलपाअउपगिनिपर्वतयानाज्ञापनिंऊयलपाअधननाश्वयानाज्ञाप
निऊयलपाअकमु.चामल.सुवर्ण.नानाउव्यआदिनंकायाअसमस्तनाज्ञापनिंथअवधयाडाअतथाअउकदंशयानाज्ञाप
रुदरुनाज्ञापनिअनकलाकपनिसल.किसिअथसदकाअसनापतिह्यानंअयाअगदनपधिअरुनयासंग्रामयागदन
थिथिमहायूद्धयाडाअसमुअरुनप्रहानयाडाअप्रलययूद्धयाअअरुनअत्वायसामर्थमदयाअअनकनलादिउवा
दिऊअनंतयाअवियाअगनलादिअयाअथअवधयाडाअद्वयशुकोकायाअधनाधसंगयाअसल.किसि.सनादिक
तकसुकिऊपनिवाडाअरुनउरुनदिगससंग्रामह्लादंअदामहादवनाज्ञापदामाज्ञापसुगंकलनाज्ञापसुदनाज्ञाप

॥ श्रीसूता ॥
॥ १० ॥

यत्तया उरुनसपा क्षीनया नागापनि समस्तं जयत्तया उरुनसपा दग्धन दालायाल द्वाडा अथाधुलिख समस्तं यद्विधिनया क
कदा उरुया यद्विधिननं द्वाडा क्षीया जिनामन धनगनयानाम कृडा धर्कं काया उरुनन धननाय नागापनि थडा वधया
दा उरुया २ नागापनि सपयया दा उरुया थडा वधया क समस्तं काया उरुननाय पूला उरुया दा उरुया दग्धनगन उरुया दा उरुया
गया सना द्वाडा विंदना जं जयत्तया उरुनादिसमस्तं काया उरुना जं वधया दा उरुया सनान सहितया दा उरुया विदना वधना जं
जयत्तया उरुना द्वाडा काया उरुना नागाया द्वाडा वधया क समस्तं पर्वत सवा दनागाया क द्वाडा काया उरुना न
नया पो न नागा उरुना यद्वया दा उरुया सयन यद्वया दा उरुया जयत्तया उरुना द्वाडा न सवा का वी न नागा समस्तं जयत्तया उरुना

॥ पर्व ॥
॥ १० ॥

धननागा सकलं दग्धन जयत्तया नागापनि द्वाडा २० धनं लिखाग्निनया नागा द्वाडा १२ जयत्तया उरुना लिखा नागा जयत्तया द्वाडा १०
विगर्ह दग्धना नागा जं सव्या न नागापनि स क नाना वधु धन काया उरुना विना नागा जं जयत्तया उरुना वा सिना नागा वा मान ना
जा जयत्तया सिधु नगनया नागा जं जयत्तया द्वाडा पनि सनं जयत्तया थडा दग्धना नागा जं जयत्तया उरुना दग्धना नागा वा द्वाडा द
सया नागा द्वाडा २ महा वी न द्वाडा उरुना जिम आ कृत महा यद्वया दा उरुया जयत्तया धन नागा जं जयत्तया उरुना वधया दा उरुना धनादि
काया उरुना समस्तं धनं द्वाडा धनं गया उरुना द्वाडा दग्धना नागा जं जयत्तया द्वाडा दग्धना नागा जं जयत्तया उरुना थयाम
धन सवा द वी न नागा जं जयत्तया लं व क लु दग्धना नागा जं जयत्तया उरुना पलक म्वा दग्धना नागा जं जयत्तया म्वा दग्धना नागा

॥ जीसरा ॥
॥ ३१ ॥

जाअ महाप्रलययुद्धतानकामयअमहादअअत्वा दार्थमहायुद्धअर्शननापंकपमानरुअअर्शननमधिकनाकाभावकाअथ
मधिकनाकासलरुद्रयाउनर्थचादसलकहनंक्रासखायाथचादसलकजिमषकनानावसुसलअनकमाल१०००व
र्षवर्षप्रतिकाययादंताअअथननंइअन्यहिमांवलयाभंगसचादअनकनाकापनिंअयलपाअअथगावलपर्वतयानाकांअ
यलपाअअनसमसीकायाअथनंतयाअहनंदहाअनं॥ ॥ मिश्रीमहाहानगसरापर्वदिअर्शनउरुनदिअथविंगनिम
आय॥२०॥ ॥ वंशपायलावाच॥ राऊनमअयथनंलिअथगावनपर्वतन॥ गाअडाअकिंपूत्रषदगाअडाअइमनाका
यापुद्दइमसननाकाअमहायुद्धअंअयलपाअथअतलसतयाअताथअगुदकपत्रिषअडाअगाकपूतनाकासमस्तस्यनं

॥ पर्व ॥
॥ ३१ ॥

अर्शनयाकहऊनायागअलंगुदकदवगहामानसनावनमधिकल्यादिजात्रयाडाअसहादकअत्रनाकाअयलपाअअन
कसूवअुदिकायागंधर्वदगाअयलपाअनिमित्तकलाषअथमरुकाकअनकवनकायाअहयाअहनीवनीषअडाअनक
महाश्वीनरुयंकनमूहि सहावाविअयाअयुधिष्ठिनयातनमस्कात्रकायाअकायाहाअर्शनअदगाससमस्तदववसलपं
चादकनअयत्रयमरुगगथकालसाधनगत्रसमनूषअलकासमृदुअयिअअननकीअयअयिअथकाअनाअसकिअय
मतअनाअकिअवसासऊनालिहाऊनिअनाअसयुद्धयामऊनमइकिनननायायहायाअवनात्रमूहिअधनगत्रसद
हाअलसाकिनकहादंमखनंअननअनाअसदहाअयमतधककायाअनाअधरुमिसमस्तकिनाअरुनाअधिष्ठिनयाव

॥ श्रीसहा ॥
॥ ७२ ॥

सासुनादिन कृष्णविलगुलियायशना धाकन धक धालं ॥ अर्जन उवाच ॥ एवला कयुधिष्ठिनया धनाश्रुलसा आ
अकलश का हि अंधक धाया अ धद गया दवगधन समल सन कन थं का अ विलं हिं रिद अ सत रिन २ रिता काम वक्रादि अ न
क वक्रु हया अ विलं ॥ वेगम्या य एवाच ॥ राजन मज्जय धगुलि वधन अर्जन या पना कर्मन उरु न दिग या ना का पनिस
मल्ल जयल पा अ थ अ व ग्ध या का अ अ न क ना ना ड व वक्रु सुवर्ण क मु नी चामल न ग न ल आदिनं समल हया अ गि रि न क
ला क संल क्क सखा अंगल यार्थि गु व र्णु सल क्क १० रुठ यार्थि क व र्णु सल क्क १० थ ग थ म हया अ १० प्र क्क अर्जन लि हा अ या
अ युधिष्ठिन या क्क अ न समल धनं त या अ न म ल्कान या का अ उरु न दिग या समल व ल क न रं क का अ धा नं थ न युधिष्ठिन

पर्व ॥
७२ ॥

न समल धन आदिनं स्वया अ म हा ह र्ध मान या का अ आ न द न चानं धनं लि ध धन या का स अर्जन त या अ धनं ज य ध कं अर्ज
न या ग ना म कृ तं ॥ १० रि श्री महा राज न ग सहा पर्व रि अर्जन दि ग्वि क यै क विं गा ३ ध्या य ॥ २१ ॥ वेग म्या य एवाच
राज न मज्ज य धनं लि युधिष्ठिन न म ल्कान या का अ आ ला का या अ पूर्व दि ग स री म अ का अ कि सि क्क १२००० सल या न ध क्क १२०००
म हा च क्क स ना धा य ध त स ना न स रि त या का अ अ का अ पूर्व दि ग या ना का पनिस क्की पनिस क्क ले खालं सी म अ या अ थ आ त न
समल क्की पनिस खालं धनं लि ध री म पं चाल न ग न अ का अ इ प द ना का थ ग ग गु न या क अ का अ रि न क का ल या अ त थ अ गं
उ कि द ग अ का अ ध या ना का ज य ल पा ध ना दि समल का या अ य का वि द रु द र्ग ज य ल पा द र्ग रु द र्ग म हा दू ४ ख न ज

॥ श्री गुरु ॥

॥ १३ ॥

यत्नपादगर्भद्वयभयासुसर्मात्राकांमहाघानयूद्धदिन १४ थसुसर्मात्राकामस्यास्यंकाकाअहयाअथअसनापतिया
काहनंअश्रकानअकाअश्रनकभनानसहिनयाकाअश्रधमधधननाकायकलपाअथअवसायाकाअपूर्वदिगसनाका
क १०० थनथअवसायाकादकिंययापूनिददभयानाकाकयलपाकसमाननाकाकयलपासुमिअनाकाकयलपाअथनन
इअनगिगुपाननाकाथनहिमनरालपाधगिगुपालगथकयलयकिअगिगुपालअरुकिरयादंवादागथयायअक
रालपाअयूधिष्ठिनयाकककाअहयाथनयूधिष्ठिननलिसनकदंकायाआनागिगुपालअस्वाकाअकयलपाअअथाध
कथथकदहयाअथस्वसियाअगिगुपालनल्यारालसा.मदयाअथमअयाअरीमलसालअयाअवाकाअयकाअयका

पृष्ठ
१३

अहुमिसिचकाअरीमअगिगुपालअथिथिद्यसपकाअचंवलपाअकमलवारुदिविचालयाकाअथनंलिगिगुपालनाका
नथअनाअसमसंलअकाकाथनरीमसननधयागिगुपालकननाअंकिथकाकिनाअंकनधूकाकिजिउंथकाधकध
याथनगिगुपालनधयागरीमअमथलरुलसाकिनाअंकिधनंकिअंयूधिष्ठिनयाकनाधकधयाअरीमधनाअस
किङ्कतावासुयाकाअविश्रानं ॥ १॥ मिश्रमहागाननसरापर्वदिशीमपूर्वदिधिरुयदाविंआमिरुमाव्याय४
॥ २२ ॥ ॥ वेगपायलावाच ॥ राकनमरुअधनंलितैलंगदभअकाअश्रसाअकनाकाकलपाअअयाका
मानाकाकयलपाअपालककदभयानाकाचंपानधनाकाकयलपाउरुनआमकदभयानाकाकयलपाअककि

॥ श्रीसहा ॥

॥ १४ ॥

अनन्ताज्ञां जयलपादिमवक्तु पाश्वयाजलंगताज्ञां जयलपाचतुयुगया नापनिजनकनाज्ञापनिजयलपाअजनकधन-
संपत्तिमसक्तं कायाअसमस्तनाज्ञां थअवसायादाअतथाअदक्षिणयामर्त्तदगया नाज्ञा सपदनाज्ञापूर्वदिगया कासिनाज्ञा
ज्ञा जयलपाअवंधनयादाअनापवादाअयदासुपाश्वनाज्ञामहावलअनध्वं जयलपाअमस्यदगया नाज्ञामलवदगया नाज्ञा
गमपालरुमिदगया नाज्ञामदधीनपर्वदगया नाज्ञा लार्गदगया नाज्ञा वाधुलदगया नाज्ञामलिमक्तनाज्ञा आदिनंजन-
कनाज्ञापनिजयलपाअसमस्तधनरुक्तकायाअधनंतयाअनाज्ञापनिथअवसायादाअतथाअदक्षिणयामर्त्तदगया नाज्ञा
जयलपाअहागअनपर्वगत्वाहगकनाज्ञा सुधर्माज्ञाअथीतियादाअविदरुदगया नाज्ञा जनकनाज्ञा ॐ स्वपर्वगयाकि

पर्व

॥ १४ ॥

नामनाज्ञां जयलपाअसूक्ष्मदगया नाज्ञा प्रसूक्तदगया नाज्ञा सपदनाज्ञां जयलपाअधनदक्तं कायाअतथाहर्नम-
गदगया नाज्ञा सुन्दराननाज्ञागकनाज्ञां जज्ञातिनाज्ञाथपदं जयलपाअगिनिगउदगनाज्ञां सहदवनाज्ञां धननाज्ञा
नं कनकाअन्यतयाअहर्नं अगदगया नाज्ञा कर्तुयाकलीमअदाअमहायूद्धलीमया महाकंपमानेरुयाअरुयंकनयूद्ध
दिन १० थकर्तुम्वचकं जादाअस्यायगदालीमद्विकसननगतिवायाअमालगाअयुधिविजयाकसनयाकसआया
यमालकाअमालकाकलकाययादंतथाअहर्नं पर्वगवासिनाज्ञां जयलपामानंगयाथथययानिक्तनाज्ञाअमहायूद्ध
निर्द्धं जयलपाअद्वयशकाकायाअसमृद्धस्यननाज्ञाअवदुस्यननाज्ञाथनिर्द्धं जयलपाअलंमूलिफदगया नाज्ञा जयल

॥ श्रीसुता ॥
॥ गी ॥

पाउ कर्कट द गया समस्त स्र कनाकाकयलपाउ धनादि कायाउ वप्रपुष्ट द गयानाका. कयलपाउ सुमूडगीन पर्यक्तना
जापनि कयलपा अंगन नाना नल. सुवर्णवकु. मणि. मोति. नूप. सुवाल अनेक नाकापनि सन भगकि काटि धन धन नल
विम्वरुया धरी मन अनेक धन हया अं दुपुल्लरी मलिहा अया अयुधिष्ठिनया अने समस्त धन अने अया अने मस्का
नया हाउ वान धन युधिष्ठिन नल सां हर्षमानया हाउरी मयात प्रसाद विद्या अवाप्त कर्त॥ ॥ कति श्रीमहा राजा नमः ॥
पर्वणिरी मपर्वदि विजययुया विं. ॥ १३॥ ॥ २३॥ ॥ वेग म्याय. ॥ वाच॥ शरुन मरुय धने लि सरुदवन युधिष्ठि
नया क आकाकाया अदकि लदिग अहाउ अने गसनान सहित याहा अने नमद गयाना कां कयलपाउ मस्य द गयाना कां

॥ पर्व ॥
॥ गी ॥

कयलपा पटन द गयाना कां कर्कट कयलपा निघान रमिया वगुन ना कां कयलपा अं कं राचन द गयाना काया पूष्ट अं
सुनया पूष्ट धन अं सरुद व अं दवा सुन संग्राम अं दुत्यः धमाच काउ अनेक नलादि काया अं अहा प्रकल द गयाना
का कयलपा अं अनेक मणि नल काया अं अहा नन नर्म दान दिती न पान या हा अं अहा अं विन्द अने विन्द निमना कां
कयलपा अं महायुद्ध या हा अं अनेक नलादि काया अं शरु कट द गयाना का नृक ना का शं कना का अमल पूष्ट या
दं कयलपा अं शीष्म क ना कां कयलपा अं कृष्ण कर्णुन दियाना कां कयलपा अं मीनलादि काया अं कर्णुट
द गयाना कां कयलपा अं सुदलंग द गयाना का मानू धा वन पर्वत या ना का पा म न ना का अने ग ना का कि म

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १०१ ॥

निगुली कर्णुद गयानाकापनिसमस्तं जयलपाउ नानाधनादिकायाउ आकायाताधिपतिनाकादकिधपुलिन्द सिंहना ठि
पां अदभयानाका जयलपाउ धननंदराउकाउ किस्किन्ध्या नायसउकाउ मैद विविधमाननपनिसउ मरुयुद्धयाकादिन
१ समकुलपुद्धथथयुद्धरुयाउ युद्धनसंकुष्टरुयाउ प्रीतियाकाउ वाननपनिसन अनकनलोदिसमस्तं दउगायाउ
काया नामचतुनविस्मयथाधनधधकंशीनामचतुया सउकथुका जियनिधनं धधनकाउधकं युधिष्ठिनया यरुसवि
धूमशयकसिद्धरुयमालधकं आसिखावियाउ समस्त धनं लडाकातं धननं सरुदवउकाउ माहिष्मतिदभयानीलनाका
उमरुयुद्ध अनकसनामाचकाउ सरुदवमहाहयनगा कसरुदवया सनानगनवाहिनसउकं २ अग्निदग्धयाका

॥ पर्व ॥
॥ १०१ ॥

उमाचकलं धसायाउथथउसेनमाचक स्वयाउ सरुदवयामहाइः खरुलं ॥ वेगं पायलावाच ॥ लोहनमजय
धगुप्रकानन सरुदवया कटकमाचकसायाउ सरुदवत्वविस्मयवायाउमहाइः खनधनीलनाकागथजयलपधकंम
नविकलपाचानं ॥ जनमजयउवाच ॥ लोवेगं पायलागथ अग्निउसरुदवउ वेगीरुलयरुमाययातधनादिप्र
ऊलवानथथगथरुलधखसमस्तं करुन्यधकं धालं ॥ वेगं पायलावाच ॥ लोहनमजयधनीलनाकायापूडी
कक अणकननपउगी पिरुकि अग्निहउ कसवाह अग्निन धकं न्यात्रपस्वयाउ धअग्निनात्रपगालगाउमहिउ
करुयाउ संधियाक कउास धदसयामहासुदनी कीखकाउ धअग्निनसंजागयाक नीलनाकान धगुलिखसियाउध

॥ श्री गुरु ॥

॥ ११ ॥

अग्निं कन्यां दधुयादाज अग्निलक्षावायाज विस्मयादाज वीनं धन अग्निहाउस मिमक्षुलं थसा याजनायाका चनमिपूल
दाज मिच्छासंजज थख अग्निहाउयाक डाक ग आदिन समसं कदाज नीलनाजान शलसां अग्नियाग थज कावकु विपथकं हि
हिं कुक्षी २० थन कन्याविलं धन थ अग्निशलसां डाक ग यात्रेपन ठायाज थन कन्यां गालगाज नीलनाजा यापूजीज जीज याद
आहं च अग्निं कुं गुस विदुदाज वानं सदादं थ थश्याज थनीलनाजान सियाज खदाज थज पूजी निन्दायादाज न्दाका थन
अग्निन थ थन्वा कखदाज अग्नियाका थउत्य किरुयाज मिच्छासंजयाज थनिलनाजाया दससमसं गउ आदिनं दग्धमा
नयार्त थनाजान थ थनगनमाकसायाज अग्निया कविनमियादाज नीलनाजान प्रार्थनायादाज अग्निसकाधश्याजनी

॥ पर्व ॥

॥ ११ ॥

लनाजान धालं हाजाजान अज कनजि कं वल्लुश थकं थयाज नीलनाजान अग्निया कं वल्लुश अग्नि असा थनाय सग्धन
जानं जिउ संग्रामयाय यादउल्लासं जयमरुयकं तयमाल जिना अ सविपस थन कं डलना ससमसं नोदकं कन दग्धया
दं भाचक माल थकं वल्लुश दाज अग्निन नीलनाजायाग थन वल्लुश वियाज थन थनीलनाजान थज पूजी मरिदन समसं कुपनि
मरिदन का थ थ अग्निन अग्निकान यादं तयाइन थनगनया समियसंजज सहदवयासना लोकपनि अग्निन दग्धयानं
सहदवन थगुलिहं दु सियाज अग्निया क प्रीतिवचन मुतियार्त ॥ सहदववाच ॥ शकक वसा अग्नियुधिष्ठिन
नाजास्य ननास्य स्य यरुयाय यात दिग्बिजयया दं धनादिकायाज यरुयाय सन यरु पुत्रसं कलयाल थका आकृतिवादाज

॥ श्रीसूरा ॥

॥ १८ ॥

हामयायजिपनिमनसमस्तकार्ययादाउ कलपालसंडुययायधकं यरुयाययनाधनादिअर्जनायागडायासाअग्निधम
नदिनधकार्यसविप्रयायमनअधकंअनकप्रकाननकाउयादाउ सहदवनथअगनीनकवचयादाउअग्नियाकधया
शाअग्नि कलपालयाक दवतापुरु तिनसमस्तदवनेगाउयादंगयाक तिनधधताउयादानदि सनावश्यमालकिडाप्री
तिरुयमालथधताउयादाने दि संकुष्टमश्ल साधवात्रवतानसायधकं धालेध अग्नियागाउयाकप्रयासदाद
युधगलीलशयिअरुयमदयीअ समस्तप्राकिदयिअ शाअग्निदवता कलपालस्यनथअकार्यसविप्रयायमनअधकं
अग्नियाकमालदिनकाउदकाउवाने धधवाद सहदवसयाअ अग्निसपनियंमरुतं धनेतिअग्निनकलसां ब्राह्मयान

॥ पर्व ॥

॥ १८ ॥

पनअयाअसहदवयागधालेतासहदवदअर कनप्रहासाया कगलसमर्थसायधूनहासहदव कनधकार्ययादाउधदग
उयलपधायगअ कनधनवस्तुकायधकअयाश्लसा तिनवस्तुनधननं कनवियाअ कायनीलनागानअनगधननं तंवि
यकागकाय कनमनससंकुष्टरुअ धयायधकं धधवायाअ सहदवनअग्निदवताया उतिसिचकाउलाहानसितकाउ
रुजायागधनअग्निसंकुष्टरुयाअअनअग्निहाउ आदिनंसितिदाउअनं दगगधधरुयाअनीलनागानअग्निया कगन
नागतअकाअअग्निनआहविलं लानीलनागायुधिष्ठिनयानाकसययरुयाय तसहदवनदिग्निरुययादंअलधननसहदव
यागकनविअधकं धयाअनीलनागाननानातलधनादिसमस्तसहदवयागवियाअकातंधनंतिदकिगदिगअकाअग्निपू

॥ श्रीसहा ॥

॥ १२ ॥

नदभयाईपूतनाकाऊयलपाअशवदकदभयानाकाओवनभनऊयलपाअआतिकयाकोशिकनाकापापुनाकाशऊकटदभ
यानाकाऊकईरयापिताहिअनाकाथसकसंनानेसहदवमातमानययादाअपीगियादाअनलधनआदिनंवियाअका
थनंलिसूर्यकिंकननाकानीलनाकादधुदभयानाकाऊऊयलपाअसमूद्रद्विपयाम्नाकाऊनकनिषादनाकाकलुप्रावनय
भयानाकाकाल्मखदभयानाकाकसयाविऊनकातशअसंयनीनगनयापिऊकदभयानाकाकलहातकदभयानाका
पांअदभयानाकादाविनदभयानाकाउठवर्षुकदभयानाकालिंगपाठनदभयानाकाऊलुपाठनदभयानाकाऊनभिद
भयानाकासातामनदभयानाकाथनदभयानाकायाकइतऊयाअथअवभयाकाअनानलधनआदिनकायाअनाम

॥ पर्व ॥

॥ १२ ॥

चनसुतुवंधयादतयालनलेकाअनमक्रियाअइतऊयाअकक्रयाशुधिविनयाहावानप्रीतिराषानकदाअकूयायविहि
षनयाकपतिऊयाअविस्ऊयाथपतिलयाअविहिषनअनकनलसुवर्षुसलकिसिचदनअगनहिंतिंलामाकागहि
असगहनदवयातयाग्व२मालिकआदिनकाकाअनाहिताचलपर्वतसुविहिषनअयाअसहदवयातथसमस्तवमुवियाअ
विचालयाकाअथिथिंमालकप्रीतिराषानखलाकाअलिहाअदशनासहदवनधनवर्षुकायाअधनदकवमुदकंगलम
काअहर्षमानयाकाअथअनाऊऊपुस्तलिहाअयाअयूधिसिन्नाऊअसमस्तधनवमुतयाअनमस्तानयाकाअ
वानयूधिसिन्नाधनवमुसायाअहर्षमानयाकाअसमस्तवकानखदकाअमान्यप्रसादवियाअवासकाया ॥

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १० ॥

॥ श्रीमहाकान्तसहायवर्तिसहस्रद्वयद्विषादिमित्रयत्रुर्विगाथाय ॥ २४ ॥ ॥ वेगं न मय उवाच ॥ राजन मे
जयधनं हिन कलनयुधिष्ठिरया के आह काया उपस्थि मदि गसदि विरय या न उद सनान सहित या द सिंह नाद गद्य
दं सुद्र कनाका मयून नाका मधुक नाका थपनि सउ महायुद्ध या द जयल पा समस्त धना दिका या उ थपनि ना प वा द य द
उमिलिषद ग या मरु म नाका मरु न द ग या नाका अ क न ना का उ महायुद्ध या द उ जयल पा उ थप क ना का या समि
प स वा द ना का १० थ द गार्तु व द ग या ना का जयल पा उ वायु य दि ग उ द उ ग व य द ग या ना का त्रि ग र्द ग या ना का अ
व र द ग या ना का माल द ग या ना का क र्क ग या ना का थ न द ग या ना का जयल पा उ ध ना दिका या उ म य लि का द ग या ना का

॥ पर्व ॥
॥ १० ॥

वाट धान द ग या ना का वा क ना का पू क ना न द ग या ना का ग र द ग या ना का उ र्त्त क ष द ग या ना का सिं धू न दी ति न स वा द
समस्त ना का जयल पा उ ध ना दिका या उ स न म गी न दी या मी न स वा द शुद्र क ना का अ न क के व र्त्त ना का अ न क प र व न स वा द ना
का प नि च द न द ग या ना का म न क द द ग या ना का उ र्त्त न षा मि ष द ग या ना का म ल क द ग या ना का द्वा न पा न द ग या ना का अ
० न द ग या ना का सु न द ग या ना का सा द न द ग या ना का न द ग या ना का थ न ना का जयल पा उ श्री कृष्ण या क इ न क या उ
य स न ना का या क इ न क या उ क क न प मि सा या उ समस्त ना का प नि हा द र २ ना का प नि कि सि न न क ल उ ला य रू यि
उ म रू थ न न यु धि ष्ठि न या न ध न व मु वि या उ क य ध क था या उ समस्त ना का प नि स न ध न न ल आ दि न न क ल या ग वि

श्रीसहा.

११

याअथगनाजापनिधयावग्यादाअहनमददगयानाशमादसात्वयागपीतिपूर्वकनपतिवायाअवित्यंक्रयाधपनिध
याअमादसात्वयाशाननानावकुवियाअधवकुकायाअअगगुर्जनदगयानाशधयावग्यादाअहनसक्रानिहनाश
कमानकाकनकायाअअनकनलादिकायाअसमूदगीनससमसुसुक्रनाशकयलपाअवर्हवदगयानाशधर्वनद
गयानाशकिनागनाजायाकयूदनरूदाअअनकनलादिकायाअकनरुहसि३०००धकिसिअगुल्यलुकिसियाप्रमा
ननग्यदमन३२मालिकमलिकआदिनदगकनरुप्रमा१००कनरुधायकिसि३३नलमन३२धगधनंआदाअ
धनकल्लुपयल्लिहाअयाअधधनादिसमसु।युधिष्ठिनलअक्रादाअवमस्तानयादाअधानधनयुधिष्ठिननन

॥पर्व॥
॥११॥

अनलादिसमसुहअसायाअहर्षमानयादाअवर्हदिखसमसुददाअनकलयागमान्यप्रसादवियाअवासुक्र॥धगुलिपु
काननवनूनयाकपर्यनकनकायाअचउर्दिगयानाशपनिधुधिष्ठिनयातलसगयाअअककननासयादाअअनन्दनवा
नं॥धधवाहयुधिष्ठिनचक्रवर्हनाशरुतं॥॥इतिश्रीमहाशाननसरापूर्वगिनकलपम्भिमदिगिजयपंचविंश
य॥२॥॥वगम्यायलावाच॥शाननमजययुधिष्ठिनगवुक्रकजीयवेग्यगुदादिप्रतिपालयादाअधअसआचा
लधर्मलाकनयाकसमसुसायावकुल्ययादाअन्यायनितिमर्जगर्थयादाअसमसुलाकसुखिअनपानअनकअन
सस्यसंयुमिथ्यावचनखेकाकमइसमसुलाकयाअकालमृत्पुनागपीअमइहनंकसमिदनमइयधिसवाहवमुंथ

॥ श्रीसह ॥
॥ १२ ॥

असाहसिन कायं मरु अकल दमिशले अनकधर्म सत्यन वृद्धिमानरुले पश्चि सदकला कयांगत किदन कृतमुने भावक मजि
अधन अन्न पान समस्त वृद्धिरुले यधिविचन नायस्य यरु याग लाक समस्त सने अलंश महानाक यधिविचन कलपालस
आहार्थ यरु याय बलशना थगुलियरु यादं विद्याकन धर्क धने लिदानिकान श्रीरुक्मस्य अनकमलि कनकनल डय अ
दिने हया अ अनकला कन सहित यादा अ अनक गल कि सिन थ स अनक धन नला दिह या अ विलं धनल याग जनसूर्य या
सिने न कवक रुले थर्थि गु यधिविचन या खात सा या अ अननदन विद्यान ॥ यधिविचन वाच ॥ श्रीरुक्म कलपाल या पाद
काया प्रसादन थ पश्चि समस्त नाय याय धन अनक धना दि दन थ धन न यरु यादा अ अकल पनिरु दकि विविय याग थ

॥ पर्व ॥
॥ १२ ॥

धनादिसमस्त काय विद्याकन किपनिका करु किं कलपाल या वल थ काकि पनिस था कन कलपाल थ गन यरु यादं विद्या
कन कलपाल सन यरु यादान किपनिस या प समस्त भा वाक अ कलपाल सन यरु यादं म विद्यान सा किन आह विस्म विद्या
कन धकं विनतिया दा अ रुक्मस्य थ ख द दा अ आह विलं ॥ श्रीरुक्म वाच ॥ श्रीधर्म नाक यधिविचन धकं कन नायस्य यरु
याकन च कवली पुत्र वश अ क थ यरु याय या ग्व र अ कन मन स ग थ चीन अ थ या अ धकं रुक्मन आह दन ॥ यधिवि
न उवाच ॥ शद वा धिद व श्रीरुक्म कि मन स आ अ यरु सिद्ध रुना कलपाल या प्रसादन कि अनन्द कला धकं अलं ॥ वेग या
य गा वाच ॥ रुन न रुय श्रीरुक्म न थ थ आह वि या अ यधिविचन या महा हर्ष मान या दा अ थ नायस्य यरु याय याग समस्त

सूत्राः ॥
॥ १३ ॥

सामाश्रीतयात्रयादासमस्तं दयं वाक्कषपनिकुवियाउलनदकनकुनिथउतदयिउधकं हासहदवयहूयाययातमालक
वाक्कषपनिकुवियमालकसमस्तं वातकायभूलपयकगयमालधकं हागं धनं लि स्रहदवनधउसानथि ॥ १३ ॥ स्रहदवनधउसानथि
सानथिस्रसन अरुनयासानथिपूत्रधपनिमूनकाउधालं हासानथिपनिथसमस्तं नाशपनिकुयाग्वरवकुविययातविक
नायाउधकं धालं धनं लि नकलहागं हागं कलगं ॥ १३ ॥ न अथयाउधकं वाक्कषपनिकुहापकयागअनादिपकानवकुगं
धचन्दनादिविकायाउधकं हागं धनं लि यहूयाययागवकुसमस्तं संपर्कुरुयाउधालं हाबास ॥ १३ ॥ धोम्यवाक्कषादिवाकून
धकं धयाउवाक्कषादिनिमकुनयादाउधधयससमस्तवाक्कषपनिउउवाक्कषास ॥ १३ ॥ धोम्यआदिनंवाक्कषपनिनियक

॥ पर्व ॥
॥ १३ ॥

समस्तअग्निगऊनसहितयादंउउसदस्यमाहव ॥ १३ ॥ हासकलावसपूउयेनत्रहासकर्ला ॥ १३ ॥ धोम्यआचार्यधसकलसंमिषास
हवावधिक्षालधनस ॥ १३ ॥ हागायाद ॥ १३ ॥ वाक्कषपनिकुलकगवधरनं कालगयाउसवर्कुमातानसाउभमाकिकि
नकाकारुमिससमस्तपृथिविसंआहाविलंयुधिष्ठिननाशयायहूकर्मसउयमालधकं हनं ॥ १३ ॥ खिस्रखिनमस्तं धधयस
उयमालधकं सफधनपर्यंकं ॥ १३ ॥ याउनाहालकयाउअनकलोकपनिउउयहूसानाआदिनंदयकाउयुधिष्ठिनयाअ
हादेकाउवाक्कषपनिनिमकुनयाचकलंवाक्कषपनिं ॥ १३ ॥ याहनेपृथिव्यानाशपनिं निमकुनयाचकलं ॥ १३ ॥ यावाक्कषपनि
सनयुधिष्ठिनयागदीकामकुवियाउयहूममुपसउदाउकालहाकगुतिनमियाउयुधिष्ठिननाशनसमस्तवाक्कन

॥ श्रीसूरा ॥

॥ ११ ॥

नं अनकहिं नित मलिधन आदिनं का का अउने सुवन भक नि निमरु कि ऊ अलं अवन ना का वृष क ना का कर्तु गत्य वा की क
पूत सामदरु रुनी ना का रुनी प्रवाना का अश्वरु मा रु पा वा र्य डी वा वा र्य जय दथ जय सन सात्वे र गदरु ध प नि स क खे अ
लं सा ग न प र्य त या म् रु ना का समस्त अलं पर्वत या ना का प निं समस्त अलं रु ना सं ख या पूत सह द व ना का क नि या रु द ग या ना
का वा म् रु ना का अ प न वा द्धि क द ग या ना का वि ना ट ना का पूत न स हि त य धि वि स द का ना का प निं समस्त अलं रु नं सु द क ना का
वा सु द अ ना का वं ग द ग या ना का क लिं ग द ग या ना का आ क र्ष ना का क रु न द ग या ना का अ र्ध क द ग या ना का इ वि द द ग
या ना का सिं ह न द ग या ना का का म्भी न द ग या ना का समस्त य धि स द क ना का ना रु क्म ना न स हि त न मि शु पा ल ना का पूत न स

॥ पर्व ॥
॥ ११ ॥

हि त या का अ अलं रु नं व ल रु द्र प्र य म् अ नि न रु व न् रु सां व अ न क ना का क्म ना न प नि स हि त न य धि वि न ना का या ना रु स र्य य रु
सु रु द्र प्र रु स र्थ न क ल अलं समस्त ना का प निं सु डु गि ला रु म सि च का अ वा स रु क्म नं के ला स प र्व त र्थ वा द रु स ना ना न ल म नि
क न आ र्द त या रु स अ न क अ न्न पा न रु क शा म् व र न म आ रु न आ दि नं अ स त ना सा का ग रा वा ग लि व रु ला न सु व रु या ना
ना व रु जा त क थ प निं त या अ रु कि प र्व क ग प्री ति या का अ समस्त ना का प्र रु वा रु न थ क प निं आ द ल या का अ वा स वि या
अ त लं समस्त वा म् रु प निं ना का प नि स नं य रु म लु प स सा ल अ नं ॥ ॥ ति श्री महा रा न ग सु रा प र्व ति ना म् रु स र्य ना का
ला क ग म न ना म रु फ विं (ग) य ॥ २० ॥ ॥ वे र्ग म्मा य ला वा च ॥ रा रु न म रु य थ नं लि रा म् आ दि नं को ल व प नि स रु ति

॥ श्रीराम ॥

॥ ७७ ॥

लाहाननासिचकाशनमकात्रयाकाअवातसायाअयुधिष्ठिननआह्लादयकल ॥ युधिष्ठिनावाच ॥ शरीरपिनामहृ
ननाहृडाभाचार्यदयाधनजिनयायजिअमखमखनसांजिनहालयधूनधकार्यसकिसकलस्यनविकायायमातधयह
किसकलसधुकाधधनादिहिसकलसधुकाधकंसमसं प्रीतिवचनयुधिष्ठिननकोलपाअआदनयाकाअकंसकलसने
कार्यसविकायाऊनधकआनन्दनकोलपाअयहमधुपअकाअशीककअसमधानयाकाअसमसं कार्यसतयाहकरोक
सवकुसदृसासनतयावाक्यपूजायायसअश्वत्थामागयानाशपनिसमसं जिअमजिअस्यसउरुममधमअधमपूजा
यायससंजयवाक्यगयाडाभाचार्यशरीरपिनामहृधनिहंसमसं कार्यसकाअमजीअसाचकाअनयालेनत्तमगिअह

॥ पर्व ॥

॥ ७७ ॥

आदिनंदकिंविद्यसकपाचार्यनयाधनयाधनयाधनयाधनकायवियसकर्तुनयावाक्रीकसासदहृजयड
थधननाहृधपक्षचरुयाधनयाकाअनयावयहकायालाखननकायाविद्वनयासआकधनवकुहकाकयायस
इजधननयाआयराअनइहाअकलाखयायसकपकनयाधगुलिप्रकाशनसमसं पतिंथायसतयाअसमसंलाकंद
धमानवासंवाकसकलंसंताघरअसमसंप्रीतिरुअसमसनाशपनिप्रहतिनअनेकनत्तआदिनीहयाअकअनयया
अविमानअउल्यकिसवासवियाअवाक्यपनिसुदवयागयागधकसवासवियाअनलेयुधिष्ठिनमहानाशानशीककय
पाइकायाप्रसादनमहानअअनशयाअवानंगधधलसाचडमावाकथंसमसनाशपनिनगतिवाकथंयहसअगिरुल

॥ श्रीसूरा ॥

॥ ११ ॥

सांदकि आवर्तनमिच्छाया अथमिच्छाखदा असमस्तलोकं सकुश्रया अवाक्यपनिनाकापनियथ २००० शरुनया च काउ
लूया आला अहाया आलासगया अशरुनया च काद्रि क्रि क्रि क्रि या क्रु न आलास उमला क थथि गुथा लास शरुनया च काहन आ
कृतिन समस्त द वग स उरुशले वाक्यपनि समस्त र का शरुन द कि न न सं उरुशले समस्त नाकापनि लोक पनि र क शरुन
सं उरुशया अवा द श ना ॥ ॥ अतिशय महाशानन सहायवर्तिना सस्य यरु अरु विं ॥ ॥ ११ ॥ ॥ वेगं न्याय ॥ ॥
वाच ॥ शरुन मरु य समस्त वाक्य अरु वदी वादा अना न द प्रह मिन म धिला क ह म र्त अया अ वाक्य पूनी थं शले अ न क वाक्य
अपनि थि थि वाद विवाद खरुले थि थि न्याग गुलि किने कि अ ध क धाल गुलि किने म कि अ ध क चार् अ न क कल ह ख गु ख गु

॥ पर्व ॥

॥ ११ ॥

वादा अवाका दिख झार् म म म म ख झार् न अत अ प दि न प नि स न थि थि नि न्या या तं ग्व लि किने वाद विवाद ख गु लि किने धर्म
या क था झार् गु लि किने व द प न पा अ चार् न थ यरु स अ न व दी र मि स गू द मा ति अ न म द ना न द न यू धि थि न मा स ला स न ला
दि सा या अ ला ल प ले ह नि चं ड ना का या यरु या सिने अरु व कं ह नि चं ड ना का या ना स स्य यरु स ना का प नि अ न क म अ अ द
अ थ यरु स य थि थि यां ना का प नि अ अ स नू म उ म द थ यरु स वि द्यु रू यी अ नि थ य ध कं वि क ल पा अ धा या क्रु अ या क था
ख उ म लो क स झार् क ल म दा अ ना न द न वि क न प ले क क अ व ता ल स द स्य मि द न न रू यी अ थ व ल स रू क न नि गु पा ल मा
च की अ ध कं धा न या दा अ ना न द म धि स न सा या अ वा दा द व दे ल अ व ता न खं ल म दा अ क्र पा हा का थं रू यी अ रु ना थ

॥ श्रीसहा ॥

॥ १८ ॥

कं ऊय अवतल गिगुपाल मूर्कियुनाधकं थनि मूर्कियु अशुलधकं थनि दवला कसमसं ननानं अवतल काल अनमा
लधकं हाडा अदवला कनधा लं हावक्राना नदकि पनिस मूर्कियुग (थन धाया अं दवन धाल धिथि संग्र मया स्यादा अ
मृत्पूरुया अं मूर्कियु अं धकं हाडा अदवला कसमसं जायल पा अं निश्चय रुला ॥ आदि दवला कने स अल पंत यावक्र
नूड कवन वनून गगि सुका टि दवन स वाया दगया पन वुक्रना नाय गगल संसा नया ॥ १९ ॥ नगदि श्वन थथि दक पन
मश्वन श्री कृष्ण अवतान काया अं य धिष्ठिन या क स वाया दा अनमत्ताना दिया दा अं वादा अं वाद सा या अं अतिकर
धरुलं कान धाल सा पन मश्वन या सूरु काल के क अं प्रीय धकं आदि ना नाय गगल संसा नया थक न थमनं ॥ २० ॥

॥ पर्व ॥

॥ १८ ॥

दा अं थमनं संहा नया यू अं धकं ना नदया महा विना रुलं थनि गिगुपाल न विना धया त सा म्वा यम दत्त विना धमया त सा
म्वा यदनि धकं ना ना मा थन विन ल पा अं वा नं थनं लि यू धि स्थि न न रुल सां कृ पां स्या त नि दस्य ति त य धकं चि क ल पा
अं वा नं थ (थ वा द स्या अं रि धन धालं हा यू धि स्थि न य रु सं स र्गु रु यि न कृ पां द स्य ति त य कृ ना जा स्या अं ति अं स
दां स्त्रान या क प्री ति वचन पति त जन थथि कृ ना जा या त दस्य ति ति अं कि म मृ ता मा थन कृ ना या दा अं व लि स (गु मृ
कृ या त कृ पां द स्य ति ति अं धकं धालं ॥ ॥ यू धि स्थि न उ वा च ॥ हा पि ता महा री क्ष स म्भु सं (गु मृ स कि न म सि या कि न
कनं माल धकं ॥ ॥ वे द म्वा य (ग वा च ॥ हा रु न म रु य थन री धन ज न क प्र का न न चि क न पा अं स म स जा ति या

प्रास्ता
१२

सिने उरु म (ग्रह) श्री कृष्ण ख अ ध कं ही भान रान पा अ भालं ॥ **ही भान उवाच** ॥ हा य धिष्ठि न समस्त ना जा या सिने समस्त
प्र कानर्ग कृष्ण थू का (ग्रह) श्री कृष्ण या न ऊ प ना क ह्यां न म इ ध न नि मि हि न थ द स्य मि कृष्ण या न नि कृ पा मि अ ध कं
ध या अ य धिष्ठि न न स रु द व तं वा दा अ धालं थ द स्य मि कृ पां श्री कृष्ण या न नि मि अ ध कं ध या अ स रु द व न आ हा थ द स्य
मि कृ य न दा थ हा या अ मि शु पा न या म हा को ध उ त्थ मि या दा अ ध या हा ही भान्ति मूर्ख हा य धिष्ठि न क मूर्ख ध कं हा दा थ
मि शु पा न न कृष्ण या न ना ना मा थ न नि द्या या दा अ हा नं ॥ **मि श्री महा रान ग स हा य व नि ना क स य द स्य मि रु न न ना**
म न अ विं (आ) ध्या य ॥ २२ ॥ **मि शु पा न उवाच** ॥ हा य धिष्ठि न मा हा त्मा म हा ना जा द य कं न या अ नी च कृष्ण या न नि ना

पर्व ॥
१२ ॥

कृ पां द स्य मि त य या न मे व ना जा भ अ धि धि ध कं पू जा या यी अ थ ला व व हा न पा पि रु कृष्ण कृ पां ग थ पू जा या य न दा य धि धि
न या कृ दा ध न कृ प नि वा ल क ना जा या म र्जी न म सि अ नि हान म द अ नि व न वा सि या कं रु अ गं ग पू ऽ ही भान्ति ० ध र्म स म वा
रु थ अ ध र्मी या उ प द ग न पू जा या न कृ ध र्म ना जा ध कं स म स्त स्य न धा स्यं ग या र्थ थ नि कृ अ ध र्मी ना जा र ना कान धाल सा अ
पू ष्ण जा ति वं श पू जा या न स क ल स नं ही भान्ति ध र्म ध कं कि र्ति ख ज्ञा च कं ग अ आ उ नि स म स्त स्य नं ही भान्ति द्या या पि अ र्ज
द व वं ग पू जा या न कृ कृ रु लं जा मि हि न च ल अ तु ल पू जा या य जो ग्ध म ष्ठ न च ल अ उ मि रु लं कृ कृ नं थ अ ग अ र्ज ग्ध
पू जा ग थ काल क न ग थ पू जा का या ल धा म दू ला धा थ रु ल सा पू जा या य व व हा न धा थ म रु अ कृ ग धा थ पू जा या य रु ल

॥ श्रीसूक्त ॥

॥ १० ॥

सावस्यदवपूजायायमनउला कृपनिमथअधिथि कृकपूजायाय कलसाधयासिनं थअधिथिपीयडापनिवापीना कृपनि
सममलद्रुपदनाजापूजायायमनउला गुनधक पूजायाय कलसा डीधवाय्यपूजायायमनउला अष्टककृकगथपू
जायातमएशुयमूवातकृकलसा आसमविश्वनपूजायायमनउला हनं ० कथमययावलसमत्युयकृककलसा
लीषापूजायायमनउला गायानमनयावलसमगुपसंतयमनउला कृपूजायातवीनपंगुनकलसा अश्वकामापूजा
यायमनउला थथिजातहिनमहिंन कृकपूजायातं पूरुषसंतुहम कृकलसा इर्जावनपूजायायमनला आचार्यधकपू
जायायकलसा कृपाचार्यपूजायायमनउला थगनहिनजाति कृकगथपूजायादाहनं स्वर्गसंश्रु किं पूरुषया अष्ट

पर्व ॥
॥ १० ॥

कृकलसां इमनाजापूजायायमनउला थथिग्नानजाति कृकपूजायात नरुखीपूजायायकलसा लीषकनाजापूजायमनउ
ला थथि हिनजातिग्नानकृकपूजायातहनं चतुर्भुजधक पूजायायकलसा पूंङकवाहदवगथपूजामयादा थथिअधमी
कृकपूजायातहनं कानिकसंश्रुपूजायायकलसा प्रकलंवनाजागथपूजामयादा वागुनअतुल्य कृकगथपूजायादा
अनकलाकनसहितकृपूजायायकलसा उला कसंदक कृपकयाकाउलायकलमहावलिपृपशुनामयागिष्यकर्तुपूजाया
यमनउला थथिनपुंसकअतुल्यकनासंधयारुयनग्नाकाउलासमृद्धसवित्यउकाउचादकृकगथपूजायादाप्रकं थध
र्मिमरुअनाजांमरुअनाजाकलसां उग्रस्यनथका थकलं उग्रस्यनयावलवलअनमरुअकृकगथपूजायादावलअक

॥ श्रीसूरा ॥

॥ ११ ॥

धकंपूजायायशुलसावलरुदपूजायायमनउला कृनिमिर्हिनम्भालिनिगातधलिबूयाउनयाउवाढककायपूजाया
दाहायुधिष्ठिनकपनिस्यंरुक्रुपूजायायरात्रपमममवनाकापूजायायमकिलंथथउयायशुलसाजियनिकयवान
कलहयाथथयायुगुसिलसाजियनिकयययकपनिगजसीशुलधकजपनिअयलाकपनिसत्यनम्भदाउअयाला
हनधनसहाहयानिमिर्हिनअयालाधीतियाहाउइधकअयालाकानभालसाकपनिसननाअस्ययरूयायअअनथ
काजियनिसनकनवियाअहयाजियनितअधिथिशअनकपनिथकायधकअयाकवक्रवहिनारुयदवियधककनू
गावायाअधनवियाअहयाआअकनजियनिरूपमानयादाथर्थिकपाप्रम्भनयागनिकनपूजायादाहाकिस्कल

॥ पर्व ॥

॥ ११ ॥

नाकालाकस्वरुनआश्वर्यखसाकनयुधिष्ठिनकानरुनाअलरुगकंपूजायागलकगममपूलापूजायायधर्मासाधकंपुधि
संस्वर्गसंसायलददयुधिष्ठिनकोधिदकपूर्वजर्नयापूथनलानआअथर्थिअयागधकंपूजायाकसदअसुनंमइधगनअध
मासायुधिष्ठिनधकंआअयुधिष्ठिननजातिहिनक्रयागदस्यतिवियायाहउकाननकिनसियधूनयुधिष्ठिनमूर्खमपूद्रा
पांऊनासंधमाचुकवनसकक्रनजियनिसकलअपूधधकंकिनयरूयागदाअजिथकायमातजिनिकपांदस्यतिवि
यमातधकंअयाअयुधिष्ठिनमूर्खमपूगथवालसाधगवचनवियाअतयाइनथकाधगनिमिर्हिनथूकाऊपांरुक्रनि
रुक्रनिपूजायागलाकालाककक्रकलसऊमशयाअगक्रलसवादाअमाहसमानकीपनिसमसंकुआयादाअवाढ

॥ श्रीसूक्त ॥

॥ १२ ॥

कंरायात्मा रुद्रधर्मकं जनासंघमहात्मा पुन्यधर्मज्जात्मा या कं रुद्रया ज्जात्मा कर्म वा कर्म या नृपधर्मलया अतीर्थवा सिर्ध्वं द
नका अंता अंता जनासंघमहात्मा पुन्यधर्मज्जात्मा या कं रुद्रया ज्जात्मा कर्म वा कर्म या नृपधर्मलया अतीर्थवा सिर्ध्वं दनका अं
ता अंता जनासंघमहात्मा दाधर्मि पापि रुद्रया कपनिसमर्क पापि रुद्रया यथा न पापि रुद्रया पूजाया यशस्तपूजाया अंता
रुद्रया गुणया हयदया अंता लदासं कननका या यरुता रुद्रया कलपधक अंता ला रुद्रया नयामदपा गुणया नयाम
दू अया प्रया या यपा गुदनी च धनमदू रुद्रनी च धननी च ननी च पूजाया दाया रुद्रका या अंता व हा नृधका थ पूजा
कननया गधमरुता ददा दया मया गधपूजा नी च जातिन ता अंता रुद्रका या अंता रुद्रया रुद्रलला गध धालता गुण थयसुग सं

॥ पर्व ॥

॥ १२ ॥

नया कीनजा विमाननया अंता रुद्रका अंता रुद्रया रुद्रधर्मनन रुद्रया दा अंता कपनिसदृश रुद्र
नी समर्कना कपनिसदृश रुद्रनी गध धालता रुद्रया अंता मयपानथ ना अनकपकाननं शुद्धि मादानं शुद्धिमरुता थं पवित्र
या यमकि अंता गध मयपानथ ला पवित्रया यमकिल अर्थं रुद्रपवित्रया यमकि अंता रुद्रया रुद्रनी कपनिसा या नपुंसक रुद्र
नृषविया थं कानकया न रुद्रकनकं दा थं रुद्रधर्मं रुद्रधर्मि गुनिसान रुद्रया अंता रुद्रधर्मि नन रुद्रया न धर्मन रुद्रधर्मि नया रु
द्रया व रुद्रया ययुता नयामदू समरुता कनं कालसंगल रुद्रा रुद्रया अंता रुद्रधर्मि रुद्रका किनसा यधुना धर्मं थ धिपापि
या यरुता रुद्रका कपधर्मकं महात्मा धया दा अंता मिगुपाल अंता पददा अंता अनकना कपनिसनलि चका अंता रुद्रनी ॥

॥ श्रीसूक्त ॥

॥ १३ ॥

॥ इति श्रीमहाभारतसंहितायां पर्वणि नारायणस्य अर्थाह्नयः शिशुपालकृतं नाम त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ३० ॥ ॥ वेणुवायः ॥ वाच ॥
॥ ॥ शक्रनमस्कृत्य शिशुपालनामाथ तथैव उवाच ॥ यद्विष्टिनोऽपददातुं न कर्मात्मन वचनं ध्यायति वादोऽहं ॥
॥ यद्विष्टिनोऽवाच ॥ शिशुपालश्चिन्ति प्रेतकहं याम्वा ममूला किं धिदग्धा निष्कलं गच्छेत्तथा सुदा कनक्तिं वेनी
यायनदाता वेनीक ममू धनं कितनं कृष्णाय तनं निन्दाया यश क मगं शीघ्रया तनं निन्दाया यशाय अर्धमर्शयि उ
ममूला किं यासि न ध्यायं ध्यायं ननं थ (थ) निन्दा मया क हनां समस्त लोक पति सनं मान्यया दाता तं शक्रन पति सन थ थ
निन्दा मया क कना दं मया उ किं न शक्रिय हं विष्णुया यत दाता थ (थ) विष्णुया यमगं शीघ्रान गत्व सका किं न मसि

॥ पर्व ॥
॥ १३ ॥

उ कृष्ण पनं वृक्षना नायनमूर्ति किं न मसि उधकं नाना प्रकाशं वाधया दाता थ साया उ सा कनू यापू वृक्षान काधया दा
ता कालं ॥ ॥ शीघ्र उवाच ॥ शीघ्र विष्टिनोऽम शिशुपाल नीच पापि रथ का थ थि दग्ध कन वाधया दाता वरुना खं का या उ
आनन्दया दाता वादा उ ह यमा रता निष्का या उ वग पाच क द्रिय धाय रुतं वेनी समस्तं जयल पा उ म्वाच कं जा दाता हया
उ थ शत न स तय रू रू समस्त प्रकाशं नं (ग) रू व निरु रू लं श्री कृष्ण न मज्जय ल पा ना मा सुदो श्री कृष्ण या न दस्य नि ममू स्यं
सूयात तय थ पापि र शिशुपाल कृष्णं प्रजाम या कन कृष्ण कृशयु उ प्रेता कनं प्रजाया दाता न मा कृ उ मा न उ रू दा
दि द वग नं प्रजाया दाता तया क हनं नाना दि द व म विग न पाइ का सु प्रजाया दाता तया क थ थि क श्री कृष्ण न थ कृष्ण

॥ श्रीसूरा ॥

॥ १४ ॥

नधककनसगकिपालधालेकप्रियरुयलपंतअसाअहायुधिविचित्रकनविहासवृद्धिआअरुतंगिगुपालकननानाप्रका
नगछायवाधयाकाकनहागछधयाधनाजानेकगंमयाअकरीयपनिसमकंतमाअकनगथधयाधकंकनगिगुपा
लहाधधरवंअयागधकनधालंसमरुयासिनंछाथरुतंगीककसमसंपूनागसंजिनददाककयामहिमाखसमरु
वाकनयाकदकासुहिकितिसंहानयाकर्लककयाधसंरामूर्खगिगुपालग्रीनानायदनयापात्माकंसासुनवध
यायनरुमकालजलककजुवमानधकंअनकजिनददाहायुधिविचित्रसमरुप्रकाननंअरुगुवनधननंज्ञाननंवल
अकनंसमरुनंककअरुधननककपूजायाअधनागसमरुजिनरुयलपमरुयालसमरुयासिनंछाथककधकं

पर्व ॥
॥ १४ ॥

॥ ॥ हानवृद्धादिजातिनां क्रियायावलाधिक ॥ वैश्यानां धन्यधनवान्पूजाभिमवज्जन्तः ॥ ब्रह्मण्यनिसमरुयां
हानअदिकदूकयांअथधायकरीयपनिसमरुयांवलअदिकदूकयाथधायवैश्यापनिसमरुयांधनधन्यअदिकदू
कयाथधायपूजपनिसरुमकायकथनअथधायकरीयावलअरुधनपूजायायमासधननककयानिगानंछाथसाक
नंछाथवललाकनंछाथधनिगानंपूजायाअधिवीसककवाहिकनअरुसुनंसदसमरुप्रकाननंअरुवृद्धिहान
वललछाधललयकुमिविनयलाखानहादधनधन्यनकायाकसजिकसमरुनंगकसमरुदवंककधनननना
नंपूजायाअधयाहामयाकहामयाकर्लअयागतअथिधिविगुनसमरुग्रीककगमिगुपालवानकसुहिकिति

॥ श्रीसहा ॥

॥ १३ ॥

संस्तुतं कर्तुं ध्वस्तं कर्तुं मूर्तिं कर्तुं लंघनं कर्तुं वायु-आकाश-पृथ्वी-वज्र-सूर्य-नक्षत्र-हर्ष-नादा-स्य-शय-सर्वा-दा-स्य-शय-मस-
की-समस्तं कर्तुं या-गनी-लस-रा-य-विधि-न-गि-गु-पाल-वाल-क-कन-क-सि-य-ग-ध-धि-क-क-न-नि-दा-या-ग-क-मूर्त्ति-न-क-सि-य-ग-क-क-
या-गु-ध-व-र्तु-ना-या-य-रु-अ-द-ग-ला-ध-य-ध-स-द-क-रि-गु-लि-दि-य-रु-अ-क-क-या-व-र्तु-ना-का-य-म-रु-श-मूर्त्ति-गि-गु-पाल-क-न-रु-का-
म-सि-अ-ध-स-रा-स-द-का-या-क-क-ग-नी-ल-या-द-अ-न-द-अ-धि-धि-क-क-क-ग-थ-पू-जा-म-या-य-रा-गि-गु-पाल-क-न-ध-य-रु-
नि-रु-त-ध-क-का-या-पा-प-पू-जा-ध-क-ध-या-ध-ग-न-क-पा-पि-स-द-गु-या-य-त-ल-ध-क-का-या-अ-ली-ष-का-ध-या-का-अ-वा-द-॥ ॥ श्रीगणेशाय ॥
महा-रा-ज-स-रा-व-र्त्ति-नि-र्वा-ह-न-रा-क-र्त्ति-ग-म-ध-या-॥ ३९ ॥ ॥ व-ग-म-या-य-ग-उ-वा-व-॥ रा-ज-न-म-ज-य-री-ष-का-ध-न-वा-द-स-

॥ पर्व ॥
॥ १३ ॥

या-अ-स-ह-द-व-अ-म-द-का-अ-ला-हा-त-थ-का-या-अ-ध-ल-रा-ना-क-ल-क-जि-न-क-क-पू-जा-या-का-अ-व-ल-न-प-ना-क-म-न-सं-वा-वा-य-म-जि-
अ-क-क-का-या-ध-धि-क-शी-क-क-पू-जा-या-का-सु-ना-न-स-ह-न-प-म-रु-त-अ-क-पि-हा-रु-नि-ध-क-या-म-ल-स-जि-न-द-अ-पा-उ-ति-न-म-ल-स-
प-न-क-त-य-आ-अ-सु-ना-न-का-य-ग-का-का-अ-प-लि-त-आ-वा-र्य-प्रो-य-थ-अ-ध-ध-क-क-ध-ग-न-क-क-पू-जा-या-य-रु-त-ध-ग-न-क-क-पू-
जा-या-ल-सु-ना-न-ध-पू-जा-या-ल-स-ह-ल-प-वा-न-अ-क-या-क-न-म-का-न-ह-म-पू-जा-या-ल-सु-ना-न-स-ह-ल-प-म-रु-त-अ-क-या-म-ल-स-ध-
पा-लि-त-ला-अ-त-य-ध-क-का-या-अ-स-ह-द-व-न-थ-थ-य-न-का-सं-आ-का-म-न-स्वा-न-वा-ग-म-न-ना-ना-मा-ध-न-स्वा-न-अ-ग-का-अ-का-म-ल-व-व-
न-न-ध-न-ध-न-स-ह-द-व-ध-क-का-ल-ना-न-द-न-क-क-का-ध-न-वा-द-सा-या-अ-वि-क-ल-पा-अ-सु-नी-ध-आ-दि-न-वा-का-अ-गी-त-वा-य-ध-अ-ध-क-

॥ श्रीसहा ॥
॥ १०१ ॥

हादाअथचकंयुधिष्ठिरसाकिलेखनस्तानयाचकाअकृष्णनयुधिष्ठिरनीकासालाअथसायाअसमस्तनाअक्रोधयादाअक्र
लंकिजिसलाहाननिकामसालकायकंनमवायाअअपददाअहाहाकनगदकलोलगदमहाउस्यानसदयादाअधालं
समस्तनाअनयूदयादाअमाचकाअइशोधनचक्रवर्तिनाआयायधालंभवत्सयुधिष्ठिरनगकृष्णयूजायायधूनकाअ
निष्क्रान्तनसवाहसायाअगिगुपालयागलसुनिधनाअनधालंराजाअनगिगुपालकिंसनापतिकिंयवक्त्रिवंग
पागुअवंगमाचकाअइशोधनचक्रवर्तिनाआयायधकंधालंथनगिगुपालनधालंरासुनिधदिपदविनासयायसाअ
धकंधालंथसायाअहीमस्तनक्रोधयादाअवाहसायाअयुधिष्ठिरनवाधयादाअनलंहीअक्रोधयादाअवानंयुधिष्ठि

॥ पर्व ॥
॥ १०१ ॥

ननकामसवचनयादाअधालंरायितामहहिष्मसमस्तनाअपनिक्रोधयादाअवानधपनिवाधयायगथकिंनसम
नविक्रनगथयकविप्रमश्लप्रथयादंविष्मकन॥ ॥ वेगप्यायनउक्त॥ राजनमक्रयधनखरीअनददा
अधालंराजाअनयुधिष्ठिरकृष्णयममालखिचानसिंहख्यायमरुथकाकृष्णयागदस्यनिवियाअवाहकन
कुर्यसिंहददवाहवत्सखिचाराथाहालथकाधनाआपनिमिंहददाअअयाअखिचामाचकाधधना
आपनिकृष्णमाचकिअगिगुपालमहाधूर्तगथधालसाथमसिंहदाअनाआपनिथमअनापंसिंहकयागखि
वाहादाधकृदाअवागकलथकाथनिकृष्णमाचकिअधगिगुपालकृष्णक्रोधननानमअसंवादाअगिगु

॥ श्रीसूरा ॥

॥ ११ ॥

पातयागुरुकनइकायुअध्यामएकालयावृद्धिरुलवृद्धिनासुलथनिमायिअधकं ॥ वेगम्यायनउवाच ॥
राजमजयहीकानकादामिन्दावचनदकाअगिगुपालमहाकाधयादाअकलं ॥ ॥ ॥ निगुपालउवाच ॥ लीकानकनाकापनिस्विचाअडु
लिअर्धाहनएगिगुपालवधवापिमाध्याय॥ ३२ ॥ ॥ निगुपालउवाच ॥ लीकानकनाकापनिस्विचाअडु
लयादाअकनयाललकामइकाथरुयाअलकामइकलसमिअककलयाअधर्मिकनकधर्ममइकाथरुयाअअ
धर्मीपापिइरुनानामसनिद्रकाकाअनिखरुनामसखिआकायाअनामकाकथकाननकानलककाथकाकखं
उरुकनयुतनाकणीवकवधकंगकनकायाअकिनूगलमूअआमाजाननमाचकानमालमयूदेवनयाकाअह

॥ पर्व ॥
॥ ११ ॥

यानधूकामालआमाककयागुधवर्धुयाककनिन्दायायमालथमनिन्दायागकयागककयागवधुवर्धुयागनवालक
ककयागवधुयागलीकामुख्ययुतनामाचकाककोमुकपुन्यनमुकानिमाचकानलकावलमंगलमाचकान
ककोमुकखरुकाजीमइसंकनवयागालउकानककमुकककनकसकनगावर्धनयवगदलयालाहानककाअ
नयाककोमुककिनंकाकयावृद्धयायहएगयाकानककोमुकअनकअनपंचामगआदिननअधकंधायाअ
यकरुगकअनधमअननलकंसासुनमाचकानककोमुकथरुकायकनाकसयागुगनूपराअनकअनादिन
यायावननमाचकलंआअधगवलंथअदगरीअधमीहीकावासआदिनंधर्मकथाखकाकमदकालाधर्मस

॥ श्रीसहा ॥

॥ १८ ॥

कुठकं किन जाय कीरुन असकु अकुप्रहानमद वृत्तासुन माचकाउ संखरुउ बाहु एनपनअउ अकं माचक दने थ
अत्तामी कंसासुन माचक सनधगन अउअं माचक धन ककुनया क अधमी थधि ककुनया क वरुनाखजातरी
अकि अरुपुन्रषयायानीचजातियाक साउयार्त वलथं चादक सउकया क कुनकु नियाका अवा नमहिमा
याका अवा नअया गखजा कशी हिमकुन खजायं था ग्वक अयुजगाति कुन था ग्वथ खमजा काया कुनकु उ
समिवायमात्तु लिंमगतन अहं कानजाका अमिन उदा अमाचकं तदा थं कुनकु उरु अमिनदह लयमात्त थ
थयाका अकुन खजायमरुयकं तथ कुन लक्ष्म मरुया अमिलक्ष्म मरुला थन कुन लक्ष्म याक्षम मरु कुन मर्जीग

॥ पर्व ॥

॥ १८ ॥

पागुअया क्षासन सत्पुन्रषया कसिआमया क कपनि ककुया चल कवलन थअ थकनया गहिन क कायमजा पिअ
कुनपापपूषया विवात्तमया क अधर्मलनका अ बाप्रव बाप्रव सत्पुन्रषयू मायसं पापिहयू माया क अधमी क
पां किन सिया अंवा आदिन श्री ३ कं न्या भवया के अतया द वादरी अन्नहया अ विवि उवीर्यना जाया ग विल अंवा क
कालागा अ सिनिरुत कल विवि उवीर्यना जाया माया अ याऊन गंगान कुनत काअथा याअरी अया रुयन काय
मका लाग यासया वीर्यन पूज दयकं ल थला कलया मर्जीग थला कयीया मर्जीग कुनउ प्रचानी धकं काया थरुस
ख कुन कपतन वप्रवय्य याका अला कन मान्य याचक याग वान थू काथ थला मखत सा कुन वंसक निग्रय थने

॥ श्रीसूता ॥

॥ १२ ॥

नासक्तताव्यकथकं ह धर्मनाशकानि धनसुखं लोकमालसं नृनगलथलथलथलमखाकनग्वालपूजाय
काशदहयादानयायहयाअधर्मयाअपूजयानिस्तुलधनयादानंभवयानिस्तुनयाययातकनयातगीर्थयह
दिमाकंनिस्तुलअपूजयाधकंमिशुपालकालं ॥ **विगम्यायउवाच ॥** एतन्नमस्तुतीकयातअनकप्रकान
ननिन्दावाकनहाकदकाअरीमस्यनमहाकाधयाकाअसमस्तनाशंग्वाकरीमयामूर्तिमायाअकप्रसन्नंनान
अयमकालंरीमयाखानस्वयंमकालंवलमिहाअमगर्थकालयाखालथरुयाअथानंथथयानरीमअपदका
अपथिवीकंपमानरुलंथसायाअरीकनकाकाअकुमिववनयाकागतलंथवलससमस्तनाशंकंपमाननग्नक

॥ पर्व ॥

॥ १२ ॥

मिशुपालकप्रमग्नाकलायआधकंधयाअथानंथसयाअरीमकहाअनतकाअरीकनघसपूजाअयकाअतलं ॥
॥ **मिशुपालउवाच ॥** एतरीकआमरीमकप्रकालगाअहिअकिपनिस्वायकिशलंअग्निथंरीमकलंकोलथंजिन
माचकधकंधयाअमिशुपालवानं ॥ **रीकउवाच ॥** एतरीमसनकंसमूर्कवाअधकंधालं ॥ **इति श्रीमहाराज**
तमरापर्वविनायकस्य अष्टाह्नस्य मिशुपालवधचतुर्विंशोऽध्यायः ॥ ३४ ॥ ॥ **रीकउवाच ॥** एतरीमसनधमि
शुपालयाखरुनंदकाधकंधासचदिनाकायावीर्यनपूजगतकलस्ववठमिवायकालाहातयादंजातकलध
मावागदलागहनमायीअधहनागहनलोकसमस्तग्नकववूनंथविदाअग्नाकाअगावकलकायधकंधानका

॥ श्री महा ॥

॥ ८० ॥

वत्सथ (धवादावत्स आकाशवाणिन धालं हावदिनाका कनपू ५ महावनडा कशयूडा तज स्वीरूयूडा तज निरूयूडा धखडात
यवायमग अनिदानयाडा तजालिडा धवायमइ कालंमइ सिंयंमन्वा लकाथरूयं मन्वा लधवान कमाव किडा क
कुरुकद नक्रयाकातडा धकं कदाथ (धवाज दडा) मामववया (ग) कशले धवलस धजिगुया लया मामनलाहात
हातालपाडा तानजाडा नमस्का नयाडा धालं हाव न किंकी लापूर वलाजिन मसिया जि कायस या लाहातिन म
एरूयूडा वक धार्थनायाडा धालं धनवाकास वाणिन धालं आमा कन कायव वनं वसं मूद सतलदास कयालस वा
दमिखो कृत्त मइसंजनी अलाहात नयां काटिन अमिडा धवायालाहात नम एरूयूडा धकं कदाडा गाथल धनंलि

॥ पर्व ॥
॥ ८० ॥

धमावाविवालयगत अयथिविया नाकापनि समसं डा अमहा अरूत वा याडा अरून कनाकापनि अयाडा विवानया
अडा धनाकापनि समसं तुमिलाहात नासि वकाडा थअमा वावूयकं नयाडा कडाडा अरूनमाडा थअमवा सुन्दनरूय
कनिमिलिन समसं स्यनं वस्यनं उ धंवाडा असमसं नागां थअ थअ कृकाया धनंलि गादववंग मशयाडा जिगुया लया
मामगादवीनवलरूया ककृयाकं कायाडा वोनकल कागंथन गादडा वंगसमसं अयाडा तुमिलाहात नासिकाडा व
लरूदरू ककृनं नमस्का नयाडा वदिनाकानं गादवीनं अं कल पाअना नाकथा काडा सुखन वाडा गुलि किनंदिन
आडा अगादवीन थअ कायवाल कजिगुयाल ककृयागविया अमवावूकं गंदाथन ककृन धालं जिन वयमस या

॥ श्रीसहा ॥
॥ ८२ ॥

गनप्रतापिकृतधनिधयाविकृतगलिकायुगसाग्रीककनसहलपंचानडनिधकी ॥ **वेसम्यायनउवाच ॥** राजनम
रुयहीअनरुमकथाखडाकदकाअमिमुपालकोधयादाअकालेरासीवापापिखलापालकक्रयातकनवधुयादाअख
ज्ञातकंरात(ध)भवयागमुनियायसनसगाअरुक्रकनगकुविभूअकनप्रसादकाययलसावाहिकनागादनदनना
गाथपनिसकमुनियायमगअलाकर्तुहीमउग्रस्यनधपनिसकमुनियायमगअलापूधदयकइलसाडागवाय
याकअग्रकामायाकमुनियाअहिनगागलापानयाचलसलयाकमुनियाडाअकायइयाधनयाकमुनियाअरु
यदधयाकइमनागायाकमुनियाअकयाचार्ययाकमुनियाअबूदक्रयाकमुनियानेकरागनमुनियाअपूरवा

॥ पव ॥
॥ ८२ ॥

रुमनूक्रनागायाकइंशनागायाकमुनियाअकायकागक्रयाकमुनियादारीअकनागायाकदकवकनागायाकथथिग्व
वलिरनागापनिसकमुनियायमगअलाहिनगागक्रयाककायमुनियादरुगदरुनागायाकयूयकडनागासंखकड
नागावधसननागाकलिंगनागाचकलंवनागाधपनिसकमुनियामासंअधमीक्रयाकक्रमुनियादानकनागांअनाद
नमाडाअकथथिग्व(अ)रुयाअसीअर्थिरयाअपापिखनीचक्रयाकमुनियानंनगामरुअपनिसमसंजिनदल
पायालिनधनककपनिसनक्रिआयायीअअथरुयाअमूर्खइलंधमनिदायायमगअधवनिदायामगअहनमु
नियायमगअमदकालासीअकनमुनियायसागरुलसाहिंदक्रपूरवयाकमुनियायमगअलानीचयाकमुनिया

॥ श्रीसुता ॥

॥ ८३ ॥

दाशकायकशीयाश्रीकायानामनाशनमयगादथयावंगकक्रनंमयगादथथिन्ननकनगकविश्रुताडनिद्रगकगथ
कमानंलममइमथगथकांलमातुलिंगमंगलतीतुल्यकशीशीकाहिमालयपर्वतयात्वापलसेतुलिंगमंगलवादाथ
महागहनहालातीवानवानंक्रिनंथथयालसिंहननानाऊकुनयातीददअयकवालसिंहयाआसथाकातीवाकला
नयाआमहाआनन्दनवाकथनतुलिंगमंगलनकिथंअविच्छिन्ननयातीककयादिनससिंहनकूउनवायाआआहान
खायाआवानंथनतुलिंगमंगलनवासथाकलानययागआशस्वयाआसिंहनकूउकपगियाआथमंगलमाचकलंथथ
शीकायामरुश्रुतीधवलसकैरुक्रननानंमाचकिआहचंनारापनिस्नलाभाचकिआथनिगासकगारुश्रुतीधकंमिश्र

॥ पर्व ॥
॥ ८३ ॥

पालनरीकाहानं ॥ वेगयायनउवाच ॥ राजनभक्तयगिशुपालयावानूवचनददातीशीअनश्लसांअत्यन्तकाध
यादाआभलंप्रपिष्टगिशुपालनकिउलिंगमंगलधकंकायाधकंभलंगिशुपालेथनारापनिंकाखथंयाचथंकाधकं
भलंधवचनददातीसमस्तनागोअपददातीकाधयादातीभलंक्रियनियानवालविद्याआक्रिलाअलममइधकंकाया
क्रियनिसनसहलपमक्रिआगपनिघाचथंधकंहादासमस्तनागोकाखथंधकहादाधनशशीअकूनभवासमिनउ
यमालधकंकायाआधननारापनिसवचनददातीशीअनभलंशनागालोककूउनकायाआकायजिनंकायकपनिस
मस्तकाकंजिनदल्पापालिनयनकंकपनिसनकिकूयायिआशीकक्राश्रुदयायसामर्थदगसात्वाआधसलाहान

॥ श्रीसहा ॥

॥ ८३ ॥

काञ्चननद्यायाअपनादसहयायधूननूकीनीजिनकायावलसुडमाचकनदाथनितालीनूकीनीयाकइगच्छासंहलतिनि
सहयानानसहयायमजिअधकं ॥ **॥ वंगम्यायनउवाच ॥** शोभनप्रजयकृष्णयाववचददकासमस्तनाजानेथीकृष्णनका
याखडाधकं ॥ याअसमस्तनाजानेगिगुपालयागनिन्दयागथसायाअगिगुपालकिलाअभलेशकृष्णइनासाकृपा
नूकीनीववूनंमामनंददानंजितवियधकंनअकृन्तलसांषूयनकृन्तलमइधखकायंकालकृन्तलकथम
नकृन्तलधखकायधकंकायाअदलपापालिककाअकृन्तलयायीअधकंवानंथवलसुथीकृष्णनगमहिदायनगदा
अजादंगयाभगयप्रयापडलस्यारवयादंगयापडमदयाअधपत्यमूढगालताअचक्रकायाअप्रहानयादाअध

पर्व
८३

चक्रनगलकायननकाअभालअलागतसंडुनिगलीलरगवूलाअयथिवीकंपमानरुयाअभालननककायाअया
अथीकृष्णयानूगलसंडविकथगिगुपालयागइविकसमस्तस्यनंसायाअवानंभालनकृष्णयाकसाप्रयादाअभाल
आकागनकगिअअखंदागसमस्तनाजंकोडकवायाअगिगुपालनकृष्णयनयागधकंकायाअवादसंमदलशम
नंमलरुनंयथिकंपमानरुलंसमस्तनाजानंसाप्रयागंगिगुपालयापकृष्णस्यनअप्रयाअवानंलाहानधकाअ
वानंहुलिष्ठिनंनानथीकृष्णयागवधुमार्तनात्रदआदिनमधिपनिस्यनसाप्रयादाअवानं ॥ **॥ यथिष्ठिनउवाच ॥**
॥ शोभीमादिननानंगिगुपालअग्निलाचकयअधकंयथिष्ठिननआहविद्याअअग्निलाचकाअइगक्रियायादाअगि

॥ श्रीसहा ॥
॥ ८१ ॥

मुपात्तयापूजनात्तालासमस्तं नाकानंथं २ सकायमचाउति यादाअतल धमिमुपात्तनधगलीलमालताअंभखच
कगजपद्मधल्लयाअचउरुगयादाअविक्रुपूनीसअनंजयदानयात्रविक्रुपूनीयापूर्वदानपानरुलं धयहसधनंलिवि
प्रमहयाअसखनहर्षमानरुलं नाकायनिसन कगाधयमहलं समस्तनाजोपूजायादाअसमस्तवाक्कगपूजायादाअ श्रीक
कनचउरुगयादाअधयहल्लयलयाअयह संरुगयादाअसातिलं खनस्त्रानयाचकायुधिविन अरुनकमिसानतिया
अचानंथधवादवलस समस्तनाकानं सवायादाअमुतियादाअकलंकिपनि कलयालयचलधर्कधयाअकिपनि
धअ २ नाकअनय आह विरुनधर्कधयाअयुधिविननकलं हासीम अरुन नरुल सहदवधनाकायनिसदयान

॥ पर्व ॥
॥ ८१ ॥

यहसिधलधनन थअ थअ नासस सयाअगाथाअधर्कअनं कनथकिसिगलनलादिप्रसादवियाअकाया श्रीक कदा
निकाविमयधयाअयुधिविनननापुकातन वरुगयादाअधया कलयालय पाइकायाप्रसादनकिनचकवर्हिनाका
पदविलादा श्रीसंपहि संरुगयादंलादा वरुमा सं कलयालयधर्कधयाअ श्रीक कनकनिया क आह कायाअकलं
युधिविन अरुंकोनयायमनअपूजाप्रतिपालयाअधर्कधयाअकालयाअतथाअ समस्तगादअसहितयादाअ
श्रीक कदानिकाविमगं दूर्याधनगरुनिसोवल आदिनमविमयसराधयाअवादा ॥ ॥ मिश्रीमहातानगरुत
पर्वनिमिमुपात्तवधअसफ्रिं ॥ १३५ ॥ य ॥ ३१ ॥ ॥ वेगम्यायनउवाच ॥ राजमजयगकनिनसहितयादाअइ

॥ श्रीसहा ॥

॥ ८१ ॥

र्याधननममिमयसहासालअडाअरुस्तिनापूनीसस्त्रयमइअअथनस्त्रयदअधकंआदअयूधिशिननगनकाअयापध
नकाअममिमयसहासवादासमस्तंथथचानइर्याधननाकाअडाअरुटिकआदिनवचिदाअगयाउमिसलंखथंवा
दहालपाअलंदथसूयाअअडाअथनेसमस्तस्यनंखदाअलंखसलंदकाकायाअअडाअरुहिनलंखसूटिकवर्तुनआद
स्तुउमिरालपाअलंदकाकायाअलंखसकावादाअलंदय्यातंथनथथरुअइर्याधनसायाअकिंकननाकसपनि
क्रिताअअलंजलस्तुलमसिअधकंरुडाअथनयूधिशिननखदाअअसगवियाअहिलकाहामसनमहागहनक्रिताअरु
ननकलसहदवअपदिआदिनहास्ययादाअक्रिताअइर्याधननहीमक्रितासहयायमरुयाअथसहासवादम

॥ पर्व ॥
॥ ८१ ॥

मगअधकंआयाअअडाअथअडाअवलसकृतिनस्तुलसपप्रस्तानहासंवादखदाअलंखहालपाअलंदथसूयाअअ
डाअथसायाअसमस्तलोकंक्रिताअहास्यमादाहनंदयाअमहाहास्यनक्रिताकृतिननानागलदअथयसमाथअद
उमिरालपाअअडाअगलसकृटिदाअआदथंकायाअकानथंरुडाअदानहालपंदानमइअसरुयाअकपालसस
वीविनमूत्रनसूमाअयूधिशिननसहदववादाअदानकनकाअयूधिशिननअनकप्रसादवियाअरुस्तिनापूनी
आतंचतनादसंअडाअयादुअयासंपतिसायाअथसंपहिंगथमावकंधकंनानाचिकलपाअमहाइखयादा
अअडाअविवर्तुनूपमादाअअरुयादाअअअपनिंवनरुयायदयूअधकंआयाअममिमयसहासवलस

॥ श्रीसूक्त ॥
॥ ८८ ॥

लायदयीअधकं दायधनकाअनं गकनीनअनकधासुनंदर्याधननकंगां मधाअदर्याधननकंगं गधरुकि कय
किनदुखकायमालधकं धयाअ ॥ इध्याधनउवाच ॥ रागकनि कनकिइः खयाखं मसिअलायुविधिनयासंपरिसा
याअकिन्वायंमययादवगलससं दुधं श्रीथधमायुगमहावलिह मिधुपालमिखाशका वकदामाअनमाचकलेक
कं समकनाशानं ककअसहयायकनधातसायुविधिनयाप्रतापनयुविधिनयातकनखवलसंमिखानंमखडासायं
मनदानलभूदिनवमुनाशायनिसनकअगयाअयवतप्रमानधसायाअकिप्रातदहनयुधकं खीयावधातंराग
कनियारुकिनमि कयकाअइवाकाअअथवायसनयाअसियवेनी नअधद सायाअसनानं धानिअकिधअनोअरु

॥ पर्व ॥
॥ ८८ ॥

कासाधनदतं युविधिनयायथिबीकि आंसमकधनंअयाऊ मरुअपुनूधंमरुअनपुसकधंकि युविधिनयाधनख
दाअसनानधाययायरुयिअयुविधिनयासंपरि कायमकिअयुधआदिनं मातसेनं किधअसहायमइनयुधया
यंमकिअयुविधिनक्रपांनपुंसकधंथुकाथविंनयासंपरिथर्थिपुत्रधयं संपरिइअकिमहावलिह रुयाअध
कला लायमकिअदेवनगथयागखस युविधिनआदिनअनकप्रकात्रलमाचकरालपाअअनकउपाययाकाथ
थनंमाचकमकिअदेवननकायात धननपुनूधानकायआलखालदेवअरुइअयासंपरियासिनंयुविधिनया
नअसंपरि देवनयादानरागकनि कुरुकिनापुनीअकाअकिवव्याकधाअधकं धालं ॥ इति श्रीमहाएतनं

॥ श्रीसूरा ॥
८२

सहापर्वणि दुर्ध्याधनवाचनानामादृष्टिः ॥ ३८ ॥ ॥ गुरुनिबन्ध ॥ सादृध्याधनधसंपत्ति सायाजिहिनइः ख
कायमगताधसायाजिहिनवायकायतापनिस्तनथडाकलथकायवानधकाहिनवायाधजनकप्रकाशनउपाय
यादानमक्रिडागथधलसाजलिहसमिवायानधपनिममाकतापनिसपासागादवथिदअहनंशोपदिथिपुकी
लागंरुक्रधिग्वपासाहलंरुपनिससगहिसहवायुधादततापनिसकावासहवायुधादतापनिसनथअवाह
वलनयुधाकयलपाताजनकधनहलंथधहयाधनसहायहिनसायमरुयाधकंवायाकपाअगियाकवलाका
कानमवाकनाहलंरुजननलागगातिवधननेपुधाहियानागंरुयलपाताधअवग्यागवागुववनदाहयाका

॥ पर्व ॥
८२

अवनसजुधिनमायगतामयासूननकिनकायाजधकंवायाजसनतायाजधममयासूननकलपातामया
सूननधमगिमयसहादयकाजविलंथसराकिंकननाकसननकायातावानंथननहिनइः खकायकायधवि
कलसांमननंरालयमगतापागुवगकाधयायकायकनउपायदतसायागुतापासानालाअधयुधाकयलपातासं
पहिदयकिताडागाचार्यअग्वलाकाकुरुगीसोवलमिगविश्याअपनिषुक्रपासायाकाजिहिनयुधाकयलपाता
यहयाता ॥ ॥ दुर्ध्याधनउवाच ॥ सापारुगकनीधपनिक्रियासामरुताहकक्रपासाहलसापागुताकयलपयु
धधअवग्यायाययुधावग्यायाकाजकयलपाताहकाकायमगिमयसहामरुपागुताकयलपलेसामनसंदशममि

॥ श्रीसुता ॥
॥ २० ॥

मयसुतादिनेदशधक धातुधनताखादकाउमकृनिनमननविवाल्पादाउधालं ॥ गकृनिनवाच ॥ हाइर्याधन
युधिष्ठिरलीमजूर्जननकलसहदव कृक इपदधयापूजधस्यूनधपनिदकं सुनानंरुयलयमक्रिउदवने
मरुमहानधिपनिवत्तुअक अक्रुसक्रुविद्यास अयुद्धयाय पदुनसअधननयूद्धयादानमाचकमक्रिउधप
निधननयुधिष्ठिरनकृकशका रुयलयपस्वअधकं हातं ॥ इर्याधनउवाच ॥ हागनिपाशुसमस्तलोकमाचक
कूपकाननरुयलयपदग कृवृद्धिनदगउगुलिप्रकाननस्वअधकं हादा ॥ गकृनिनवाच ॥ हाइर्याधनरु
धिष्ठिररुतस्वायमसअरुचंमस्वायंमरु रुतस्वागअनंरुतस क्रिसदां कृगलधननकपगपागनरुतन

कृ ३
॥ पर्व ॥
॥ २० ॥

रुकाउसमके कृतिवियथाकं नाश आदिनं मनिमयमरा आदिनं रुकाउवियधननाशयाक आहाकायाउ
स्वायधकं धया ॥ इर्याधनउवाच ॥ हापाशुगकृनिधवृहानु खक्रिववृ कनकअधकं धालं ॥ ॥ गृति
अमराहानगमरायवलिनुका वचत्वात्रिंशध्याय ॥ ३२ ॥ वेगम्यायउवाच ॥ हाकृनमंरुयधनंलि
युधिष्ठिरनाशसूययरुस इर्याधनयामराइश्वरुतंमनिमयमरासलकाशयाअधगुलिखगकृनि
नधननाशया कृअनकदा इर्याधनहाकृम्यविवगुरुअनकृदिनहाहाकाननस्वायाअमराणाकयादाउ
रुअइइखनकसूयादाउ इर्याधनया धाधननाधकं कदा धननाशनकृगानंमधाअलीयानसुइर्याधनवा

॥ श्रीसुखा ॥
॥ २१ ॥

ध्यायनिमिर्हि न कामसुवचननहानं हायू इर्याधन कायकन अमथइरखलसकायः ॥ कुरुते धगुलिखकन
कफाधनामया निमिर्हि न कन इरकायाला धनामयाला समकं कन काग कन अमक कुरुतामः ॥ काशमनयाय
दलकानकन हाकृत्वालशलकन मुविमुदनयाग धवनगुरुहृन्चंदवयाग यागध २ धन नत्तमणि आदिनं अमकवमु
दलकायकन गडा इरखलसकायमातधकं ॥ ॥ इर्याधन उवाच ॥ हायिना समसुवमुं कि इर ना नासुखसम
सुं इर थथदगसां काधकानदहलयल धन नकिगडा इरखलं कि पूरुखमधुवेनीन थअगहि न थअधिधिन अय
मानयागदास धधवेनीमावक कुरुता धध पूरुष कायनाग हायायासंगा विरुयमगडा मान्यवां कायायमातधअ

॥ पर्व ॥
॥ २१ ॥

नाहयायमातथममद्वक्कनाकायूधिष्ठिनयासंपरिसायाअथअसंहिसमसंअग्निनदहलपाअजिदिववर्षुशलाय
धिष्ठिनयासंपरिबनादिसायाअजिमहाकसृष्टकानवर्कथपनिसृजसंहिसाअमूमातजिनयायैवानलथका
सायमालिअथपनिससंपरियाखकायमरुयाऊअयानाकायासिनंगअनाकाचयक्षल०००००अहयाअलया
सिपनिविस्मंगयाअपति०००००अलपति०००००नामरायसुवर्षुपाशदिहचंकंवाजदंगयानाकावाहिक
नाकानविमावमुकलितपाताथनानावमुनानावर्षुयावमुअसंख्यासंपवमुअसंख्यावंग्मापुअसंख्यासल
किसिउथ०००००वमुकवृमकंहमानानाद्वयआदिनंथवाहिकनाकायासखायनाकापनिक्षल०००००किधन

॥ श्रीसुखा ॥
॥ २२ ॥

याधनं शाखा अं अं यधिष्ठिनया यरुत्वा को धनं दनं मनदा सा यच्छिं गनदयू अं नदि किं नागा या वमुं इवि अं थसा
या अं किं विरु भिन्नमशु अं वेनी या थसं पलि किलपा अं वा द्वा प्र रना गा वा धनना गा यं प्र किं १० गुकादि २ धन रु अं थ
रु धु न थ थ रु अं धं दानि न इमका अं थ द्वा प्र रना गा यनि स्यन सुवर्षु या ना हां पा क दा अं अं दा अं पु नि इ हा अं य द न य
धिष्ठिनया कं अं सिर्वा द न या अं लू या ना हा य क्क अं न न या अं थ ना हा पा क्क का या अं क ति २ गुकादि रु या धनं लि न वि अं
हनं ०० द न म धू पान या द गं ख द व कं न्या या ला हा ति न वि या अं थ गं ख व नू द या य धिष्ठिनया त वि या न व न ल व मु द
अं द्वा प्र रना गा यं २००० उरु ना यं थ या अं क्क न न क्क वि स्यां थ प्र हा गं ख वा क्क न स म र्क थ म थ थ म य य अं थ गं ख य

॥ पर्व ॥
॥ २२ ॥

विधि न या न ह का उरु न दि ग या दान स त या अ भ म थ ध मं पू या अ म हा ग द न भ व न पू य चाल थ थि द सं ख सा यं म न ना रु
नं थ य ह स अ न क ना जो अ न क वा क क ह नं अ न क ध न वि अ ना जो प नि स न ॐ द या रु न या व नू न या कू व न या थ स क ल य
सं प ह्नि या सि नं ग अ सं प ह्नि यू धि धि न या थ या न ऊ न कि रु द य स द थ श या अ कि न श्री र्ज या य म रु न कि रु अ इ ४ ख ध कं धा या
अ धानं ॥ ग रु नि नू वा च ॥ इ र्था ध न कि रु ल सां रु ल ल्वा य स या स म रु या सि नं कि स या दा य नं हा ल नं थ य नं पा न
क नं पा य नं वा यू क य नं पा स नं स य न पा स नं क प न पा स नं ए था स कि अ कु ल स नं म इ यू धि धि न या रु ल सां रु ल स अ नि
प्री य कू तां म स अ थ न न रु ल ल्वा य ध कं धा ल सा अ यि अ म अ यू म यू थ न न क प न पा स न रु हा अ यू धि धि न या सं य हि

॥ श्रीसूरा ॥
॥ २३ ॥

दक कामाजि विविय ॥ ॥ वेगम्यायन उवाच ॥ राजन मज्जय धम कनिया वचन ददाता इत्था धनया हर्षमान शयाजि धन
नायु या क्रुता न्यता दता भले कापिता गक निन कि चित्त त्या क कि क म हा रु कि रुता रुत स कि क म विष्ठिन रुत न रुता अथ य
निम संपति दक कि कि सन काय कि न आरु विता धक धाल ॥ ॥ धन नायु उवाच ॥ गपु इत्था धन कि म कि रुति विद्वन
धता समधान या दता अ न धाल ता रुत लाव क विद्वन व क्रुता स रुता सिता आता रु या जवानं सिता लि पा म स रुयि गुति
सिता इति काल रु कोनता पायुता म हि रुता क धक धाल ॥ ॥ इत्था धन उवाच ॥ कापिता धन नायु विद्वन व रुत लाव क
क्रुय य यो ग विद्वन या व व द दता अ कि न रुत म ला कल सा कि सि य नि ग य न कि सि रुता अ विद्वन व स हि रुता दता

॥ पर्व ॥
॥ २३ ॥

कि न नायु राग या दता सुख न चाता कि सि क न कि नाय क रुयुता धक क रुया दता थ थ ख ला क व व द दता अ धन ना
यु न सिता क प नि क धाल ता ला क प नि हि न क रुता द य क य विष्ठिन या सिने ताता कि रुता द य की अ दान गत कि रुत
वाल कि रुति क रुव रुत न म सि ध न न द य काता थ सि ध ल दता थु कि स रुत लाव क धक धाल इत्था धन या
चि रु मा नि या य यात धन नायु न विद्वन वान कल रु याता विद्वन ध र व रुता क क द रुत न रुता अ पायुता या गी सं
पति काय धक धन नायु न का याता थ र व रुता न विद्वन न धाल थ थ रुत ला को ल व मायुता नि ग य व धक धा याता विद्व
न रुता अ याता धन नायु न म रुता न या दता अ विद्वन न धाल ता रुता न कि न धा या थ रुत लाव कल सा थ थ ला रुत ला

॥ श्रीसुता ॥
॥ २४ ॥

॥ अथ मयूरमंल कलहयाह उमहं ककिमावाता समस्तया महिं दधकं धाया ॥ ॥ अथ नाहु उवाच ॥ राविद्वन उपनिश्ल
त्वात काग कि कि समस्तं नानम आसं समकं वान थ थ वा दा अ शलत्वा च क क रु य अ कि न गु लि थ का कि कि दल उपनिश्ल
य धाय द अ ला कि कि न द त सा ला मू धाय अ अ कि कि अ दा अ मू धि धि न वा दा अ रु कि अ थ ध क न वा धा या य म न अ दे व
न वा दा अ रु या थ रु य अ क रु लं अ गु रु यी अ ध कं धा या अ थ न व च न द दा अ विद्वन या म हा इ ४ ख या दा अ शी म या
क अ दा अ थ रु हा क ख सम सं विद्वन न धालं ॥ ॥ अथि श्रीमहा न न स रा प र्व ति धू न च त्वा नि ग त भा धा या ॥ ४० ॥
॥ ॥ अथ मयूर उवाच ॥ रा वे ग म्मा य न कि आ रु प नि स्य न सर्व सं मा च कं ग थ रु ल त्वा च क ल थ रु ल त्वा दा स रा स स

॥ पर्व ॥
॥ २४ ॥

सुद अ शल त्वा च क य अ स स थ प थि या ना रा स म सं मा क थ या नि मि र्ति न रा म वि ध न कि न वि क्ता न न क दा अ वि द्वा रु न ॥
॥ अथ मयूर उवाच ॥ रा अ न म रु रु ॥ ॥ अथ उवाच ॥ रा सो न का दि द्र अ स वे स म्मा य न स धि न रु न म रु य ना रा क दा ख स म
सं वि क्ता न न क न द दा ध कं धा या अ रा सो न क ध न ना हु न ला क म द य कं गु क थ य स वा दा अ य दा अ इ थ ध न हा ग रा पू उ श
ल त्वा य क य ग थ धाल सा रु ल त्वा य विद्वन या कं म न अ ध कं हा दा अ इ थ ध न म हा क रु न वा द थ व ल स ग रु नि क र्त्तु आ दि न
गु क न द दा म वा न थ थ वा न ध न ना हु न धाल रा पू उ विद्वन न हि त रु क थ क रु क अ हि त म या क ख का ख रु क थ म व र व म
का क थ न न श न ध का हि त ख थ या व च न द दा अ वा अ म व या रु ल सा रु ल त्वा य उ ख क रु ल त्वा त सा रु न क ल्या न म रु ग अ

॥ श्रीसूरा ॥

॥ २३ ॥

मंगलरूपयुगं यथा तस्य वरुणस्य निरुद्धस्य कासाकुं विदुः सति उक्तं कानरुद्रं जस्य कस्य सीता अयाहया गवां नं सिता लिपात सज
युती सिता महाहानि पंदित थिदक विदुः नया वचन दनं माल विदुः नया उति का अहानि मवसुर्न मइ थया वचन मदनं म
तडा रायू अजा वय्या नाय स सुखन उक लपं वा अनाजी कइना थन न कनत कून मगात कन (ग) क बाय काय ग थ
धातसा मुषि किनया सुख थं कनं सुख दउ थ का थ थिद वल स कन क निमिदिन (ग) क का या वा ग थ क हा दा ॥ ॥
॥ इया धन उ वा वा ॥ सा पिता रु क हा अ अ स त ति सा अदिन समरु दउ रव वे नी या थी संपति सा या अ थ अ थिदि अ थ
कं सं गा य या हा अ वा अ अ अ धर्म पुत्र या ल क हा थ य या ल क हा म मू थ अ क द अ ल की ल कि स तु र म रु अ मु धि वि न या

॥ पर्व ॥

॥ २३ ॥

श्रीलक्ष्मी सा या अ थन कि स ता य व थ क ल य थ क्ति या ना गां मु धि वि न या लि अ लि अ अ नं थ सा या अ कि म्वा दा अ का य सिय का स्य नं
सि अ म रु या मु धि वि न या क स वा द नी य न त वि वि द न त कौ तु न त थ सा ता न त द न म न दा अ मू ल थ थि ग व न त सा हा दा वि दा
थ थ द ध क न त या ना म नी य थ या ग रू स न त द का वा नि अ रा पि ता न त इ का य सं कि वा दा थ न त स म रू सी या अ सि या सा
मा न्य न त म मू ख दा या अ का य रु मि मा ग्र हा या नं सं ख्या या य म कि अ अ मू ल्य अ मू ल्य न त रु मि त या अ कि न का य म रु या स
अ क न का य का ह नं म या स न न वि द स ना व न पु मू लि स रु टि क रु या अ रु ल कू ल सिय म द य कं व वि दा अ त या अ स म रू म
हि म य स रु थ स रु स कि अ दा लं ख हा ल पा अ लं द थ स या अ अ दा थ व दा अ ही म न के ला अ हा म या दा रु ल कू लं म सि अ थ कं
थ व ल स कि अ थ थ थ अ दा अ क न हा ल या अ अ दा लं ख स क ति हा अ अ स त प्या क स क स्य नं हा स्य या नं थ व न स ही म मा व क

॥ श्रीसूरा ॥
॥ २६ ॥

धकं रातया अविस्काटि का अत्रोपदिन रास्ययाग श्रीसकलमन रास्ययाग धवलसक्तिमायं मयया प्या क अस्तन क्रिडा का अ
कि कन नाकस हा दान अस्त वि य का अ मिया अ क्रि डि सि दाराल या थ थ पि ह मया दान रातया अ ग दानं दान मे इ था स रु या
अ क्रि क पाल स हा दान हि हा अ न कल सह द वन क्रि य स पू हा अ दान म स अ व श क या अ थ न उ नि दान ध कं ल क दा अ क्रि का स
हल कान का या थ का यो हल क्रि का स हा दान सह द वन क्रि कन समस्त न ल याना म क्रि न स्वयं मन दान न दं मन दो थ ग न ल याना
म ॥ ॥ इति श्री महाशयन सहाय विष्णु गणेश चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४९ ॥ ॥ इति धन उवाच ॥ हा पिता समस्त नाशने उरु
म व मु ह उ सा या अ क्रि थ अ ना म म न्म हा वा क्रि क ना ज्ञान ह या क ल पा ला थ वा रु स प अ स्त हा क काल सा यो क गु लि ठा स
न अ तु ल्य स्वर्ण न वि उ वि वि उ या हा अ पा न अ न्त अ न क न न व र्णु गं ल र्क र उ उ नि स र्क ३०० उ थ र्क २०० क व य

॥ पर्व ॥
॥ २६ ॥

का अ न ल अ स्व र्णु अ अ दि न रु अ वा व धा नि ना रा या ख क हा अ वा क ग ना ज्ञा १२ उ य क रु ना ज्ञान ह या स्व र्णु सा का टि ३०० ००००
ज्ञा हा अ अ स्त नं दान न इ हा अ न म इ का य सि क द ग या ना ज्ञान श्री न ल क र्क १०००००० मितान सहित या हा अ क्रि अ न्त न या अ
रु ड क रु द ग या ना ज्ञान अ न क स ल ह या अ रु ति न अ स्मृ ड मि न या म् रु क ना ज्ञा य नि स नं व रु क न वि अ वि ना म द ग या ना
ज्ञा पा न दा द ग या ना ज्ञा उ ग द ग या ना ज्ञा रु क द ग या ना ज्ञा अ न क उ थ न क व य कं ह या ना ना न ल स्व र्णु अ ह ॥ आ दि ने
अ सं ख्या न क न क न ग या अ थ थ नं दान न इ म क क अ म्म मि ष द ग या ना ज्ञानं वा य व ग ग ल अ न क द क न कृ ति का दं न य
ख र्क रु ति न य या न रु अ न ग्ग ल मि खा म नू ष न स्व र्णु मि खा ह न क पाल स मि खा द स्य वा द प नि स य व स न न क्रि अ य नि ग ध
या क गु लि न अ स्त या हा अ क्रि य प नि क यो रु ति न वृ ग प नि ग ल प न रु क हा रु अ ग नी न त अ न अ धि क वि नू प थ थि क अ

॥ श्री गुरु ॥
॥ २६ ॥

लंखवृषलिहस्यतया उरुनकेलासयानागाननानाअवधीहयाअतयासिकं म्वाचकक्रिअधपनिअवधीयाप्रभादनरुतहलउद
यागीनिपर्वगयानां लाकदात्रिनगदाअइहाअनमद कलषदगयानागानं रुतमूललासा समलं गादाअपिनयवानअनं कअमस्य
नलेगीखवृषअगनअनं वक कमुलिवमुसुवर्तुगादाअनानासुगन्धकमुनीसुदनीकीदालकि १००० वनयाकिसिभउमनयना
नारुनुमंगलतजस्वी सुवर्तुगादाअअअथधिं ददात्रिनइमकाक कवादनगादादनदननागाइविनागानेयासिकनागाअव
वननागापोनवदगयानागाकागा नदगयानागाकंदमानदगयानागा त्रिगर्हदगयानागा के कनदगयानागाअधकदग
यानागासुदगयानागाद कदगयानागायर्त्तवदगयानागानिगिदगयानागाइकदगयानागा ॥ १० ॥ उकदगयानागा
मस्यदगयानागासुदगयानागाअगदगयानागावंगदगयानागाकलिंगदगयानागाअगातिदगयानागाअथासिदग

॥ पर्व ॥
॥ २६ ॥

यानागाभक्त्यासिदसुयानागाअनदगयानागापनिस्यनंअनं कनलनककिआल विलं पृदकदगयानागा लमूलिकदगया
नागा पांयदगयानागावोनदगयानागाइकलदगयानागाकगिकदगयानागा यगर्तुदगयानागाअननागानं नलनक
किआल गादाअअअत्रिनइमकाकअनदगयानागानं थअकायलतताअयनदगियाअअअननगियाअगिसान
नियाअइहाअनाअयुधिधिनरुतयादाअवकुवियाअ १००० पादनमगिवियाअमगियाअगकिथिनीयाअसगलदाअजिम
पुददअकीरुयअहमकदमगिपर्वनथंअसंखाअमविदअक इर्जयअयलपमक्रिअअनागापनिस्यनककिजिअ
उआलहअहनंयपृदकइअकिसि १० कपनिस्यनंइअसमलनागापनिस्यनंकायमातसासुनानकायइयोअद
अयावेकुविअनथगन्धर्वनागानवायवंगगठक ४ अथकआलभउनंनथविदाअनथप सन १०० विअउवृग

॥ श्रीसूरा ॥
॥ २२ ॥

गया गल गत कि १०० आका गसं वाय रु आता प्रा दिता गु या असंख्या गु क द ग या ना का क र्ति असंख्या प व द न कि सि म
स्य द ग या विना ट ना जान सुवर्णु मालान सहित या दा अ कि सि र्क नि गत २०० वि अ सु ना स्य द ग या ना का या कि सि र्क २०० थ ग
न व य रु का न ल ह या अ वि अ सु ग म्मा ना का मा सुवर्णु मालान सहित या दा अ ग ल नि दाल र्क २००० वि अ ॥ हा पि ना ड प द ना
जा या सु द नी र्क दा सि र्क कि म प दाल १४००० समस्तु तिसान नित्य का अ डी प दी या न विले ह न व समस्तु तिसान नित्य का अ व
ल र्क नी प दाल २००० कि सि न वि दान थ २०० न ल प र्णु या दा अ थ अ ना य ना प र्क अ न ल र्क क न ह या य धिष्ठि न न म का
मा अ अ र्क न या त विले ॥ अ न क तिसान नित्य का अ कि सि र्क कि म प दाल १४००० थ र्थि र्क क र्क अ र्क न या व म्भ स थ ग न जि
म हा क र्क थ सा या अ ह न वी न द ग या ना का या पा य द ग या ना का या मा सा र्क दाल कि १००० सा र्वा दाल कि १००० सुवर्णु या

॥ पर्व ॥
॥ २२ ॥

म ल प ग व उ द ल कि १००० ग उ र्क दाल कि १००० च ल आ दि न क य क र्क ग ना ना न ल सुवर्णु र्किं द र्किं द माल का प ल या अ स न
अ न क थ ग वान र्क अ ग या अ दान न इ हा अ ना ॥ ॥ सिंह न द ग या ना का पु व ल म्का द कि सा व र्क ग व अ सं ख्या सु
द नी प म नी की अ न क थ र्क दान स वानं व र्क क त्रिय वे र्क म्भ द सम र्क अ अ च ड र्दि ग यो ना ना का ति अ अ सम र्क स न
अ न क द व र्क अ थ सा या अ कि म र्क र्क अ सि य माल थ र्क म न स य धिष्ठि न या स अ क प नि स्य दाल प म द अ कि मि
न न दाल अ ग मा थ र्क वा द न थ र्क क टि १०००००००० पा य क प नि असंख्या थ ग न अ न आ दि न ह या अ वा द थ ग
ला क न कि थ र्क थ या अ क र्क दान या अ वा द दिन प ति थ व ल स इ ४ खि स न म इ ला क सम र्क सु खि ला पि ना थ ग य
रू या वि धि द्वा य व न कि थ र्क थ ग वान ग र्क व र्क ग ल्ता क र्क व य या दाल ८८००० अ ह या थ ला क य ति दा सि र्क

॥ श्रीसूक्त ॥

॥ १०० ॥

॥ द्विथं विअ उरु न ता ला हा त थ छ या अ वा द रु ति य नि र्म कि दाल १०००० ल्या न र्म भाला या प्र स र्ग न या क थ न ता क न
न क धून का अ उ नि दो प दि न यी अ न अ म न अ वि चाल या दा अ वा न ह नं अ न्ध का न व धि न स्या च पं गु ख ल रु र धृ ति रु ल या
क ल हा नां ग ग नी न हि न रु अ य नि अ य नि आ दि नं थ न स नं न अ म न अ वि चाल या दा अ वा द अ प दी या थ न या र्ग वि
य क्क या ला हा त न थ र्थि द रु धि धि न या म हि मा थ न न जि द्द ख क रु रु ल ध कं ॥ ॥ मिश्री महा हा न न स र्ग प र्व वि
धू न द्वा र्थि व न वा र्थि व त्वा निं ॥ १२ ॥ य ४ ॥ ४३ ॥ ॥ इ र्था ध न उ वा च ॥ हा पि ना स्या थ र्ना ज्ञ नं य धि धि न या क स
वा या दा अ वा द व रु व र्थि थ वा द ना ज्ञ नं वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क वा क्क
ना ज्ञ नं सु व र्ण क ल ग स र्हि द र्गी र्थ या लं ख थ दा अ स्ना न या दा ग्ना कि लं ख न स्ना न या दा अ सु व र्ण न थ स य धि धि न द दा अ

॥ पर्व ॥
॥ १०० ॥

वा ह्नि क ना ज्ञा सा न थि रु या अ व दि प ति न थ ज्ञा ज्ञा दा अ द कि ण द ग या ना ज्ञा न स्ना न मा ला न ना प ति ज्ञा दा अ रु ना संध या पू ज स
हृ द व ना ज्ञा व सु दा मा ना ज्ञा न या द रु स्ती र्म ॥ म ल्प द ग या ना ज्ञा न सा नि रु न धि ॥ उ क लं व ना ज्ञा न न ल या द का ज्ञा दा अ व कि
ज्ञा न ना ज्ञा न ध न्ख रु ज्ञा दा अ ग ल्प ना ज्ञा आ दि न स क लं ना ज्ञा प नि द न धि लि अ २ स व ना ज्ञा न सु व र्ण या नि सा ज्ञा दा अ
व्या स ॥ अ म्भ म धि न अ रि ध क वि या य न गु ना म पु द्दि न वा क्क वा ना ज्ञा न के सा र्थ कि न सु व र्ण रु रु ज्ञा दा अ अ र्जु न री म
न वं रु न न रु ल स हृ द व न वा म ल व न व न वि या अ अ म ल्प २ ग र्ख रु रु न अ रि ध क वि लं हा पि ना थ सा या अ कि क रु म रु
इ ४ व अ न क स र्ख य या अ थ ग र्थ या ग र्थ न स म रु ना ज्ञा ग्ना क सा द न स अ र्जु न अ दा अ थ मा र्क रु ग न १०० थ न वा ल रु रु
२ थ ल वा क्क या न वि अ क्क अ या ना ज्ञा न या दा थ र्थि ना क्क अ या ना ज्ञा न कि द अ ना ज्ञा ज्ञा व ना थ ना ज्ञा म न ना ज्ञा य थ ना ज्ञा

॥ असह ॥

॥ १०१ ॥

गीनधनाश्रयसिनेऽथैकलं श्रीमन्मृषिद्विनहनिचक्रनाशावतुल्यध्यासिनेऽथैकलं श्राजयाकिस्वाययाउपायदश
लाधश्रीसंपत्तिमकात्म्यायमययापितामदायाधुवयाधरुजश्रीसंपत्तिक्रियनिसुधकालनसंपत्तिमइधगनकिविवर्तुश
लेगाकरुनेंगहिनीकुलं॥ ॥ श्रीमहाएनगसूत्रायर्वनिष्कृत इत्याधनबाधंवडवत्ताविंशाश्चायथा॥४४॥

॥ ५८ ॥ नाष्ट उवाच ॥ लयूगद्वयधनजिककृत्तुसकनपातुअअद्वयमायमनअपातुअनद्वयविवियामद्वयधनकलस
पातुअद्वयनकलसाकनंदद्वययूअशुविष्टिनयाकविकानयायमनअद्वयमायमनअकृत्तुनिरुयाअथथसनमनअ
यूविष्टिननयादार्थकनंयहूयाययलसायहूयाअद्विकिसंभूनकधनद्वयकाभूनकनाज्ञानंसमस्तनंधनहूयूअथका
धननकनंयहूयाअद्विकिसंभूनकधनद्वयलयूगमवयाधनकायमरिद्वयवयाधनसविनायायमनअथअधनसविना

पर्व
१०१

[illegible]

॥ श्रीगुरु ॥

१०२

मज्झिमनिसंजापदाश्रययथा कञ्चुका कनलैगियाअ अकयाइः खमवनसुखदयूअ कयाथ अनापं धर्म कथा आदिनं दद
कथयिं कलानि शयाअ क्रियनिसंजापनदककसूतक वरुस्यतिन धाया लो कया वरुत कता धकं धयाअ विइनं मसिअ क्रिन
याअयाअी संपत्तिभावकानकसूअ क्रिसंपत्ति धननमग कला अथनं विधातानं कियदाअ रुया कथिया अयकर्मया
यमालधननभव अयलयमालपूधयायया विचालमूचालयुधिष्ठिनया संपत्तिमका संमज्झिअ कनजिल उगु लिन यादा
अकायकलुत्वा नानं शलसां संग्रामनशलसां थरुल अयलययुधिष्ठिन आदिनं माचकाअ यथा सर्वे नीमदयकन थअ संमर
यकं धनवेनीयायअपनिसंजी संपत्तिनजिदग्धशनी धननवेनीया धनखदाअ क्रिसनीधरुयमरुया वेनीमिनं विक्रधदा
अक्रिचानं मरुअत अधदाअ चानमालं कननिन धाया खददाअ कपतकलनरुयधकं धाया रापिता कनइः कायकायवे

पर्व
१०२

[illegible]

॥ श्रीसुरा ॥
॥ १०३ ॥

[illegible]

॥ पर्व ॥
॥ १०३ ॥

॥ इत्याधन उवाच ॥ शपिता विद्वन् या क क न सिय क काल अशुल सां पापु अया हिन थन क न वृद्धि म दय कल क न विद्वन् या क
सिय क क न थ म रु या कार्य या य नि क सं उ खं म रु ल दा अ सा क न धा ल सा अि अ श ल का अ कि म व या व स्य स पू नू प्र वा न दा
अ अ क न नानं मा यू अ थ म नि ना गी रु ल दा अ न नानं स म क्त कार्य या य ॥ ॥ धन नाष्ट उवाच ॥ श पू उ इ त्या धन पापु व व
नि पू अ प नि स अ वि ना ध या य म य या कि क प नि वे नी म व क प नि स व ल म इ नि र्व न थ ग न कि म य या अ र्था ग्ध क र्म क न
हिं द रु ल प लं थ रु ल नि मि कि न सं ग्र म रु यि अ य धी न प रू यू अ अ न क मा यि अ ला क रू यू अ क प नि चा य य ल सा पा
पु अ वे नी या य म न ॥ ॥ इत्याधन उवाच ॥ शपिता अरु स रु आदि न द य कं त्या य म ख न प्र हा न रु लं ध न आदि न थ
का कि अ प्र हा न या य म वृ न ग रु नि या व च न स कि इ वि रु नी स रु स रु ल त्या य द य क न नानं धा अ कि प नि स अ सं प नि स कि

॥ श्रीमहा ॥
॥ १०४ ॥

प्रीतिरुल्लासिपनिरुल्लासविकिर्तासकल्पनं गता किनसायातावाताविधानर्थं कनरुल्लासयदुखताधकं इर्याधननभालं ॥
॥ धननाष्ट उवाच ॥ रापूय कनकायावचनं किनसमतायाजिवचनं कनसदनसा कनसाकश्युताजिवचनया रुतलि
पतससियुताधकाथनायतायागुतायातायतायागुवपूयता कपनिसता उंतिनिधनं किनकृपायतापूयकृतागुताय
लसविद्वननभालं थयानिमिहिन कलं नापं मायुता कृतायतायमालधकं आवनसविद्वननभालं देवनहयागुमश्यम
इकननिमिहिनकृती आदिनसमसं मायुता कृतागानकृताया अग्रिधकं देवनहयागुयिताथरुलधकं आयाताला
लाकदालकिथमसूटिकयानानानेततयाता गतकिद्वान १०० कागकि धकागकि १००० थगप्रमाननसरादयकमा
लधकं आयाताथगधननाष्टयावचनददाता कलिगस्यनननानंसरादयकाता कलिगस्यनसरादयकधूनधकं नाता

पर्व ॥
॥ १०४ ॥

याकग्वचनयाताता कलियागप्रसादवियाता कृतायाताधननाष्टनविद्वनवाताताहामंशविद्वनकिनभालधकं युधिष्ठिनआ
दिनवाताताहितातापनिस्यनकायकृताधकं भालसा सरादयकासागकधकं आता विनादननामलनरुलकिगधकं आता ॥
॥ वेगमयायन उवाच ॥ रातागुनं कनमकृयधननाष्टनथममभालसने इर्याधननकिनहिनमआयाहिनमस्वातालायातादेव
नहयाधकं आयाता आह्लाविलं विद्वनयाग ॥ विद्वन उवाच ॥ रातागुनं धननाष्टकिवचनं किआनंदमशया कानभाल
सायुधिष्ठिनवाताताहयकिमयया किआता कानभालसा कलरुशयुता कलरुशनकासकलना गश्युतामवद्वनकाकन्यध
कं विद्वननभालं ॥ धननाष्ट उवाच ॥ राविद्वनकनकायाखववहानधखनकिंसं कापमद इर्याधनआदिनभालस
नेथमालकिस्कापद देवनहयागुमश्यमइ किराखानपागुतापनिवाताताहकिताधकं विद्वनकागं ॥ ॥ श्रीमहा ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ १०५ ॥

नमस्तुतापर्वविद्युदविदनागमनं नाम स क व त्वा निं (गा ३ ध्या यशा ४॥) ॥ वेगम्याय न उ वा च ॥ हा रु न म रु य वि द न म य कं
वा ग न थ स द न अ अ द अ रु द प रु या ला क न अ म रु स र्ज न ला क न अ न क स र्क न ना प ला द अ अ गि वा द आ दि न या द अ म वि
म य स र्क स अ द अ य वि धि न न र्ध म न या द अ ना प ला द अ क ग ल व र्क आ दि न वि वा ल या द अ ध न ना य न द र्था ध न आ दि न वि
वा ल कं द अ वा द य वि धि न न अ लं श वि द न कि वि रु स र्ध म न म रु अ ल स द श व क य ना ग ला द र्था ध न आ दि रु कि रु ला क
ल रु रु ल ला ध न ना य या य न थ अ व स स अ द ला ला क या स र्क द अ ला ला क न ना ग म न य या क ला ध कं य वि धि न न वि द न
या क न ना ॥ वि द न उ वा च ॥ हा य वि धि न स म र्क क ग ल रु अ ध का ध न ना य न स र्क द य का द र्था ध ना दि या रु फि या य
न थ स र्क स व क ध कं कि न कि स क ल व न अ या य स र्क स वा द अ स र्क न रु ल ला द अ कि ता अ थ अ थ अ स ना म अ नि अ ध क थ

॥ पर्व ॥
॥ १०५ ॥

कं थ ध क न रु ना रु न य वि धि न अ न क रु अ ल प नि म न का अ द य कं ग ल ग रु नि प्र रु ति न म हा रु वा ल प नि म हा म हा धू र्क
द अ वा न थ कं वि द न न क द ॥ य वि धि न उ वा च ॥ हा वि द न रु ल ला द अ क ल रु रु क थ म व ना म द रु क न क स म धा
न ग थ अ न ला म अ न ला रु ल ला य ला म ला य ला धा ध कं य वि धि न न अ लं ॥ वि द न उ वा च ॥ हा ना रु न रु क न धा या रु
अ र व रु ल क ल रु या रु कि नं अ न क ग द थ थ नं कि न ग न म कि अ कि क स र्क ल थ ग न कि स र्क न ग थ माल अ थ या अ ध कं
धालं थ न य वि धि न न अ लं श वि द न अ म थ रु ल स रु वा ल स रु द अ धा अ कि अ रु ल ला य रु अ ध कं ध नं थ न वि द न न अ लं
ना रु न ग रु नि अ रु यि अ ग थ धाल स रु अ र व न स अ क ल रु म स अ व ल ला क क प र्ति रु अ थ य ना नं ग क थ प नि द का स ग रु
नि (ग ३ ध कं धालं थ न वि द न या र व द द अ य वि धि न न अ लं श वि द न रु क न धा य र्क र व अ र व थ प नि म हा क प रु रु अ ल थ न

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १०६ ॥

नअनगधमअनगधधननाष्टयाआहगधमयायधननाष्टयाइर्याधनयाकअतिदयादअभकनिअशलत्तादावलवस
दांसायायंदअअशलत्ताकिमवमीअमप्रआगयाधननाष्टयाआहानअनउरुलाधकंसमसंवसुयनयागकियेकायुधिष्ठिनन
॥ ॥ वेगम्यायनउवाच ॥ ॥ रुनमरुयविइननवानअयाअयुधिष्ठिनरीमसनअरुननरुलसहदवडोपदीकनियुअदि
नअनकनाजानसहितयादाअलीरुननसहितयादाअभलनथकिसिअनकनलधनवसुआदिनरुलाअरुकिनापूनि
अरुशलनवयीअशलयाअचोमयावृकअंअयुधिष्ठिनयापुअयगिविंधनगनसगधअअदा ॥ ॥ युधिष्ठिनउवाच
॥ ॥ विइनथकार्यसकिअमंगलरुयअशलयाआपदाशुपुअइर्याधननवानकलरुयाधअनउरुनावेनीनधायाथवि
कानरुमधककाधयादाअअदाहअनमरुयधकवेगम्यायनरुकाहकिनापूनीअदाअलाकनरुकिनापूनीनार्यवा

पर्व ॥
१०६ ॥

पलदनकंवाधधनधननाष्टयाकअदाअडाभचार्यरीवापिगामरुकावाचार्यनमस्कानादियादाअअभस्मावाकि क
सामदरुइर्याधनआदिनगलगकनिशौवलइसासनरुयउथपनिसनथकालिरुकोनमस्कानकाकालिरुकाविवात
यादाअधनेलिगंधानिनमस्कानयादाअधननाष्टनमस्कानयादाअकिपनियुधिष्ठिनआदिनधयाअअअनवादाअध
ननाष्टनयुधिष्ठिनयावसपालसनउदाअप्रियरावनानवाधमनसगभकयादाअवाधराजनमरुयपागुअअयाअइ
र्याधनआदिनहर्षमानरुयाअधपनिसत्रीसंपतिकायदगशलयाअचानेननलमयकसयुधिष्ठिनआदिनवासविया
अइसासननंधालेडापदीप्रहतिनसायाअधालेइर्याधनयार्तवियधकइर्याधनादियाकीमडापदीयाकसंवाधयाअ
वाधरुकाशनआदिनयादाअधदाअनानामशलददाअवाधथाकददाअअअयकाअनधसथअनित्यकर्मयाद

॥ श्रीसूरा ॥

॥ १०१ ॥

असुरासुदहाअन्यरुआलमयसुहाधक ॥ ॥ तिथीमहाशनमसुहापर्वनिधुनानकासुचलापिभाषाय ॥ ५८ ॥
॥ वेगम्यायनउवाच ॥ हाऊनमरुयथसुहायानाममनानमसुहाधमनानमसुहासुवाकाअनानातासुवाकाअसमर्कथ
धवाकावलमकनिनकालंहायुधिष्ठिनचक्रवर्हियथापतिनाकाकिथरुलसुहासपागपिकामसुकिअकिअसालि
ल्लवायधकधाया ॥ ॥ युधिष्ठिनउवाच ॥ हागकनिहूनरुल्लवायडुखकिअकिअसंग्रामल्लवायअरुल्लवायन
कर्मअसुहालाकयामर्गतसुपूषयालकगमधुधुर्हयातिनरुल्लवामहिमाखकायुअहिनयामर्गतधकधात ॥
॥ ॥ गकनिउवाच ॥ हाऊनयुधिष्ठिनकिनकिनिदायातनिद्रायायमालरुल्लकिनरुल्लवामर्गतमसिअचउ
नमरुअकिथनकिरुल्लमसुअअरुल्लनिरुल्लवायसुसुतअकहा निविचकगधायकिवकुसुयुरिनगकवि

॥ पर्व ॥
॥ १०१ ॥

हायककपूयमरुवाकपनरुल्लवायकतामरुअकिगयमूचालविलंरुयाकाअकायवलमायुनाधकधायाअ ॥
॥ युधिष्ठिनउवाच ॥ हागकनिदवनअगितमधिनधायानाकायारुल्लमगअमगअरुल्लमगअधनिनानागयाहुतुनाका
याधर्मरुकागअविअमनकपनिधुर्हजोरुल्लमययाअअयाकपनिहयककिपनिहयकवाकाअसंग्रामल्लवाका
अअअथयथाअवाभावाकगवाहिकनअरुसुतयुधल्लवायअधरुल्लनजिषाकाअनाअदिनंदनसुनकिमययात्याग
सोवृगसांअपकलिर्कर्मगनागयाहुतुधनकिमयया ॥ ॥ गकनिउवाच ॥ हायुधिष्ठिनवाकगनेअसुहासुल्लवात
काअवाकगमधुधर्मरुल्लवातसापापमदरुल्लवायउलिउलिहाअयाधर्ममदरुल्लवातनकगनअकासाविसादयकाअ
नअरुल्लवायवविअअवलिअगअसंग्रामसुवलिअअवलिअकूयुधकिरुल्लवलअकधनकिनसंग्रामकालं

॥ श्रीसहा ॥
॥ १०२ ॥

सर्वधर्मकं ध्यायात् भक्तनिन पासकादाश्रित्यात् साधकं ध्यायात् धर्मवर्तु कायात् अलंकाराय धिक्चिन्तनं धनदत्तानि
लावकं आश्रित्य न कृत्वा यथा धर्मकं कालं ॥ **॥ यद्विधि उवाच ॥** रागकृतिमिगलकृत्तव्यं भवगलदातुं किञ्चित्कृत्य
अगलीलसचक्रयाचिक्रदशगलव्याकृत्तव्यं किञ्चिन्गयासलं किञ्चिन्गयासलं किञ्चिन्गयासलं किञ्चिन्गयासलं किञ्चिन्गयासलं
पूतयधूनवर्कं ध्यायात् भक्तनिन शल्लादाश्रित्यात् साधकं ध्यायात् धर्मगलं कालं ॥ **॥ यद्विधि उवाच ॥** रागकृति
आश्रयाकिस्मिन्काले १००००० ल्यामिसानसहितं प्रागहं किमाकिस्मिन्काले १००००० ल्यामिसासहितं कृपायासिनं कि
यनं अदिकं धर्मकं ध्यायात् भक्तनिन पासकादाश्रित्यात् साधकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात्
उवाच ॥ रागकृतिदासिमिसातलकं १०००००० ल्यामिसानसहितं दवमार्थिगतासतवृमपताकलानसंस्कृत्याव

॥ पर्व ॥
॥ १०२ ॥

नक्षत्रसंज्ञाभराय सञ्ज उरुमयगन्धकिस्मियाजियनं गुणदत्तं धर्मनिधकं ध्यायात् भक्तनिन पासकादाश्रित्यात् साधकं ध्यायात्
याश्रित्यासिधनिकालं ॥ **॥ यद्विधि उवाच ॥** रागकृतिधुम्नीयायुधयनिलकृत्तव्यं १०००००० गूतसमस्तं समर्थं सासञ्ज
खसहस्रं सहस्रायुधं ल्यायकं समस्तमिसानसहितं धर्मनिसानवानं किञ्चिन्गयासलं किञ्चिन्गयासलं किञ्चिन्गयासलं
याश्रित्यात् भक्तनिन शल्लादाश्रित्यात् साधकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात्
वा ॥ रागकृतिआश्रयायुधयनिलकृत्तव्यं १०००००० सलनयपमिन् ४ सर्वधर्मदुष्टनायकाश्च भक्तानि धियायधर्मकं
पायकनयपमिन् धर्मकालनसंयुक्तं धर्मिगुनयलकृत्तव्यं दालकृत्तव्यं धर्मकालं नदाश्रित्यात् साधकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात्
याश्रित्यात् भक्तनिन शल्लादाश्रित्यात् साधकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात् धर्मकं ध्यायात्

॥ यद्विधि उवाच ॥

॥ श्री सहा ॥

॥ १११ ॥

नरुअनमखाथथशुलराजाज्ञानमूर्खधनराष्ट्रराजवंगयाकंभासूनयानिंमिहिकाउसमस्तलोकनंतालताउविस्तृतं कश्चन
कगभाचकाउराजवंगयादिनेपंववंगयां सुखनवानं कनं द्रव्याधनतात्रमनयाअजिपनिसद्वखशलेराजाज्ञानं क्तिनजाह्वावि
रुनअर्शननमालताकश्चनकाउसुखनसमस्तवानंदयकगधनधालसायापुअशुलंभासुखोक्तिकायशुलंकाखेधनकोख
अभासुखाअ.हलाअकाकनं क्तिकायधलपापुअभाईनधनधनगभाईलअहिलाअकाकन्यथयानिमिहिन कलमायू
अधननकुंभाकयासमृद्धसुलकदनिअ ॥ **॥** एतद्दकं कलसाथं कलनं कनं ग्रामं कनं पदसाथं आत्माथं दध्वावी
न्युक्तं ॥ **॥** धनं कृत्वा लतां कलदकं लकलपिअ अउसदवासेन संग्रामसंज्ञासूनवे क्तिनअशुक्तनधालं धककगाल
नमालेधकं धयाअदेयनमालताउसुखनवानं हिनधधर्मगलसिमास्वासायाकाउवाक। कयासमिपसधर्मगलजलक

॥ पर्व ॥

॥ १११ ॥

राजकुलाहादिद्वयमाचकीअअयकयशयीअधध्वं क्तिनं धनगलपासुलपंगलधनआदिनमायीअथअकुसधध्वं क्तिनअगथध
लसाकअसकुंभयाचननयंकिपासुलपंगलधनमंगलनमंगलधनननिबलधलकं क्तिनअयाअविअथथयोलकुंभयादिनसमव
मंगलकुंभलाकाअधमंगलस्याकाअनयालिधनसकुंभमदयाअमहासकोपशुअक्तिनंथथयापुअयाधनकायशुलसासराअन
कास्यनंमगकलाखानकायनिमिहिनस्वानेमाधकाअकायाथंयापुवनमखद्वखसियुअक्तिकायपनिसनइखनयुअअअ
यापापुवअपीतियाकाअकुंभनसंग्रामसपापुवअसुखायुअक्तिनथअकायपनिमाचकयाकक्तिनसनथकाक्तिनगंमून्वा
ललाधकंविश्वननधालं ॥ **॥** निग्रीमहाज्ञानमहापर्वविद्युनवाकंमकपक्षी ॥ **॥** १११ ॥ **॥** विद्वन्उवा
वा। शालाकशुल कलहयायुतामिप्रकंभपूशयीअहुहुद्रव्याधननेथअगवेनीमालशुलवेपीयाखकनधमनंमायुअमहालप

गीतहा
११२

हासहाला कक्षि सुकलहानि सुस्यनं. क्षि सुकलसुनजिक मर्तद थयानिमिहिन क्षि सुकलं पिनं मायुता थका धकं धालं विहनन॥
॥ इथा धनन मराल पववहान क्षि सुकलस्यनं थथलाम धस्यं थान गथ धालं मा चामद थद दाहल सान थअदन लोक्ष स कया अम
चका थं इथा धनन थअल क्षि मा चकी वग थथल साना मस दन दल लाहान नला लागा दाअ समुद्र पान याय याद अद स पूर मथ
शयुअ इथा धनया दाअन मवृला हयन अया क धाय क धाय कान मद्र थना मया अधिपति धतना मया क्षि न इ ४ ख सियी अ॥ हा इ
था धन नन वया धि शल थका क्षि न धा या ख धा कं पा गुवन इथा धन या जीअ स पीअ या दा अ ख क पा गन पुहान या दा अ मा च कि
अहाला थपिहान मद्रा मा वा र्य कपा वा र्य अथ लाना क्षि सुकलसुन दहन यु धि क्षि न अ सुना न वे नी या यम अ अ चि कलयं मरुअ
थ सुकल अ वे नी या का क को न व वं म मायुअ नि थय लाना जनु धत ना ह मि दहा अ अल दा अ ध मि सु नान गा कि यायु अ ग थ धाल

पर्व
११२

सायु धि क्षि न क्षया अत्राद मि अगत लो उपा य कि अ नि मारु न यु धि क्षि न या चलरी मस्य न अरु न न कल सह द व रु क्क थप नि स अ सु
सायु अ थत न धत ना धु न थअ पूर मा च क ह द या त धन न मगा त सायु धि क्षि न या क धा अ क्षि न वि य क पा गु व या अ न क धन का या
अ क्का य अरु न या व लान पूर मा ल दा अ क्षि धन का य क्षि न का य म मा व रु सा म रु नि न मा व का अ रि न क शल सा थ धं म मा व कल
सा पा गु व थअ ना म रु क्क रु ना ध कं धा या अ थत विहनन धा या ख रु दा अ इथा धन या म हा को ध रु लं॥ ॥ नि श्री म हा लान ग स
हा प र्व नि विहनन वा कं धि प रु सा (गा इ था य शा ॥ १२॥ ॥ इथा धन उवाच॥ साया धि विहनन क प न ववहान क्षि अ न धना
दिन या अ क्षि प नि नि डा या दा पा गु व या रिं द उ क्का क क्षि प नि व न वा स क्का या अ पा गु व मा त ना म वि य क न म न स ध क ना ना प्र क
न न विहनन हा दा अ विहनन धालं॥ ॥ विहनन उवाच॥ हा धत ना धु क्षि न ववहान खं क्का दान क्षि का य न क्षि त ना ना प्र का न न

॥ श्रीसहा ॥
॥ ११४ ॥

शुभ्यादागुणप्रसंसादादा अजाम्बलसने पायधूनधर्कभाया अगकनिन पागकादा अजित्यागसा अधर्कभाया अहीम
सने या का अकालं ॥ गकनिनवाच ॥ शानाग्न सर्वस्वकायधूना साकन्यकि कृदनिपाकन धर्कयुधिष्ठिनहार्त ॥ सासक
निकिसमस्तसंपत्तिहनं वेनीमखुस पायधूना आयाजिथडा गनीन पायधूना धर्कभाया अगकनिन पागकादा अजित्याग
स अधर्कभाया अयुधिष्ठिनथ अ वस्य यात थसा या असमस्त सास वाद पनिससा कशर्त ॥ गकनिनवाच ॥ शानाग्न
युधिष्ठिनकि नपापकर्मयागय थसकि अतुस्य पापिहसुनै मद्ग थका लसा थ अकना पंमाच कल धन दत्त ल धनमाच क
ल धर्कहर्गसासन नाना माथनहार्त दा अगकनिन थ अ गनीन या प्रसंसाया दा थ अ वा कवल या प्रसंसाया या अ पाधुव प
निका क्लृप्ति किर्त दा हि नै कि नन गलं समक्षन या ग्रहिन ॥ गकनिनवाच ॥ शानाग्न अहानि युधिष्ठिन किन उपद

॥ पर्व ॥
॥ ११४ ॥

गदियककन कि क्ली दोपदी दअनि थ पाकन थजिपनिसन कायमकि अ थपादा अजित्याकन धर्कभाया अयुधिष्ठिन न अया
गकलसने मयासंमग्न धर्कलाल पा अ दोपदी या गुण व शुभ्यादा अ थपि कनि न्यायाममद्ग सर्वन कलला क आयाजि या
पासाशना थ पायधूनधर्क पादा अ थसरास वाद आ थसा थ पनिसन का कदा अ चानं ही प्रपिता मद्ग आचार्य कपाचार्य
विद्वन् थ पनिसचलति डाय का अ चानं विद्वन् आध्यादा अ का कदा अ गोकयार्त धननाधून आगसत्याग धर्कवानं वानं न
भास्यनं काययापदने पाधुवया पकनं कानं मधा अ हिदमराल पु कर्तुद्गमसन इ थधन किला अ चानं गकनि गोवलन हा
साया दा अ गकनिन याचका दा अनिखान कासा या अ दायविया अ जित्याग अ धर्कभाया अ प्रापदि जिपनिसकल धर्क थस्य या अ
पाधुवया गक कूनै मद्ग ससास वाद पनिसा कन दायल कलं सकल्यं यो ॥ इथीधन उवाच ॥ शविचकन विद्वन् पाधुवया

शीसहा
॥१११॥

कदयउउल्ययादं तयासी शोपदी धनकासं हिअक्रिनकी यायमषु क्रियासिपनिसउ वेंपूदाअविपआदिननयाअयानिअसु
खनंथवाधकंआयाअ ॥ **विइनउवाच ॥** हाइयाधनकिष्कानिपलितरुयाअधखेजितहायकमकपापात्मानखिवाय
सिनंअधर्मकपागगकनचलाथंनकनभयावचनपोअनकायसहयायिअकचलापापुअवापुपक्षपापुवकाल
सर्पथकनकपालसतलधनकदानाअभायिअकम्माययलसापापुअमालतिअशोपदीतालतीअशोपदीदासिहामर
युअयुधिष्ठिननथमनिपादाअथमनिवृत्तथमवृदानंलि लिपतसशोपदीपादाअअनिलाथमवलरुलदाअसीअधिका
लेमइक्रिबुधिसथथहाइयाधनआअकंरुसिमावृहालधकंरुकदानदाअसमस्तमायुअजिवचनअवलससियुअध
कंविइननकायाअधनविइनयावचनददाअइयाधननकाधयादाअप्रातकामिवादाअविइननिदावाकनहादाअ

पर्व
१११

प्रातकामियानविधननिकाअप्रभादविपाशहारकवातसअदाअशोपदीकायाअधसहासहकिअपापुवयारयनकम्मायम
मालविइनगारुलरुयाअमअदधकंकरुनिधकंकायाअप्रातकामिसिंहयाकसखिवाअदार्थअदाअधालेहाशोपदीमृविधि
नरुलमयनकायाअकिपादाअकिइयाधनयादासीरुलाधननाइयाकसअननयावंपूकमितायादाअवीनमालधकंआया
अ ॥ **शोपयवाच ॥** हाप्रातकामिकनजितमहाकइवचनज्ञानधखमषुधकंआयाअप्रातकामिनरुलनवृकखवृलान
समस्तकदाअशोपदिनधालेहाइनिप्रातकामियुधिष्ठिनयाकनिनकनकिनिपातलाथअगनीननिपातलाधकंददाअवा
क्रिनउरुनविषधकंआयाअप्रातकामिअदाअधखसमस्तयुधिष्ठिनयाक्रअनकायाअयुधिष्ठिननकमानंमकाअधनइयाध
ननधालेहाप्रातकामिचलरुतिनिंयाकूमहिमाज्ञादाकायाअनिहकिअधनकीपूरुषमानकाधनवायथयाअधकंननानका

॥ श्रीमहा ॥

॥ ११५ ॥

याउदिअधकं ध्याउप्रातकामिउदाअधर्तुं डोपदी किद्व्याधनन ग्वयधलधनन कोनवमायिनानि ग्वयकिनधकन्यधकं
 ध्याउपदीनध्याउप्रातकामिउदकं दधविधनानवासां हया कानमरुयुअकि सरुसअनवलमधूमावातकलतां
 किथिरुलतां भूका कलनमइ किल्यासुवलआउयाधर्मयूवश्रीनानायननकायातसानकाशयुअधकं ह (गविदहव
 विन्दधकं विकलपाउअनं ॥ **॥ वगन्मायगउवाव ॥** राजनभरुययुधिष्ठिनन डोपदिहउमननसियाअवीगस्याक
 कृष्णयाउ डोपदीयाक हातकल कर्तधनि कुरुगुयायुअनिध्वनिदानयादाउआयाकिथमनिपादाअवृत्तलिपातस
 कृपादाधकं कदाउ कर्तधनं लिप्रातकामिन डोपदीवादाअहयाअधनं लिडोपदीनधर्तुं राप्रातकामिकिलकल्लारुअ
 सरुसग (धअन्यधकं ध्याउधननाडुयाकअनवादाअदसिध्वं आदधसुयाअमहाइ४ विपागुवनडोपदीमसासंवाक

॥ पर्व ॥
 ॥ ११६ ॥

अनयायहं नसिस्वचानं ॥ **॥ इर्याधनउवाव ॥** राप्रातकामिअमावग्याधकाधनरुकिअधकं ध्याउप्रातकामियामनस
 संदहकलं यनगधमयनगधधकं राडोपदीकिवाध्यादाअविद्याकनधकं धर्तुं ॥ **॥ इर्याधनउवाव ॥** राइ४ भासनरी
 मयाहयनप्रातकामिग्यातकनधनरुकिअधकं ध्याउइ४ भासनअदाअधर्तुं रापाक्षलि कल्लवायाअवानमूचालइ
 र्याधनस्वअकनस्वयंवनध्वं कशीयांमर्जितध्वं जयलपाउ काया कवग्याधकाधकं ध्याउइ४ भासननजानतदाउ
 गान्धारीयाक विस्यअनयादंअनअइ४ भासनन डोपदीयावसजादाअलिसालाअहयाडोपदीयामोलमसाकिलंस्वन
 मालकृयाअतया मालयावसजादाअसरायादधूसनयाअधइ४ भासननकलतां नअज्ञानाध्वं धर्तुं डोपदीनधर्तुं कि
 लकल्लारुअधकं धर्तुं वि (गधनकिउकवकुलकधलावलससरासग (धअन्यधकं धर्तुं इ४ भासननधवचनददाअकीध

॥ श्रीसहा ॥
॥ ११२ ॥

नसकृत्तिसकलं नापेननकं डानमजिउधननजिनकायाडोपदीनजिदसिउला मरुडाला धालया डलना वियममालला लीष
धननाडुआदिनकाथरुनपनिथनियदिनसविलानजमडाभाचार्य कपाचार्यगुनधपनिस्यनकतामकाडकानकुरुयि
अतिनेमहिनंकायमगडाला धननसमस्तं ननकवासरुयुगसमस्तुनाजानेकानमभालकिसकलं ननकवासरुयुगडि
सकलस्यनडुलयाडुकायममाललाधकं कायाडानाजापनिसमस्तुनं खालनकासायाडानं थथथादसहालाक
सायाडधविकर्तुनशंलसां अथनकाधयाडागधलंशानाशालाकजिकंशकायाडोपतिगाअनीमातागडुलडोपदीनसि
सायाडडानलाधलकायडोपदीइरवनकमालधकं धालं थथथास्यनं नाजापनिस्य थथअथ कतामकायागअनककाधया
गाडविकर्तुनशंलसां लाहातथायाडधलंशानाशालाककिसकलस्यनकतामकाडपनिमभालसाजिनदलपाडुतिनकिसकल

॥ पर्व ॥
॥ ११२ ॥

याकपालस्यनकं इर्याधनयाकनकद्रियवडुप्रकाननयतामाधनइरवनकिउमगअहलडान्य१ अकयइलकं त२ मधुपा
ल३ कुलीशगयाप४ धनपतां नागयाहुडोपदीयाइरवनकायागुवनकायसायुगधननकोनववंगनिर्मनशयुगमयड
रथुप्रिष्ठिनवानकलकायाडशंललावकाअनकचित्तनंबूडागपादाथथनं डोपदीयासीमरुडाहनं काकायाकी याकानन
पायमइथथनं दासीमरुडाहनं युप्रिष्ठिनथमक्रपां वृत्तलियतसडोपदीपातथथनं दासीमरुडायापिइगकनिनडयद
न्यधनिप्रिष्ठिआकायाडोपदीपातं धननजिनधर्मकथाकायडोपदीयासीमरुडाधकं कायाधनविकर्तुनकायाडानाजापनि
समस्तुनं साधु२ खअ२ धन्य२ विकर्तुधकं धालंजियनिस्यनं किनकायाधनवडाधकं धालं थथरवकडाइर्याधनयाइरवनलं थ
सायाडकं नुनधालंशानाशालाकधपापिइविकर्तुजिपनियाकवाडागविकर्तुनथअददामावकयादसनजियनिसनधम

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १२० ॥

ववहननकायाडोपदीकायाथननककसनंकतांमधार्थयधिरिनयासर्वसंस्तीप्रमशुअलावाकगयावाहिकनयथायाला
कदकंआसनंगथमहनडोपदीप्रकवमुनसरासहयायाकुदाववकागमहियाकातीककप्रमककथडोपदीपाकाकवन
वधननवगधकप्रकवमुनहयगअपाविलियोदंहयगअशविकर्तुकिदलपापालिनकनकूडसपनकथकंभालंशोइगस
नपावुवयांडोपदीयांअसगआदिनकाअधकंआयाअधकाअपावुवनसमलमिसांतातमाअअसगमाकुगतिआअवीनंइ
भासननडोपदीयाअसगकुकातहनअठाअहिउहिकलाकाअकालंडोपदीनऊगजातागविन्दसमनलायामंआहि
थीककगहिथीकककिनकायाअगविन्दनानायगदयायासमूद्रकवकनमाधवदामादनहयनमभनथीककपनवुक्क
कर्लकलपालकिनकायादविक्कायमालगहिथीकककलपालसगननधकंडोपदीनसमलपागधर्मप्रमथीनानायगनड

॥ पर्व ॥
॥ १२० ॥

पदीयागनीलसइविडाअवीनंथवाडाअवसगकाकंकाकनमरुकवविक्काथीककदवधाकनयामायाविक्कनायान॥ ॥वेग
म्यायनउवाव॥होहनमकयडोपदीयाकयापासाइगसुननहिउहिलकपनासिउडाअकायागउडाअकायानानावर्तुअसगगत
किरकालकिरलककिरसंख्याचउदिगसंअसगमादंधारुयकमाकाअकास्यनंअपदीयागनीनसअसगउधदयाअवीक
धवलसमाकागनमहागहनभालंधनपतिवगाडोपदीधकंआयाअइधधेनादियाअगमानरुलंनजालाकनभालंधन
डोपदीपतिवगाधकंभालंधसायाअपावुवनागायाकायहीमसनअपदकाअकाधयाडाअनाहनभाडाअभालंशानाजा
साककिवचधकमगथभालसाकअससुनानंमभायावचनकिनभायभाअभायाथकिनमयागसाकिमामंववुंननक
वासकिननकवासरुयुअगथभालसाधइगसुनयानगलननकायाअहिममानसंमभातसंकिननकवासरुयमाल

॥ श्रीसूक्त ॥

॥ १२२ ॥

मृन्मदगनिहनेककृथिसहायदगनिविधातानलिखलपंहयाजिनकृयाययुधिष्ठिनयापदमहिषीकमलकलान
नानीक्रिदासिहजलामशलाककनपायिखलीयाआदिनकृष्णनंकृतामकाअधकडोपदीनमहाकनधाले ॥
॥ श्रीषडवावे ॥ ॥ श्रीपदीजिनकृपांकाक्रियासिनेतताततावाकनपनिस्यनेकतामकाजिनकृपायजिनकायक
कनगथकात्ताधतनायुयावंगयाचिरासकालननागकृयुअधपाययानिमिहिनकिथिदइखनकाअसाम
वंगयाकलंकयाइयाधननधर्ममसिआकिहलंतलीधर्मगसंयकसुयाकधर्मदतअकयाकयकृयुअधधर्म
यानासकृयुअधनकमाथनकिइखविआननिहोयाकनयुधिष्ठिननकिइखकयकलधककृधकथअसामीय
धिष्ठिनयातकिननिहोमयाकथनकिधर्मकयकृयुअधपनिस्रधर्मननासकृयुअधनअधपनिस्रकय

॥ पर्व ॥

॥ १२२ ॥

श्री २

कृयुअनिधमनंआमवाय्यकृपावाय्यवाकनयनिसंजीमदतकृताकायंमरुतकिहनायविययातयुधिष्ठिनन
कृकन्यायकालकिहयुयीअधकयुधिष्ठिनकिनसत्यनकाकन ॥ श्रीपदीवृकमवृयाधकंधाले ॥ ॥ श्रीग्रीम
हामनमहापर्वनिधुनश्रीपदीवाकपंचपक्षीमः ॥ ॥ श्रीपदीवाकपंचपक्षीमः ॥ ॥ श्रीपदीवाकपंचपक्षीमः ॥
दीयामहाकाकननीमंगलयाकाकथंमहाकाकयाकाअजीनंथधनंनजापनिस्यनइध्याधनयोरुय
नकृतामकाअमनसजकाकसुयाकाअमानंरयाथधानंसमकसुनेथथसुनानंकृताकायंमकालसंवादे
सुयाअइध्याधननखलकानगहास्यगधहालाथकलाअकलहाश्रीपदीजिनधर्मसियाखकिनलोरुमसि
याकाकसुकीयाकाननपायमइधककनपुनूधपनिस्रनधालसाककिदासिमकअयुधिष्ठिनयाकीकल

॥ श्रीमहा ॥
॥ १२४ ॥

सुहासुहासायाउवावतलतासनमतालाकूमायननधकं धालं धकं धुयावचनदकाउहीमतापदकागमहाकाधया
काउकाकलमानयाकाउवावसायाउइयाधनधकं हीमहाकागकाउतलं थथकाकागनहीमनधालं ॥ श्रीमहा
नउवाच ॥ होनननुमुषिष्ठिनकेधुयावचननकि काधमवायाउयावचनननायनमकाययायधधनयश्चिन्नडाप
दीपादाखगसाथथमवननिद्यायापिउलाहिहीदथसतानमइधकं धालं ॥ इयाधनउवाच ॥ होनधोरुमही
मश्रादिनकिवग्गसडापदीवूकमवूककाकनधकं धयाउडोपदीयाखलखयाउअरुंकातनगवयाकाउथअ
खनयालनधसूयाअथअखलपाककाधखलपासकककुकाउवानिउलाधकं डोपदीयातधालं धसायाउहीम
सनतापदकागमहागहनधालं हाद्रयाधनकिपिहलोकमतादनिहूनआमखंकायममालनिधतनहनधख

पर्व ॥
॥ १२४ ॥

काकायाहनआमखंयागतानदायाउताकमधूलसाधकंप्रतिहायाकाउनिखानअग्निपिहाउगमहाकाधन ॥ विह
उवाच ॥ हाइयाधनहीमनकायाखसखनिग्गयइयुअनिहानयाउनागयागनचिसंतयाथयुषिष्ठिनयावचनसुवान
नधकायुषिष्ठिननआकाविलसातकातनमंमाचकिअजिवचनमदकायाइयुअधतनअधर्मसमधानकायधर्मसम
धालयाउकिनकायाडोपदीमालताडासहाउनधनमालकायुषिष्ठिनयाककादमतउलाधकं धालं थहनमददथ
सुहासुवाकंभायुअधकं धालं ॥ इयाधनउवाच ॥ हाडोपदीपकसनयुषिष्ठिनयाकातनयायमइधालसायुषिष्ठि
नगकिहककूग्गनधालसांगानगधकं धालं ॥ अहनउवाच ॥ थअनायसवानसायुषिष्ठिनसमकं र्गधनधममव
यावलकलदासर्गधनमशलकिस्कलसनधकनधकं ॥ वेशयायनउवाच ॥ हाहनमइयथथवावतलसधत

॥ श्रीसहा ॥
॥ १२० ॥

काया पाशुवन को धया दा अ धत ना पु या वं ग निर्मू न थ न ध कं अ न क्ति न क्रि अ द या म द पा पु अ प नि स अ द या द अ क्रि न रु द अ
रि न कं ग या क् थ व ल स क्ति न (ग) क या न ध कं थ थ र वा या अ ध लं थ व च न द दा अ ध त ना पु न ध लं रा द य्या ध न रु य ल सा
ह न र ल ल्वा च कं ध कं धा या अ प्रा त का मि क्का या अ यू धि धि न प नि वा न क ल क्का तं ल स वा दा अ प्रा त का मि न धा लं रा यू धि
धि न ध त ना पु रु ना र ल ल्वा च कं ध कं धा ल लि हा वि द्या रु न ध कं धा लं थ व च न द दा अ यू धि धि न न म न स दू ४ ख या दा अ धा लं
आ अ व न ग (थ) म अ न ग (थ) आ अ न सा रि न म्वा ल ध त ना पु या द या न अ या दे व न म या त दा अ म दू ख म न अ रु ग म्भु यू
ध म रू र ल रु र्ध नी च क र्म ध त ना पु या आ ह म ग (थ) म अ न ध कं लि हा अ दा अ यू धि धि न रु ल स रा स इ वि दा अ वा नं ॥
॥ ग रु नि नू वा च ॥ रा यू धि धि न क्रि न ह्वा य द रु न क्ति क क्ति ध न या क न म क्ता न आ अ या जि प नि रु ल न वृ ग सा इ य्या ध न प नि ग

पर्व ॥
॥ १२० ॥

त क्ति म रु कि र्ग क र्मु आ दि न क्रि प नि स क ल्य काल सा या क् गु लि न ति या अ व न वा स अ न्य क्ति स क ल वृ ग सा अ प दी प्र रु ति न काल
सा या क् गु लि न ति या अ व क प द व न वा स व र्ध १२ अ न अ थ वा गु फ वा स व र्ध १ वा न गु फ वा स स क्क क्क सिल दा अ ह नं व र्ध १२
व न वा स अ न्ध थ नं लि वि ल सा द या नू प न ना ध का य म वि ल सा रु त सां सं अ म या दा अ का य थ थ सा म र्ध द ग सा रु ल ल्वा रु न
ध कं ग रु नि न धा लं थ रा खा द दा अ यू धि धि न न धा लं म व न वा न दा अ ल्वा य ध कं सै क ल्य या दा अ ग या ध नं न्वा य रु ल ध
कं दू अ स वा स म धि ग ह्वा स ग या ल म दा अ ख वि दू ४ व स ह या य मा ल ध कं रा ग रु नि क्रि धि द म्ना रा श या अ म ल्वा स ग
(थ) लि हा ग न्ध ध कं धा या अ क्ति न धा या थं ल्वा य अ या ध कं धा या अ ग रु नि न पा ग का या अ पा ग दा दा अ द य वि या अ क्रि त्या त
सा अ ध कं धा या ग रु नि न ह्वा का अ कालं स म रु ना र्थ इ य्या ध न या रु ल ॥ ॥ इ ति श्री म हा रा त र स सा प र्व ति मू ल (ग) धू र कान ध

॥ श्रीमहा ॥
॥ १२८ ॥

॥ श्रीमहायामा ॥ ॥ वेगमायगउवाच ॥ लोभनमरुयकलनवृद्धा यधिष्ठिरहिमसुनजूरननकलसहदवधकास्यनं-
कालसायाकुलिनतियाउ डोपदीनसूदुअसतनतियाउअनंथनथअवासअनतदवलसदृशसुननप्याखनरुमाअधालेका
सूदाहनसायामासूकधकधालेकिलाअनानावाथनहाडाअहासायाडाअवानंथसायाअहीमनधालेपापिदृशसुनवाअ
ननंमधयावचनक्रियनिहाडाशडोपदीनकनिनकपशलनरुतामखाधननकिमपिदविगडाअधनिन्दायादायाहृतनपा
पिदृशसुनयाहिगानइथाधनआदिनसकलंयमनागायाकुल्यडागाचार्यरुपाचार्यहीमपितामहकधुधपनि
यमनागायाकुल्यधकहीमनप्रतिह्वायार्गलापापिदृशसुनकनहिजिनमगानसाक्रियययदातननकअनमालुहने
धृताष्टयाकायदकसंगमसस्यायज्जअक्रियनिन्दायादायाकोनवसमस्तस्याडाअगानियायधकधयाअहनेइथाधन

॥ पर्व ॥
॥ १२८ ॥

दिनगतकिरुकिजिनस्यायधकप्रतिह्वायार्गजूरननकर्णुस्यायूअजिनरुलतांइशसुनयाहिगाडाअडुनिगालनइथाध
धनयाखनपागाकधलाअपालिनकडुकलाअदलपापालिनकपालसप्यनकाअडुनिगालनधकधालेजूरननधालेहीम
सुनदाशुकिनकायाधकिनअयमारुनगाकपूयाअअअनागापनिसमस्तकर्णुआदिनपुण्यकर्म११वलाअगकाअमाचक
धकधालेहनेमाडीयाकायनकलसहदवनेप्रतिह्वायार्गयधिष्ठिरनधृताष्टयावंगमाचकप्रतिह्वायार्गडोपदीनरुलतांइ
शसुनमस्यागालसपालप्यायमधुनाधकइथाधनयाखपातामधुगाललासाममदनधकधयासामकागाधकप्रतिह्वाय
न ॥ ॥ यधिष्ठिरउवाच ॥ लोभपितामहनमस्तानधृताष्टडाधचार्यरुपाचार्यसामदरुवाहिकगल्यगकनिअश्वका
माविद्वनइथाधनादिक्रियनिवनवासअनक्रियनिसकगलरुयाअवानसाहिसकलसत्तालसलजयधकाधकधयाअस

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १२२ ॥

कस्यनेकाकुडाअकतामकाअमनमरुककल्यानशयमालधकंआशिषाविलं ॥ विद्वन्उवाच ॥ हायूधिष्ठिनकृत्तिकिधि
शनासूकमानोगनीनइ४खसहयायमरुदास्यरुयंमरुतकूपनिसमामयाकदयादरुमाकिंकगाथिअकिंनमामतयाधमा
ध्यादाअतयधूकाधकंआयाअ ॥ यूधिष्ठिनउवाच ॥ हाविद्वन्किमामरुनकसवादाअयकृत्यकिपनिक्लिदयानवाध
तपंचादाअवनवासअनकिगउपदगविकृत्यधकंआयाअ ॥ विद्वन्उवाच ॥ धनीवकर्मरुलनवकनकूपनिसन
कष्टयायमगअआपदाहलधकंधर्मतालतमतअहायूधिष्ठिनधर्मरुनकअरुनयाकगगरीमनवेनीमाचकिअनकलध
नदयकिअसहदवमकीयाकनधोमनआपदाउद्धानयायीअअपदीनधर्मअर्थदयकीक्लिसकलकसध्विथिसमवातया
दाअवाककूपनिकामगतकिरुद्रनंरुयलपमरुधकंकल्याधशयमालकूपनिसमजियिअमधूधकंसुनानंमकाअकूपनिक

॥ पर्व ॥
॥ १२२ ॥

मलनआयाकिनखालसायधकंनानाप्रकाननकालपाअकतं ॥ वेगम्यायनउवाच ॥ हाजनमेरुयपागुववनवासअनंरुकि
यामहाआकइ४खवायाअधानंअनंहीआअविद्वन्अनमस्यनंकातपाअवाधयादाअविद्वन्पाकसवादाअयनंसमरुलाक
हाहाकालयादाअखायाअवादाअहापागुवहापागुवधकं ॥ धवलसधुतनायुमामहाविकाशयाअविद्वन्वानकलकायाअध
लंहाविद्वन्पागुवपनिगधअनकाअधकंदन ॥ विद्वन्उवाच ॥ हाधुतनायुयूधिष्ठिननथअखालयूयाअअनंहीम
नधअवाइसायाअअनंअरुननरुिगुलिहाउहालाअअनसहदवनथअखाविक्रयाअअनंनकलनधूलनवूयाअअ
नविरुगिनवूयाधअनअपदीनथअसरुहंनतयाअखालकिंवकाअअनधोममधिनकगहादाअअनदलपालाहात
नहाहापागुकाअसिकउहावलायावउपलपाअअनधकंकन ॥ धुतनायुउवाच ॥ हाविद्वन्नानाप्रकाननधपनिक

॥ श्रीसूरा ॥
॥ १३० ॥

सकृदुनं कृपुकात्रनधधुनकि ककन्यधकं धर्तहाधुननायुयुधिविननखातपूयाअउनकानधालसासर्वसंकास्यनं कि
कायपनिसुअदयादशनकाधनसायाअकि कायपनिरुममरुयाअअनिहिनथेथनअनहीमनथअवाकलुडहिहाअपथ
ससुनंमदुधवाक्याप्रहावनगप्रभाचकधकंथंसायाअअनअरुननयथासधनरुनकिअउतिहाअसुनंमदुहिअपंख
अअसंख्यानहालाथेअअवलाहाकाअगप्रभाचकधकंअनसहदवनगुपतवाससजियनिसनानंमसियकंयोनधकंखावि
नयलाअअनंनकलनधुलनवयाअसंन्यासियागनीनयाकाअअोपदीयागप्रममाहालकिउम्वयधिकंअनंअोपदीनजि
नसंरुहननयाधंइर्याधनादिमातहाअअपनिसकुपनिसनथअरप्रनघघसरपुहाअदिनकिचकाअमककगियाकाअर
यूअधकंथथनअनंकोम्यनवाकलाहातअउत्तरुगभाहाअइर्याधनादिमातहाअअगिसंस्कात्रयायवलसयमथंवाक

॥ पर्व ॥
॥ १३० ॥

सामवदयत्तपधकंअनं॥राधुननायुयुधुअनिधयनकिअइर्याधनयाअअपनाधनधकंदिनरुलत्वाचकायानिमि
हिंनरुनगदंननासधकंविद्वननकनंथवलसधुननायुयासहासनात्रदधुविअयाअवालेहाकोनवपनिइर्याधनयाअ
पनाधनहीमनअरुननकोनवनिर्नययूअधकंकायाअअककानयाकाअअनंसंरुयनधुननायुवाधयाहंनानापु
कात्रनधुननायुयामहाचिकाकलंपागुववनवासअकाअइर्याधनआदिनआनदनवानंपागुववनवातअनधकं
वेगम्यायननरुनमरुयनाकाकडा॥ ॥२॥ निश्रीमहारात्रगंभुसादम्यांसंहितायांवेयागि कांहरावर्वसिअनध
प्रवगं४४विगमा२ध्याय४समाफ॥ ६० ॥ ॥ श्रीकृष्णायपागुवायनमकु॥ ॥ ॥ गुरुमकुसर्वदा॥ ॥

टीपू हा
१३१

सुच २०० मति आमाद शुदि १३१३ सुक कर्मा कार्य जीवन नदन न मिमू ह्या विश्व कर्मा धीरु वीन या न वा सी विया रुत
ध सुहली वाया बल समाहं माती अया अ सति सु सं मन व्यसि न्वा ना वा काम नू सु क ली ग्वा क अर्थ धर्म मान अनिष्ट हलया
अ धर्म कर्मा या य मात धर्म धर्म हा य व या प्रता अ धर्म दय क कया क या रुय दय म द ध या उ न स सु दा ना शी म की प्र सु न रु
या अ म नू ना ग रु या अ ध या क ग न ग ग न अ अ क या न न का या य रु य मा ल ध या उ प न स सु दा रु ग वा न प्र सु न रु य मा ल रु

आशा नरुदाथि	
505	
ASHA ARCHIVES	

पर्व
१३१

हा १३१

জা'না দারুকাথি
505
ASMA ARCHIVES

জা'না দারুকাথি
505
ASMA ARCHIVES

